Lalbhai Dalpatbhai Series

General Editors:
Dalsukh Malvania
Ambalal P. Shah

No. 8

KAVI LĀVAṆYASAMAYA'S

Nemiraṅgaratnākara Chanda

Edited by

Dr. Shivlal Jesalpura
M. A., Ph. D.

LALBHAI DALPATBHAI
BHARATIYA SANSKRITI VIDYAMANDIRA
AHMEDABAD-9

First Edition : 500 Copies

Printed by Svami Tribhuvandas, Ramananda Printing Press, Kankaria Road, Ahmedabad and Published by Dalsukh Malvania. Director, L. D. Institute of Indology, Ahmedabad-9
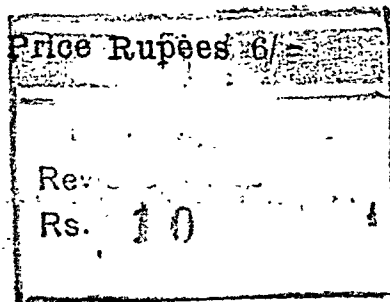
Copies can be had of

L. D. Institute of Indology — Ahmedabad-9.
Gurjar Grantha Ratna Karyalaya — Gandhi Road, Ahmedabad-1.
Motilal Banarasidas — Varanasi, Patna, Delhi.
Sarasvati Pustak Bhandar — Hathikhana, Ratanpole, Ahmedabad-1.
Munshi Ram Manoharalal — Nai Sarak, Delhi.

कवि लावण्यसमयरचित

नेमिरंगरत्नाकर छंद

[उपोद्घात अने शब्दकोश सहित]

संपादक

डॉ. शिवलाल जेसलपुरा

एम. ए. पीएच्. डी.

प्रकाशक :

लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर

अमदावाद–९

अनुक्रमणिका

प्रास्ताविक

सोळमी शताब्दीमां थयेला जैन कविओमां कवि श्री. लावण्यसमयनुं स्थान घणुं ऊंचुं छे. त्रीश जेटली कृतिओमां तेमणे गुजराती कविताना प्रबंध, रास, छन्द, संवाद, हमचडी, विनति, स्तवन, विवाहलो वगेरे विविध प्रकारो खेड्या छे अने ए द्वारा पोतानी सर्वतोमुखी प्रतिभानो परिचय कराव्यो छे. आ कृतिओमां तेमणे धर्म, समाज, कला, उत्सव, रीतरिवाज, पहेरवेश, युद्ध, विरह, मिलन वगेरे विषयो उपर मार्मिक अने वेधक प्रकाश आपतां चित्रात्मक वर्णनो आलेख्यां छे. तेमां एमना कवित्वनां, तेमज भाषा—प्रभुत्व, शब्दभंडोळ, अलंकार-सौन्दर्य तथा छंद अने प्रासनी पासादार शैलीनां दर्शन थाय छे.

कवि लावण्यसमय विशे श्री. कनैयालाल मुनशीए 'नरसिंहयुगना कविओ' मां अने डॉ० धीरजलाल धनजीभाई शाहे तेमना पीएच्. डी. नी पदवी माटे लखेला 'विमलप्रबंध'ना निबंधमां आपणने घणी हकीकतो जाणवा मळे छे, तेथी तेमने विशे वधु कहेवुं उचित नथी.

कवि लावण्यसमये 'नेमिरंगरत्नाकछन्द' नामनी आ नानी कृतिमां पण वर्ण्य-विषयनी रसिक संकलना, प्रसंग चित्रो अने भावचित्रो तथा समृद्ध अलंकारो द्वारा पोतानी प्रतिभा बतावी छे अने आवेगभरी छटादार शैली अपनावी छे. कविए आ विषयनुं एक 'नेमिनाथ हमचडी' नामे काव्य रच्युं छे. बंने कृतिओनो विषय एक होवा छतां एनी रजूआतमां नवीनता जोवाय छे. क्यांय पण वर्ण्यविषय वेवडाय नहीं अने रसक्षति थाय नहीं एनी तेओ चीवट राखता होय एम पण जणाई आवे छे.

आवी सुन्दर कृतिनुं संपादन करवानुं डॉ० जेसलपुराए पसंद कर्युं ए एमनी आ विषयनी विद्वत्तानो ख्याल करावे छे. तेमणे काव्य अने भाषाना लगभग बधा विषयोनी उपोद्घातमां संक्षेपमां सारी छणावट करी छे. शब्दकोशमां एमनो ठीक ठीक परिश्रम पण वरताय छे.

विद्वान् संपादके चार प्रतिओनो उपयोग करी मूळ पाठने शुद्ध करवानो प्रयत्न कर्यो छे.

एकंदरे आ संपादन बधी रीते जूनी गुजराती साहित्यना अभ्यासीओ-विद्यार्थीओने उपयोगी थाय एवुं छे. विद्वान संपादक आवां सुन्दर संपादनो वधु ने वधु आपता रहे एवी आशा अमे राखीए.

अंबालाल प्रेमचंद शाह

ला० द० भारतीय संस्कृति विद्यामन्दिर
अमदावाद–९
४–११–१९६५

संपादकीय निवेदन

नेमिनाथ-राजिमती विशे गुजराती भाषामां विविध प्रकारनी कृतिओ ई. स. नी तेरमी सदीथी रचाती आवी छे. तेमां कवि लावण्यसमयकृत 'नेमिरंगरत्नाकर छन्द' मध्यकालीन गुजराती साहित्य, भाषा अने संस्कृतिना अभ्यास माटे महत्त्वनी कृति छे, तेथी तेनुं आ संपादन तैयार कर्युं छे. नरसिंहयुगना तेमज समग्र मध्ययुगना गुजराती कविओमां लावण्यसमयनी साहित्यसेवा उच्च पंक्तिनी छे, तेथी तेमनां जीवन अने कवन विशे उपयोगी माहिती पण उपोद्घातमां विस्तारथी आपी छे.

कृतिनी हस्तप्रतो सद्भावपूर्वक मेळवी आपी, आखीये वाचना वांची जई उपयोगी सूचनो करवा माटे पूज्य मुनिश्री पुण्यविजयजीनो हुं अत्यन्त ऋणी छुं. डॉ० हरिवल्लभ भायाणी, डॉ० भोगीलाल सांडेसरा तथा मु. अध्या० श्री. के. का. शास्त्रीए आखुंये पुस्तक वांची जई उपयोगी सूचनो कर्यां छे ते बदल ए विद्वानोनो आभारी छुं.

मारा आ कार्य अंगे घणी हस्तप्रतो जोवानी मारे जरूर पडी हती. ते सुलभ करी आपवा बदल अने आ पुस्तकना प्रकाशननी जवाबदारी उठाववा बदल श्री लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामन्दिरना संचालक श्री. दलसुखभाई मालवणियानो आभार मानवानी आ तक लउं छुं.

बीजी केटलीक मुद्रित कृतिओनो पण मारे उपयोग करवो पड्यो छे, जेनो उल्लेख पुस्तकमां यथास्थाने कर्यो छे. ए सौ लेखकप्रकाशकोनो पण आभार मानुं छुं.

देसाई चन्दुलाल मणिलाल
आर्ट्स अने कॉमर्स कॉलेज,
विरमगाम.
ता० १५-११-१९६५

शिवलाल जेसलपुरा

मुद्रणदोषो अने अनुपूर्ति

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	२०	वच्चे गोळ	वच्चे गोळ
४	१	अमदावाद	अमदावाद
८	१७	ओलखतो	ओळखतो
९	१४	व्यावहारिक	व्यावहारिक
१२	छेल्ली पंक्ति	(उमेरो) लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिरमां आ कृतिनी नं. ४३८९, ४५४४ अने ५०८२ नी हस्तप्रतो छे.	
१५	५	लग्न	लग्न
१८	२६	आ काव्य हजु अप्रसिद्ध छे.	आ काव्य 'बुद्धिप्रकाश' ना ओक्टोबर, १९३१ना अंकमां छपायुं छे. संपादक स्व०श्री. मोहनलाल दलीचंद देसाई छे.
२०	१६	आणा	आणी
२४	२३	विमलती	विमलनी
२७	२३	पणे	पण
२८	१४	समान्य	सामान्य
३०	४	तमां	तेमां
३०	८	जेटल	जेटला
४९	८	कचोळनो	कचोळांनो
५२	२८	(१–३०),	(१–३०).
५४	१९	जसु जस	जसु, जस
५७	१३	अनिवार	अनिवार
६१	१०	धिकारा	धिक्कारा
६२	२२	विरचिअ जंमा	विरचिअ जंगा
६६	१२	वला	वली
६७	१२	मांडइ	मांडइ
७०	१४	दिवज	दिवस
७९	३	त्रटी	त्रूटी
७९	८	अंअः	अंअः ९८
७९	९	झखइ ? ९८	झखइ ?
७९	१४	सालइ.	सल्लइ.
७९	२७	B सल्लइ	AC सालइ
९६	चोथुं कोलम १४	तुहिम	तुह्मि

उपोद्घात

प्रतपरिचय अने संपादनपद्धति

कवि लावण्यसमय नरसिंह युगना समर्थ कवि छे अने प्रथम पंक्तिना जैन कविओमां घणुं ऊंचुं स्थान धरावे छे. एमणे नानी–मोटी त्रीसेक कृतिओ रची छे. एमांथी केटलीक कृतिओ प्रसिद्ध थई चूकी छे, पण मोटा भागनी कृतिओ अप्रसिद्ध छे. कविनो 'नेमिरंगरत्नाकर छंद' गुणवत्तावाळी कृति छे अने ए हजु अप्रसिद्ध छे. मध्यकालीन गुजराती भाषा, साहित्य अने सांस्कृतिक इतिहासना अभ्यासमां ए उपयोगी थई पडे एम छे.

एना संपादन माटे नीचेनी हस्तप्रतोनो उपयोग करवामां आव्यो छे.

१. A प्रत—सागरगच्छना जैन ज्ञानभंडारनी आ हस्तप्रत पाटणना श्रीहेमचन्द्राचार्य जैन ज्ञानमंदिरमांथी प्राप्त थई छे. त्यांना ग्रंथभंडारमां एनो क्रमांक ९७२६ (डा. २१०) छे. एमां कुल ९ पत्र छे. पत्रनुं माप १०.५"× ४.४" छे. पत्र १ अने २ नी आगळपाछळ दरेक पृष्ठ पर ११ लीटी छे, पत्र ३ थी ८ नी आगळ-पाछळ दरेक पृष्ठ पर १३ लीटी छे, ज्यारे छेल्ला पत्रमां आगळनी बाजुए १३ अने पाछळ १२ लीटी छे. दरेक पानानी पाछळनी जमणी बाजुए हांसियामां नीचे पत्रांक १ थी ८ काळी शाहीमां अने पत्रांक ९ लाल शाहीमां लखेल छे. दरेक पृष्ठनी डाबी अने जमणी बाजुए लाल शाहीथी आशरे ०.६" नो हांसियो पाडेलो छे अने दरेक पृष्ठनी उपरनीचे पण ०.६" जग्या कोरी राखेली छे. दरेक पृष्ठनी वच्चे कलशाकृति छे अने एमां लाल गोळ वर्तुल मूकेल छे, तेमज संख्यांकवाळां पृष्ठोनी डाबी अने जमणी बाजुए पण हांसियामां वच्चे गोळ वर्तुळ मूकेलां छे.

आखीये प्रत एक ज हाथे देवनागरी लिपिमां लखायेली छे, तेमज अखंड अने सुवाच्य छे. प्रतनो मोटो भाग पडीमात्रामां छे, पण कोई कोई स्थळे खडी मात्रा मळे छे. अक्षरो काळी शाहीमां लखायेला छे, पण शरूआतमां "॥ एद० श्रीगौतमाय ॥" एटला अक्षरो, दंड अने कडीओनी संख्या (पहेला अधिकारमां १ थी ६६ अने बीजा अधिकारमां १ थी ११५) लाल शाहीमां छे.

प्रतमां पुष्पिका के लेखनसंवत नथी.

२. B प्रत—श्री संघना जैन ज्ञानभंडारनी आ हस्तप्रत पण पाटणना श्रीहेमचन्द्राचार्य जैन ज्ञानमंदिरमांथी प्राप्त थई छे. त्यांना ग्रन्थभंडारमां एनो क्रमांक ३१४० (डा. ११४) छे. एमां कुल ५ पत्र छे. पत्रनुं माप १०"×४.३" छे. पत्र १, २ अने ६ नी आगळपाछळ दरेक पृष्ठ उपर १७ लीटी, ज्यारे पत्र ३ अने ४नी आगळपाछळ दरेक पृष्ठ उपर १८ लीटी लखेली छे. दरेक पृष्ठनी डावी अने जमणी बाजुए ०.५" नो काळी शाहीथी हांसियो दोरेलो छे, तेमज उपरनीचे ०.३"थी ०.४" जग्या कोरी राखेली छे. पृष्ठांक १ थी ५ दरेक पत्रनी पाछळनी जमणी बाजुए नीचे हांसियामां काळी शाहीथी लखेल छे.

आखीये प्रत एक ज हाथे देवनागरी लिपिमां, खडी मात्रामां, काळी शाहीमां सळंग लखायेली अने अखंड छे. दंड अने कडीओनी संख्या (पहेला अधिकारमां १ थी ७० अने बीजा अधिकारमां १ थी ११३) पण काळी शाहीमां छे. वच्चे कलशाकृति के स्वस्तिक नथी. अक्षरो नाना छतां सुवाच्य छे.

आ प्रतमां पण पुष्पिका के लेखनसंवत नथी.

३. C प्रत—लहेरु वकील जैन ज्ञानभंडारनी आ हस्तप्रत पण पाटणना श्रीहेमचन्द्राचार्य जैन ज्ञानमंदिरमांथी प्राप्त थई छे. त्यांना ग्रन्थभंडारमां एनो क्रमांक १०८१२ (डा. २३०) छे. एमां कुल १० पत्र छे. पत्रनुं माप १०·२"×४·४" छे. दरेक पत्रनी आगळपाछळ दरेक पृष्ठ उपर १३ लीटी लखेली छे, पण पहेलुं पत्र पाछळनी बाजुए कोरुं छे. दरेक पृष्ठनी डावी अने जमणी बाजुए ०.७"थी ०.८" नो काळी शाहीथी हांसियो दोरेलो छे, तेमज उपरनीचे ·४" थी ·५" जग्या कोरी राखेली छे. पृष्ठांक १ प्रथम पत्रनी आगळनी जमणी बाजुए, ज्यारे पृष्ठांक २ थी १० पत्रनी पाछळनी जमणी बाजुए नीचे हांसियामां काळी शाहीथी लखेल छे. आ पृष्ठांकवाळां पत्रनी डावी बाजुए हांसियामां मथाळे पण 'रंगरत्नाकरप्रबंध' ए शब्द पछी पृष्ठांक लखेला छे.

आखीये प्रत एक ज हाथे देवनागरी लिपिमां, खडी मात्रामां (पहेला पृष्ठनी पहेली बे लीटीमां पडीमात्रानो उपयोग थयेलो छे), काळी शाहीमां लखायेली, अखंड अने सुवाच्य छे. दंड अने कडीओनी संख्या (पहेला अधिकारमां १ थी ७० अने बीजा अधिकारमां १थी ११६) पण काळी शाहीमां छे. दरेक पृष्ठनी वच्चे कलशाकृति छे.

आ प्रतमां पण पुष्पिका के लेखनसंवत नथी ।

४. आ उपरांत आ कृतिनी एक हस्तप्रत अमदावादना लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिरना ग्रंथभंडारमांथी मळी हती. ए प्रतनी पुष्पिका आ प्रमाणे छे:

"श्रीरस्तुः ॥ लेखकपाठकयोश्चिरं जीयात् ॥ संवत् १६०० वर्षे जेष्ठ सुदि १ रवौ लखितं श्रीमति गजपाठके ॥ श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ॥ दीर्घायु ॥ इति श्रेय ॥"

पण आ प्रत अशुद्ध होवाथी, तेमज एमां घणे स्थळे अक्षरो घसाई गया होई, संपादनमां एनो प्रत्यक्ष उपयोग कर्यो नथी.

त्रणे प्रतोमां लेखनसंवत नथी, पण प्राचीनतानी दृष्टिए C अने A नुं स्थान प्रथम आवे छे, त्यारपछी B नुं स्थान आवे छे. ला. द. भा. सं. विद्यामंदिरनी वि. सं. १६००मां लखायेली प्रतनी तुलनाए तेमज भाषास्वरूप अने लिपिनी दृष्टिए A अने C प्रतो वि. सं. १६०० पहेलां अने B प्रत ए पछीथी थोडां वर्षमां लखायेली होवी जोईए.

त्रणे प्रतमां लेखनसंवत नहि होवाथी, तेमज कोई प्रत अर्थ अने छंददृष्टिए संपूर्ण शुद्ध नहि लागवाथी, कोई एक प्रतने मुख्य प्रत तरीके स्वीकारी आ कृतिनी वाचना तैयार करवानुं योग्य मान्युं नथी. पण त्रणेमांथी अर्थदृष्टिए, छंददृष्टिए अने भाषादृष्टिए जे पाठ स्वीकारवा जेवा लाग्या ते स्वीकारी बाकीना पाठ नीचे पादटीपमां नोंध्या छे. ए रीते पाठान्तरोनी पसंदगीपूर्वक थयेली (eclectic) वाचना आपवानो अहीं प्रयत्न कर्यो छे. एक पण शब्द हस्तप्रतोनी बहारनो लीधो नथी के एमां फेरफार कर्यो नथी. मूळनी जोडणी अने लेखन(उच्चारण)भेद यथातथ जाळवी राख्यां छे, शब्दना सौथी जूना स्वरूपने अपनाववानुं वलण राख्युं छे, अने ए रीते कर्ताना के एमना नजीकमां नजीकना समयनी भाषाने जाळववानो प्रयत्न कर्यो छे.

एम छतां संपादनमां मूळना दंडने स्थाने अर्वाचीन अर्थानुसारी विरामचिह्नो मूक्यां छे. हस्तप्रतोमां कोई वार त्रण के चार लीटीनी कडीने संख्यांक अपायो छे. संपादनमां सामान्यतः बे लीटीनी कडी गणी नवेसरथी क्रमांक आप्या छे.

कवि लावण्यसमय

जीवन

सामान्य रीते प्राचीन–मध्यकालीन कृतिओना कर्ताना जीवन विशेनी माहिती एमनी पोतानी तेमज समकालीन-अनुगामी कविओनी कृतिओ सिवाय भाग्ये ज बीजेथी मळे छे. लावण्यसमये पोते ज 'विमलप्रबन्ध'नी प्रशस्तिमां जणाव्युं छे ते मुजब 'नवरंग गूर्जर देश'ना सुप्रसिद्ध पाटण नगरमां मंग नामनो श्रीमाळी वणिक रहेतो हतो. पाटणमां दानी तरीके एनी ख्याति हती. कोई कारणे ए कुटुम्ब पाटण छोडी अमदावाद आवी वस्युं. मंगने आ वखते त्रण पुत्रो हता. सौथी मोटा पुत्रनुं

नाम श्रीधर हतुं. अमदावाद शहेरने आ वखते घणां परां हतां. एमांना 'अजदर पुरा'मां आ कुटुम्ब रहेतुं हतुं. आ श्रीधर वणिकने एमनी पत्नी झमकलदेवीथी चार पुत्रो—वस्तुपाल, जिनदास, मंगलदास अने लहुराज अने एक पुत्री लीलावती हतां.[1]

आ लहुराज (लहुजी>लवजी) ते ज आपणा कवि लावण्यसमय. एमनो जन्म वि. सं. १५२१ = ई. स. १४६५ मां पोष वदि त्रीजना रोज थयो हतो. आ वखते अमदावादमां जैनोनुं प्रभुत्व हतुं. ('गुजरातनुं पाटनगर: अमदावाद'—रत्नमणिराव भीमराव—पृ. ४००). अजदरपुर परामां पण जैनोनी वस्ती हती. ('गुजरातनुं पाटनगर: अमदावाद'—रत्नमणिराव भीमराव—पृ. २२६). जैनोना लत्तामां जैन मन्दिर अने पासे धर्मशाळा (उपाश्रय) हतां. आ उपाश्रयमां चातुर्मास रहेला मुनि समयरत्नने श्रीधर वणिके लहुराजना जन्माक्षर देखाड्या. जन्माक्षर जोईने समयरत्ने कह्युं, के 'आ बाळक महान तपस्वी, मोटो यति, महा विद्वान के बहु तीर्थयात्रा करनारो थशे'.[2]

---

१. गूजर देस देस नवरंग, पट्टण नगर प्रसिद्धउं चंग,
संघ मुख्य श्रीमाली मंग, करइ पुण्य जगि मोटा जंग. ३१
दीइ दांन व्यवहारी वादि, तिहांथा आव्या अमदावादि;
त्रिणि पुत्र तस कुलशृंगार, प्रथम पुत्र शीधर सुविचार. ३२
अजदरपुरि कीधा आवास, झमकलदेवी घरुणी तास;
च्यारि पुत्र तेहनइ जिनमति, पंचम पुत्री लीलावती. ३३
वस्तुपाल जमलि जिणदास, त्रीजु बंधव मंगलदास,
चतुर चंग चउथउ लहूराज, तेहनई पुण्य सरिसूं काज. ३४
('विमलप्रबन्ध'—सं. मणिलाल ब. व्यास, सं. १९७०)

२. धर्मशाल जिनमन्दिर पाशि, समइरत्नगुरु तिहां चुमाशि,
जनमयोग देपाडिउ जशइ, सहिगुरु हृदय विमांसइ तिगइ. ३५
संवत १५२१ धिन्न, शके तेर छयाशीउ प्रसन्न,
पोष वदी दिन त्रीज पवित्र, आविउ अश्लेषा नक्षत्र. ३६
घडी पाछिली नव नव राति, जन्म अर्क ऊगीउ प्रभाति,
तुला लग्न सरिसु संकेत, मूरति मंगल जमलु केत; ३७
वृश्चिक बुध रवि त्रीजउ रहिउ, शुक्र मकरि ते चउथइ कहिउ,
गुरु शनि कुंभि रह्या पांचमइ, मेषि राहु सोहइ सातमइ. ३८
दसमइ चन्द रहिउ निज घरे, जन्मयोग जोइउ सहिगुरे;
हृदयस्थलि रवि नक्षत्र वशिउं, सहिगुरि वचन प्रकासिउं इस्युं: ३९
सुनउ थेष्टि होसि तपवर्गा, कइ ए जाशइ तीरथ भणी;
कइ ए थाशइ मोटउ यती, वर विद्या होशइ दंपती. ४०
('विमलप्रबन्ध')

मुनि समयरत्नना कहेवाथी मातापिताने पगे लागीने बाळक लहुराज वैरागी थयो. नवमे वर्षे, वि. सं. १५२९ ना जेठ सुदि दसमना दिवसे पाटणमां पाळणपुरी उपाश्रयमां तपगच्छशाखाना अधिपति लक्ष्मीसागरसूरिए एने दीक्षा आपी, अने एनुं मुनि तरीकेनुं नाम लावण्यसमय राखवामां आव्युं. दीक्षानो आ उत्सव खूब धामधूमथी थयो हतो[3].

लावण्यसमये 'विमलप्रबन्ध'नी प्रशस्तिमां कह्युं छे ते मुजब मुनि समयरत्ने एमने अनेक विषयोनुं अध्ययन कराव्युं हतुं अने सोळमा वर्षथी एमणे कविता रचवी शरू करी हती. रास, छन्द, कवित, चोपाई, प्रबन्ध, संवाद, विविध प्रकारनां गीत (स्तवन, सज्झाय, आदि) एम अनेक प्रकारो एमणे खेड्या हता. विविध प्रकारनी काव्यरचना साथे ठेकठेकाणे एमणे धर्मोपदेश कर्यो हतो. विद्वत्ता अने कवित्वशक्तिने परिणामे एमना उपदेशथी मोटा मोटा मन्त्रीओ अने राजाओ प्रसन्न थया हता. राज्यकर्ता मुसलमान सरदारोए एमनी आज्ञाने मान आप्युं हतुं अने भक्त श्रावकोए स्थळे स्थळे देरासरो अने उपाश्रयो बंधाव्यां हतां.[4] एमना उपदेशथी मेवाडना महाराणा रत्नसिंहना मन्त्री कर्माशाहे सौराष्ट्रमां आवेल शत्रुंजय तीर्थनो सातमो उद्धार कर्यो हतो.[5] एमनी आ शक्तिओने कारणे एमने वि. सं. १५५५मां पण्डितपद आपवामां आव्युं हतुं.

---

३. गुरुवचने वइरागी थयु, माततात-पय लागी रहिउ;
जेठ शुदि दिन दसमी तणउ, उगणत्रीसइ उच्छव घणउ. ४१
पाटणि पाल्हणपुरी पोसाल, जंग हुइ चउपट चुसाल,
दिइ दीक्षा अति आणंदपूरि, गच्छपति लखमीसागरसूरि. ४२
संघ सजन सहू साखो समइ, नाम ठविउं मुनि लावण्यसमइ. ('विमलप्रबन्ध')

४. नवमइ वरसि दीष वर लीध, समयरत्नगुरि विद्या दीध. ४३
सरसति मात मया तव लही, वरस सोलमइ वांणो हुइ;
रचिआ रास सुंदर संबंध, छंन्द कवित चउपई प्रबन्ध. ४४
विविध गीत बहु करिया विवाद, रचीया दीप सुरस संवाद;
सरस कथन नहीं आलि करइ, मोटा मंत्रीराय रंजवइ. ४५
जस उपदेस हवु सुविशाल, बहु थानकि देहरां पोसाल;
मीर मलिक ते मांडइ विनइ, पंडितपद ते पंचावनइ. ४६ ('विमलप्रबन्ध')

५. पूज्य पं० समयरत्न-शिष्य पं० लावण्यसमयस्त्रिसंध्यं
श्रीआदिदेवस्य प्रणमतीति भद्रं...
लावण्यसमयाख्येन पंडितेन महात्मना।
सप्तमोद्धारसक्ता च प्रशस्तिः प्रकटीकृता ॥
('प्राचीन जैन लेखसंग्रह' भा. २-सं. जिनविजय)

लावण्यसमयनी कृतिओ उपरथी जणाय छे के चातुर्मासने कारणे तेमज यात्रानिमित्ते अेओए सौराष्ट्र, गुजरात अने रजपुतानामां जुदे जुदे स्थळे विहार कर्यो हतो अने त्यां रही जुदी जुदी कृतिओ रची हती . आ रीते एमणे वि. सं. १५५८ मां नवपल्लव पार्श्वनाथनी यात्रा करी हती[६]. वि. सं. १५६२ मां वामज नगरमां 'आलोयण विनति,'[७] ए ज वर्षमां सेरीसामां 'सेरीसा पार्श्वनाथस्तवन,'[८] वि. सं. १५६७ मां खम्भात(त्रंबावती)मां 'सुरप्रिय केवलीरास,'[९] वि. सं. १५६८ मां पाटण पासे मालसमुद्रमां 'विमलप्रबन्ध,'[१०] वि. सं. १५७५ मां शांतिज(साती)नगरमां 'करसंवाद',[११] ए ज वर्षमां कतपुरमां 'देवराज-वच्छराज चोपाई'[१२] अने वि. सं. १५८९ मां अमदावादना परा वुहादीनपुरामां 'बलिभद्र-यशोभद्र रास'[१३] एमणे रच्यां हतां. गिरनारनी यात्रा पण एओए करी हती.[१४]

---

६. संवत पन्नर अठावनि रे चैत्रह वदि चउसाल,
ए तु मुनि लावण्यसमय नवपल्लव कीधी यात्र रसाल.
('नवपल्लव पार्श्वनाथस्तवन-ह. प्र. ला. द. सं. मं. नं. ६९९५)

७. संवत पनर वासिठइं आदिश्वर रे अलवेसर साष तु,
वामिज मांहि वीनव्यो सीमंधर रे, देव दर्शन दाषि तु.
('जन·गूर्जर कविओ भाग १'-मोहनलाल दलीचन्द देसाई)

८. संवत पन्नर वासठि प्रसाद् सेरीसा तणो,
लावण्यसमें इम आदि वोलें नमो नमो त्रिभुवनधणी. ('जै. गू. कविओ-भाग १)

९. संवत पंनर सतसठइ आसो सुदि रविवार,
रचिउं चरित्र सोहामणुं त्रंबावती मझारि. (जै. गु. क.-१)

१०. अणहिलवाडा पट्टण पाशि, मालसमुद्रि रहिआ चउमासि,
वोल सकल संघिइ विनविउ, विमल रास तेणइ कारणि कविउ. ४८ (विमलप्रबंध)

११. जिहां पोढां जिणहर पोसाल, वसइ लोक दीपता दयाल,
शांतिज(साती) नगर मंडि सुविशाल, गायु करसंवाद रसाल.
संवत पनर पंचिहुतरइ, मुनि लावण्यसमइ उचरइ,
पामी चन्द्रप्रभ जिनराय, वे कर संपिइ पूज्जइ पाय. (जै. गू. क. १)

१२. शिष्य तास पयतलि नमीए नयर कतपुरिमांहिं,
संभवनाथ पसाउलें ए रास रचिओ उछाहि. (जै. गू. क. १)

१३. संवत पनर नव्यासीइं माघ मासि रविवारि.
अहिमदावाद विशेषीइं पुरु वुहादीन मझारि,
संघ सुगुरु आदेसडइं जिहा करी पवित्र,
वोहा वलिभद्र किन्ह रसि जसभद्र रचिउं चरित्र. (जै. गू. क. १)

१४. सोहइ गण तपगच्छ शणगार, देसविदेशिइ करइ विहार,
सोरठदेशि रही गिरनारि, पुहता गुज्जर देस मझारि. ४७ (विमलप्रबन्ध)

लावण्यसमयना शिष्यसमुदाय विशे कशी माहिती मळती नथी.

लावण्यसमय पोतानी कृतिओमां लक्ष्मीसागरसूरि अने समयरत्नसूरिने पोताना गुरु तरीके गणावे छे, पण ए बे उपरांत सुमतिसाधुसूरि, सोमसुन्दर, सोमजय, सोमगुण, राजप्रिय, इन्द्रनंदि वगेरेनो पण एओ पोताना गुरु तरीके उल्लेख करे छे. वि. सं. १५४३मां रचायेल 'सिद्धांत चोपाई'ने अन्ते अेओ कहे छे :

"अम्ह गुरु श्री**सोमसुन्दरसूरि**, जासु पसाइं दुरिआं दूरि,
तपगच्छनायक सुगुणनिधान **लक्ष्मीसागरसूरि** प्रधान;
श्री**सोमजयसूरींद** सुरींद सुजाण, जसु महिमा जगि मेरु समाण,
अहनिसि हरषि प्रणमु पाय, सुमतिसाधु सूरि तपगछराय;
गुणमंडित पंडित जयवंत **समयरत्न** गिरूआ गुणवंत."

वि. सं. १५४६मां रचायेल 'नेमिरंगरत्नाकर छन्द'मां आ उपरांत सोमगुण अने राजप्रियनो उल्लेख मळे छे:

"श्रीमत्**सोमगुण**व्योम सोमसौभाग्यसुन्दरः
प्रज्ञावज्ञातमत्सूरिः सूरिश्री **सोमसुन्दरः**
श्रीसोमसुन्दर लब्धिसायर **सोमदेवमुनीश्वराः**
श्रीसोमजय गुणधरगिरूआ **सुमतिसाधु** गुणेश्वराः
श्रीइंद्रनंदिसुरिंद राजप्रियसूरि सदाफला,
तपगच्छमंडण सवे सहिगुरु जयु महीयलि अविचला.
गुणराजिमण्डित पवर पंडित **समयरत्न** मुनीश्वरो,
तसु पाय पामी सीस नामी स्तविउ तूं नेमीश्वरो.

'गौतमपृच्छा चउपइ' (वि. सं. १५४५)मां इन्द्रनंदि अने राजप्रियसूरिनो उल्लेख मळे छे :

"तपगच्छनायक आणंदपूरि, वंदुं **श्रीसोमसुन्दरसूरि**,
तास अवनइ सोहइ गुरुचंद, सिरि **लक्ष्मीसागरसूरिंद**.
सिर **सिरिसोमदेवसूरि** सोम समान, **सोमजयसूरि** सप्रधान,
तपगच्छनायक नयणानंद गुरु **सुमतिसाधु** सुरिंद.
श्रीइंद्रनंदिसूरि गणधर, किरि अभिनव गोयम–अवतार,
तपगछि उपइ अविचल भाण **श्रीराजप्रियसूरि** सुजाण,
समयरत्न जयवंत मुणींद, इम जंपइ जगि तेहनउ सीस."

आ उपरथी लावण्यसमयना गुरु कोण एवी शंका थवा संभव छे, परन्तु सुमतिसाधु, सोमसुन्दर, सोमगुण, इन्द्रनंदि, राजप्रिय, शुभरत्न, सुधानन्दन, रत्नमण्डन, जिनहंस आदि दस मुनिओने लक्ष्मीसागरसूरिए आचार्यपद आप्यानो उल्लेख मळे छे.[१५] सोमविमळ नामना साधुए वि. सं. १६०२मां रचेल 'गच्छनायक पट्टावली सज्झाय'मां पण आ अगियार मुनिओने लक्ष्मीसागरसूरिए आचार्यपद आप्यानो उल्लेख छे.[१६] एटले ए सर्वे लावण्यसमयना गुरुभाई समजाय छे. तपागच्छनी पट्टावली[१७] मुजब लक्ष्मीसागरसूरिनी पाटे सुमतिसाधुसूरि आव्या छे. एमने विशे लावण्यसमयने अत्यन्त मान छे अने 'सुमतिसाधुसूरिविवाहला'मां सुमतिसाधुना दीक्षाना प्रसंगने एमणे रसिकताथी वर्णव्यो छे.

लावण्यसमये गुरु तरीके लक्ष्मीसागरसूरि अने समयरत्नसूरि बंनेनो उल्लेख कर्यो छे, एनो अर्थ कई रीते घटाववो ए प्रश्न रहे छे. परन्तु लावण्यसमयने दीक्षित थवा तैयार करनार समयरत्न हता. लक्ष्मीसागरसूरि पासे दीक्षा लीधा पछी अनेक विषयोनुं अध्ययन पण एमने समयरत्ने कराव्युं छे. लक्ष्मीसागरसूरिनो स्वर्गवास वि. सं. १५३७मां थयेलो.[१८] ए पछी लावण्यसमयना प्रेरक समयरत्नसूरि होय ए स्वाभाविक छे. आम पहेला गुरु समयरत्नसूरि छे, ज्यारे दीक्षागुरु लक्ष्मीसागरसूरि छे. शत्रुंजय–प्रशस्तिमां **"पूज्य पं. समयरत्न–शिष्य पं.लावण्यसमय"** एवो उल्लेख छे. ए परथी भक्तसमुदाय पण लावण्यसमयने समयरत्नना शिष्य तरीके ओळखतो लागे छे. लावण्यसमये समयरत्नने माटे 'गिरूआ गुणवंत', 'गुरुराय', 'मुनीश्वरो' जेवा विशेषणोनो उपयोग कर्यो छे. वळी एक ज गुरुनो उल्लेख करे छे त्यां एओ समयरत्ननो ज उल्लेख करे छे. आ उपरथी पोताना गुरुभाई प्रत्ये लावण्यसमयने मान छे, एमने पोताना गुरु समान गणे छे, दीक्षागुरुने पण एओ अत्यन्त मान आपे छे, पण गुरु तरीके सौथी वधु मान तो समयरत्नने आपे छे, ए स्पष्ट छे.

लावण्यसमयनुं अवसान क्यां अने क्यारे थयुं ए विशे कशी माहिती मळती नथी,[१९] परंतु एटलुं चोक्कस कही शकाय के वि. सं. १५८९ सुधी एओ हयात

---

१५. "ऐतिहासिक राससंग्रह भाग २–सं. श्री विजयधर्मसूरि, सं. १९७८ –प्रस्तावना

१६. "ऐतिहासिक सज्झायमाला" भाग १

१७. जैन गूर्जर कविओ, भाग २

१८. जैन गूर्जर कविओ, भाग १

१९. क्यारे स्वर्गस्थ थया ए जाणवा कंई साधन उपलब्ध थयुं नथी." (जै. गू. क. १—पृ. ७०)
"तपास करवा छतां कविनो देहोत्सर्ग क्हां अने क्या समये थयो ते कांई जाणवामां आव्युं नथी." ('ऐतिहासिक रासंग्रह भा. २–सं. श्रीविजयधर्मसूरि–प्रस्तावना, पृ.१६)

हता. आ वर्षमां अमदावादमां शाहआलमना रोजा पासे आवेला बुहादीनपुरामां रही एमणे 'खेमऋषि(बोहा)रास—यशोभद्रसूरिरास'नी रचना करी छे.[२०] आम कविनी ६८ वर्षनी उंमर (वि. सं. १५२१ थी १५८९) निश्चित छे.

लावण्यसमयनी प्रथम दीर्घकृति 'सिद्धांतचोपाई' वि. सं. १५४३मां अने छेल्ली कृति 'यशोभद्रसूरिरास' सं. १५८९मां रचाई छे. वच्चेना गाळामां नानी–मोटी त्रीसेक कृतिओ रची छे. एमां एमणे जैन धर्मनां तीर्थक्षेत्रो, उत्सवो, आचारविचार, व्रतनियमो इत्यादिनो महिमा गायो छे ने ए धर्मना सिद्धांतोनुं प्रतिपादन कर्युं छे. 'गौतमपृच्छा,' 'आलोयण सज्झाय,' 'पुण्यफल सज्झाय,' 'आत्मबोध सज्झाय,' 'चतुर्विंशतिजिनस्तवन' वगेरे कृतिओमां एमनो अंतःकरणनो वैराग्य अने भक्तिभाव ऊभराइ जतो जणाय छे. ऐमनी बधी कृतिओ सांप्रदायिक छे, छतां तक मळतां सामाजिक रीतरिवाजो, ज्ञातिओ, देश, नगर, वन, सामुद्रिक लक्षणो, अस्त्रशस्त्रो, आभूषणो, पहेरवेश, शुकन–अपशुकन, अश्वप्रकार, पुरुषनी कला, स्त्रीनी कला इत्यादिनां वर्णनो एमणे करेलां छे. कहेवतो अने सामान्य विधानो–अर्थान्तरन्यासनो बहोळो उपयोग कर्यो छे ने व्यावहारिक उपदेश आप्यो छे. विविध छन्दो अने रागरागणीनो उपयोग करी पद्यरचना अने भाषा पर ऊंचा प्रकारनुं प्रभुत्व दर्शाव्युं छे. 'करसंवाद' अने केटलीक हरियाळी-ओमां चातुर्य अने विनोद जोवा मळे छे. वर्णन करवानी अने रस जमाववानी शक्ति एमणे स्थळे स्थळे दर्शावी छे. एमनी 'सिद्धांत चोपाई' एमना स्वभावनुं सुन्दर दर्शन करावे छे. ए वखते "लोंका नामना अमदावादना एक श्रावके जिनधर्मनी चालती परम्परा विरुद्ध नवो पंथ चालतो कर्यो हतो. परिस्थिति एवी अनुकूळ हती के नवो पन्थ चालती आवेली मान्यताओनी विरुद्ध होवा छतां पण श्रावकोने ए गम्यो अने एक पछी एक, हजारो श्रावको ए पन्थमां भळी जवा लाग्या. × × आ पन्थ ऊभो थतां जैन संघने अने खास करीने श्वेतांबर जैनसंघने एवो आकरो धक्को लाग्यो के एनां एके-एक अङ्ग हाली ऊठ्यां. × × आवे वखते नवजुवान मुनि लावण्यसमय कवि थवाना कोडमां ऊछळता हता."[२१] एमणे लोंकाशाना मतनो प्रतीकार करती 'सिद्धांत चोपाई' रची; पण "एमां नथी सामा पक्षने हलको पाडवानी हलकी युक्तिओ, नथी कांई आक्षेपो

२०. आ संबन्धमां श्री. क. मा. मुनशी 'नरसिंहयुगना कविओ'मां लखे छे : "छपायेला 'ऐतिहासिक राससंग्रह'मां आ ग्रंथ रच्यानो सं. १५८९ आप्यो छे, पण मारी पासेनी प्रतिमां सं १५८२ नी साल लखी छे, अने ते ज साल खरी लागे छे."

२१. 'नरसिंहयुगना कविओ'—क. मा. मुनशी

के नथी कशो घूंघवाट; मात्र सूत्रो टांकीने गुजरातीमां एनो अर्थ समजाव्यो छे. काव्यने छेडे एमणे आ प्रमाणे कह्युं छे :

> "क्रोध नथी पोषिउ मइ रति, वात कही छइ सघली छती,
> बोलिउ श्री सिद्धांतविचार, निंदानु सिउ अधिकार. ७३
> जे जिम जाणउ ते तिम करउ, पण जिनधर्म खरउ आदरउ."[२२] ७४

आ उपरथी स्पष्ट कही शकाय एम छे के लावण्यसमय मात्र धर्मरत के धर्मचुस्त साधु नहि, पण स्वस्थ, बहुश्रुत अने रसिक विद्वान हता. धर्म जेटलो ज समाजमां एमने रस हतो. एमनुं व्यक्तित्व विद्वत्ता अने रसिकताथी मान मेळवे तेवुं छे, तो निर्मळ साधुताथी पूजाय तेवुं छे.

कवन

लावण्यसमये प्रबन्ध, रास, चोपाई, छन्द, संवाद, हरियाळी, हमची, सज्झाय, स्तवन, एम अनेक प्रकारनी कृतिओ रची छे. एमांथी केटलीक कृतिओ जैन गृहस्थोना जीवनप्रसंगने लगती छे, केटलीक कृतिओ जैन साधुपुरुषो विशे छे, तो केटलीकमां जैन तीर्थंकरोनुं गुणानुदर्शन छे. 'विमलप्रबन्ध' जेवी कृतिमां इतिहासने तो 'देवराजवच्छराज चोपाई'मां लोककथाने गूंथी देवामां आवेल छे. केटलीक कृतिओ आठदस कडीनी छे, तो केटलीक सारी रीते मोटी छे. आमांनी केटलीक कृतिओ सामयिकोमां अने पुस्तकाकारे प्रसिद्ध थयेल छे, परन्तु मोटा भागनी अप्रसिद्ध छे. मोटा भागनी कृतिओमां रचनासमय मळी रहे छे.

१. [२२]सिद्धांत चोपाई

आ कृतिनी रचना वि. सं. १५४३ना कार्तिक सुदि ८ ने रविवारे थई छे. एमां १८१ कडी छे :

> 'ए चउपइ रची अभिराम, लुंकट—वदन—चपेटा नाम. १७९
> संवत्सर दह पंच विशाल, त्रिताला वरषे चउसाल,
> काती शुदि आठमी शुभ (रवि)वार, रची चउपइ बहुत विचार. १८०

॥ १८१ ॥ इति श्रीसिद्धांत चतुष्पदी । लुंकटवदने चपेटा विधाना । लिखिता परोपकाराय ॥[२२]

---

२२. 'जैनयुग', पुस्तक ५, अंक ९–१० (वि. सं. १९८६)मां प्रकाशित.

२३. 'जैनयुग', पु. ५ अने 'जैन गुर्जर कविओ'–१

विक्रमनी सोळमी सदीनी शरूआतमां अमदावादना लोंकाशाह (वि. सं. १५०८) नामना साधुए जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संप्रदायना प्रचलित रीतरिवाजो अने जैनोनी आवश्यक क्रियाओ, प्रतिमापूजा वगेरेनो विरोध करी नवो पन्थ स्थाप्यो हतो. लोंकाशाहना आ नवा मतनुं—सिद्धांतोनुं 'सिद्धांत चोपाई (लुंकावदन—चपेटा)'मां खण्डन तेमज पोताना मतनुं प्रतिपादन छे. कविनी बावीस वर्षनी युवानवये आ कृतिनी रचना थई छे छतां एमां लगार पण क्रोध के निंदानो भाव नथी.[२४] मात्र शास्त्रना सिद्धांत बतावीने पोतानो प्रश्न खरो छे अने सामो पक्ष खोटो छे एम सिद्ध करवानो एमां प्रयत्न करवामां आव्यो छे.[२५] दृष्टांतो द्वारा विषयने असरकारक बनाववानी कविनी शक्तिनुं पण एमां दर्शन थाय छे :

' मदि झिरतु मयगल किहां, किहां आरडतूं ऊंट,
पुण्यवंत मानव किहां, किहां अधमाधम खूंट. १५२
राजहंस वायस किहां, (किहां) भूपति किहां दास,
सपतभूमि मंदिर किहां, किहां उडवसे वास. १५३
मधुरा मोदक किहां लवण, किहां सोनूं किहां लोह,
किहां सुरतरु किहां कयरडु, किहां उपशम किहां कोह. १५४
किहां टंकाउलि हार वर, किहां कणयरनी माल,
शीतल विमल कमल किहां, किहां दावानल—झाल. १५५
भोगी भिक्षाचर किहां, किहां लहिवूं किहां हाणि,
जिनमत लुंका—मत प्रतिइं एवडुं अंतरि जाणि."[२६]

आ कृतिनी हस्तलिखित अनेक नकलो थई छे, ए एनो जैन समाजमां थयेलो प्रचार बतावे छे.

२. [२७]गौतमपृच्छा चउपइ

आ कृति सांप्रदायिक अने उपदेशप्रधान छे. प्राकृत 'गौतमपृच्छा' प्रकीर्णकने आधारे एनी रचना थई छे. भगवान महावीरना प्रथम शिष्य गौतम गणधरना मनमां जैन सिद्धांतो अंगे केटलाक संशय थयेला, तेना निवारणार्थे एमणे केटलाक प्रश्नो महावीरने पूछेला. आ प्रश्नो तेमज एना उत्तरनी गूंथणी आ 'चउपइ'मां छे. एमां कविना अंतःकरणनां वैराग्य अने भक्तिभाव ऊभराई जतां जणाय छे :[२८]

---

२४. 'ऐतिहासिक राससंग्रह'—भाग २—प्रस्तावना.
२५. 'नरसिंहयुगना कविओ'
२६. 'जैनयुग', पुस्तक ५, अंक ९-१०
२७. आ कृति 'सज्झायमाला' (शा. भीमशी माणेक प्रकाशित) मां प्रसिद्ध थई छे.
२८. 'नरसिंहयुगना कविओ.'

'धर्म करु चितु मन मांहि, आलस वइरी आगलि थाइ;
पापी परहु करी न सकाइ, रातिदिवस इम आलि जाइ. १६
आरति न टली एकु वार, जनम मरण वचि एक लगार,
भवसागरि हूं भमिउ अपार, तुझ विण सामी कुहु कुण तारइ. १७
घरघरणीनि भारिइं जूतु, आगइ जनम घणाइ विगूतु,
महिआं मोहनिद्राभरि सूतु, पापकरमि कलि-कादमि खूतु. १८
बालपणइ क्रीडारसि हूंतु, यौवनवय युवतीसुखि जूतु,
वडपणि व्याधि घणी जोगवतु, धर्महीण भव इम भोगवतु.' १९

एनो रचनासमय वि. सं. १५४५ चैत्र सुदि ११ ने गुरुवार छे. काव्यमां एनो उल्लेख चमत्कृतिपूर्वक थयो छे :

'पहिलु तिथिनी संख्या जाण, संवत जाणु इणि अहिनाण,
बाणवेद जउ वांचउ वाम, जांणउ वरष तणो तुमे नांम. ११७
वासुपूज्य जिणवर वारसु, चैत्र थको मास जिने नमो,
अजुआली इग्यारशि सार, तहीं सुरगुरु गिरुउ वार.'[२९] ११८

कोई हस्तप्रतमां आ कृतिनी ११९, तो कोई हस्तप्रतमां १२१–१२२ कडीओ मळे छे.

३. [३०]स्थूलिभद्र एकवीसो

आ काव्यनी रचना वि. सं. १५५३ना दिवाळीना दिवसोमां थई छे :

' संवत पंनर त्रिपनइ, संवत्सरे दिवस दीवाली तणउ,
थूलिभद्र गायु मय सुणायु एकवीसु ए भणउ.'[३१]

एमां एकवीस कडीओ छे.

स्थूलिभद्र एक मोटा जैन आचार्य थई गया. एओ पूर्वाश्रममां पाटलिपुत्रना नन्द-राजाना मन्त्री शकटालना पुत्र हता. पाटलिपुत्रनी कोशा नामनी एक प्रसिद्ध गणिकाना प्रेममां पडीने एओ एना घरमां बार वर्ष सुधी रह्या हता. पिताना मृत्यु पछी राज्य-खटपट जोईने एमने संसार उपर वैराग्य थयो अने एमणे तुरत ज संभूतिविजय गुरु पासे जईने दीक्षा लीधी. दीक्षा लीधा पछी एमना वैराग्यनी कसोटी करवा गुरुए एमने पहेलो

२९. लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामन्दिर, अमदावाद–ह. प्र. नं. १६६९
३०. अप्रसिद्ध. ३१. 'जैन गूर्जर कविओ'–भाग १

चातुर्मास कोशाने घेर गाळवानो आदेश आप्यो. पोताना प्रेमीने पाछो आवतो जोईने कोशाने आनन्द थयो, एने चळाववा एणे खूब प्रयत्न कर्या, परन्तु स्थूलिभद्रे तो हवे काम उपर विजय मेळव्यो हतो. कोशाना बधा प्रयत्नो सामे अडग रही, नियत समय सुधी एना घरमां रही, एने प्रतिबोध पमाडी, एओ गुरु पासे आव्या. आ रसिक प्रसंग-ने आ काव्यमां गूंथवामां आव्यो छे. आखुंये काव्य शब्दलालित्यथी भरपूर छे. एमांनी वर्णसगाई, अंतर्यमक तथा प्रासनी तेमज अगाउनी कडीनी छेल्ली लीटीना शब्दने पछीनी कडीनी शरूआतमां सांकळी लेवानी योजना कविनुं छंदप्रभुत्व अने भाषाप्रभुत्व दर्शावे छे. कविनी आ प्रकारनी वर्णन करवानी अने रस जमाववानी शक्ति काव्यमां स्थळे स्थळे देखाय छे.

स्थूलिभद्रने चळाववा माटे शणगार सजी कोशा प्रयत्न करे छे एनुं वर्णन सरस छे :

> 'कवि कहइ केती—परि जेती, लहइ कोशा कामिनी,
> पहिरंति चरणा चीर चोली भावभोली भामिनी;
> कर चूडि खलके, नेउर रणके, पाय घमके घूघरी,
> झब झालि झबके झूमणां ने खींटली खलके खरी.
>
> भोलाववा रे भाव भला देखाडती,
> मरकलडइ रे मानवनां मन पाडती;
> प्रीय—पाए रे लाडे सीस लगाडती,
> वर वेणा रे वंस विशेष वजाडती.
>
> वर वेणा वाइ, गीत गाइ, भेर भूंगल वज्जए;
> दोंदीं कि सद्दइ, निवल मद्दइ, वंश-सद्दे वज्जए;
> चचपट्ट चूपट, ताल मेलति, करति अलवि थिनगनि,
> धिधिकटि परगटि, पाय पाडि, पाय परतइं पदमिनी.[३२]

कोशाना प्रयत्न निष्फळ जाय छे. स्थूलिभद्रनो उपदेश एना अन्तरमां खूंपी जाय छे. एनुं वर्णन पण सचोट छे :

> ' ए तो तृषा रे, सायर परितृप्ति नहीं;
> ए तो जीवीय रे, संध्या—राग जिस्युं लही;

३२-३३. 'गुजराती साहित्यनां स्वरूपो'—डॉ. मंजुलाल र. मजमूदार

सुणि सुन्दरि रे, जोव्वण जलबुदबुद समो,
इम जाणि रे, आलि कहो किम नींगमो ?
किम नींगमुं दिन आलिं माटे, एणि वाटे जग जयों;
रसभोग केरां, अति भलेरां, भोगवि थिर कुण रह्यो ?
संसार पडीयो, विषय नडीयो, जीव जो चेते नहीं,
आवीओ ठालो, गयो भूलो, धरम विण नर भव वही.'[३३]

४. नवपल्लवपार्श्वनाथ–स्तवन

कविए वि. सं. १५५८मां नवपल्लवपार्श्वनाथनी यात्रा करी हती ते प्रसंगे आ काव्य रचायेलुं छे :

'संवत पन्नर अट्ठावन्नि रे, चैत्र वदि चउसाल,
ए तु मुनि लावण्यसमय नवपल्लव कीधी जात्र रसाल.'[३४]

आ नानकडा काव्यमां जैनोना त्रेवीसमा तीर्थंकर पार्श्वनाथनुं स्तवन छे. कविनो भक्तिभाव एमां ऊभराय छे.

५. आलोयण विनति

करेलां पापोनी आलोचना जैनोना प्रथम तीर्थंकर आदीश्वर समक्ष एमां करवामां आवी छे. एमां ५७ कडी छे. एनी रचना वि. सं. १५६२मां वामजनगरमां थयेली छे. :

'संवत पंनर बासठइ आदीसर रे अलवेसर साषि तु,
वामज माहे वीनवइ सीमंधर रे देव दरिषण दाषि तु.'[३५] ५४

एमां कविनी झळहळती साधुता अने ऊभराई जतो भक्तिभाव मालूम पडी आवे छे.[३६]

६. नेमनाथ हमचडी

आ कृतिनो रचनासमय वि. सं. १५६२ छे :

'संवत पनर बासठे रे गायु नेमिकुमारो,
मुनि लावण्यसमय इम बोलइ, वरतिउ जयजयकारो'.[३७]

पण केटलीक हस्तप्रतमां रचनासमय वि. सं. १५६४ छे :

'संवत पनर चउसठइ रे गाया नेमिकुमारो,
मुनि लावण्यसमइ इम बोलइ, वरतिउ जयजयकारो'.[३८]

---

३४. 'ऐतिहासिक राससंग्रह' भाग २; ला.द.भा.सं.मंदिर–ह. प्र. नं. ६९९५. आ काव्य अप्रसिद्ध छे.
३५. 'जैन गूर्जर कविओ'–भाग १; ला.द.भा.सं.मंदिर–ह. प्र. नं. ३३५१
३६. 'नरसिंहयुगना कवियो.' आ काव्य अप्रसिद्ध छे.
३७. 'जैन गूर्जर कविओ'–भाग १.
३८. ला. द. भा. सं. मंदिर–ह. प्र. नं. ६२११. आ काव्य अप्रसिद्ध छे.

एना बे अधिकार(विभाग)मां मळीने ८४ कडीओ छे. केटलीक हस्त-प्रतोमां ८३ के ८५ कडी पण छे.

यादव राजा समुद्रविजय अने एमनी पत्नी शिवादेवीना पुत्र, जैनोना बावीसमा तीर्थंकर नेमिनाथ लग्न करवा इच्छता नहोता, पण एमना काकाना दीकरा तथा वयमां एमनाथी मोटा श्रीकृष्णनी पत्नीओए एमने वसंतखेल करीने मांड लग्न करवा माटे मनाव्या. राजा उग्रसेननी रूपवती पुत्री राजिमती किंवा राजुल साथे एमनुं लग्न नक्की करवामां आव्युं; पण नेमिनाथनी जान लग्नमंडप पासे आवी त्यारे जानैयाओना जमण माटे एकत्र करवामां आवेलां अनेक पशुओने एमणे जोयां. आ रीते थनार हिंसानी कल्पना आवतां नेमिनाथने वैराग्य उत्पन्न थयो अने लग्न कर्या विना ज, वलवलती राजिमतीने मूकीने एओ पाछा फर्या. मांडवेथी पाछा फर्या बाद गिरनार पर जई तप द्वारा एमणे मुक्ति प्राप्त करी अने राजिमतीए पण नेमिनाथनी पाछळ जई आत्मसाधना द्वारा ज्ञान प्राप्त कर्युं. आ प्रसंगनुं अनेक जैन कविओए उमळकाथी वर्णन कर्युं छे. लावण्यसमये पण एनुं रसिक वर्णन कर्युं छे. आखी कृति शब्दलालित्यथी भरपूर छे अने एमां सरस शब्दचित्रोनुं सर्जन थयुं छे. कविनुं छन्दप्रभुत्व अने समाजदर्शन पण एमां देखाई आवे छे. 'रंभा रूपि कलंकी,' 'अधर सुवि द्रुम चोला,' 'मयणची वाटडी,' 'करण जिस्या हींडोला' जेवी पंक्तिओमां कविनी मौलिक ने मनोहर अलंकार योजवानी शक्ति ध्यान खेंचे एवी छे. वसंतखेल करती गोपीओनुं वर्णन कवि आ प्रमाणे करे छे :

'सोल सहस अन्तेउरी श्रीपति सवि बोलावी,
करि अद्भुत शिणगारडु रे गोपी गोरडी आवी. १६
कसका चरणा चोलमजीठी, कसका घुग्घरीआला,
कसके छायलि छ्यलि सु छलीआ, कसका चरणा काला. १७
कसके पहिरणि पीत पटुली, कसके राता रंगा,
कसके पहिरणि सेत शिणगारा, कसके चीर सुचंगा. १८
कसके उर-वरि नवसर हारा, झालि तणा झबकारा,
रंगि रूडाला सोविन चूडला, पाए झांझर झमकारा. १९
काला कांचू कमल-स-कूंअला कसका यज लापीणा,
माणक मोती चूडल वइठा कसका कमपा झीणा. २०
पीण पयोहर अमीय घडुला, अधर सुवि द्रुम चोला,
दंतावली दाडिमकुली रे मुखि ताजा तंबोला. २१

निरमल नाशा सरल तीपाली, भुमहि भुअंगम–काली,
आंजी दो आंषडी, मस्तकि रापडी, वेणि सूं फूंमतीआली. २२

षरी सूं षीटली, हाथि वीटली, हरिषी हरिणालंकी,
जंघा जुअली कदलीथंभा, रंभा रूपि कलंकी. २३

तपइ सूं त्रोटडी कांने मोटडी, कोटडी कोडि सिंगारू,
उढणि घाटडी रंगची माटडी, मयणची वाटडी वारू. २४

पीयलि पनुती कुंकुमलोला सहजि सुरंगा रोला,
पाये पाडगलां, कंचिणि कडलां, करण जिस्या हींडोला. २५

शिरि सइंथा सींदूरीआ रि, सोनानां मादलीआं,
अवलासवला बहिरषा रे बाहूंडली विहूं वलीआं. २६

नलवटि चन्द सु चहुटीउ रे, काने नाग वलाया,
पाये लगाड्या वींछीआ रे सुरपति सेव मनाया. २७

कसके हाथि कमलचा नाला, कसके चंपकमाला,
कसके करि छइ चंदन–सीपा, कसके काला वाला. २८

हंसलागमणी चंदलावयणी मृगलानयणी नारी,
रमिझमि नेउरी अमर अन्तेउरी गोपी सवि सिणगारी.[३९] २९

राजिमतीना विरहनुं वर्णन पण हृदयस्पर्शी छे :

'देइ दान चडिउ गिरिनारी, झूरइ राजलि नारी. ६७

कंकण फोडइ हइडुं मोडइ, त्रोडइ नवसर हारो,
धिणि धिणि लोडइ, बि कर जोडइ, जंपइं नेमिकुमारो. ६८

आघीपाछी थाइ माछी जव जल देपइ थ्योडुं,
'सामलीआ, कां वलीआ वेगिं ? नवभव–नेह म छोडु.' ६९

वाटइ लोटइं, ऊभी उटइ नेमिकुमरनइं कोडे,
सूनइ हीइडइ साद करइ रे रही रही ऊभी टोडइ: ७०

'चंद्रा विण सी चांद्रणी रे ? पासा विण सी सारि ?
मयगल वण सी हाथिणी रे ? प्रीयडा विण सी नारि रे ? ७१

३९. ला. द. भा. सं. मंदिर–ह. प्र. नं. ६२११. त्रण पत्रनी आ हस्तप्रतनो लख्यासंवत १६३५ छे.

हंस विहूणी हांसली रे? मांडवडा विण वेल्यो?
कंत विहूणी गोरडी रे किसिउं करेसि गेलो रे? ७२
कइ मइं मोडया कर कसा रे? कइ मइं मोल्या मरमो?
कइ मइं साडी झाटकी रे? कीधां कूडां करमो? ७३
कइ मइं रषि संतापीआ रे? माय विछोहिआं वालो?
कइ मइं रतन विणासीआं रे? दीधां अजुगतां आलो? ७४
कइ मइं द्रह फोडावीआ रे? कइ मइ परधन लीधां?
कइ मइं काम को हीणा कीधा? अणगल पाणी पीधां? ७५
कइ संथारा ऊलटिआ रे? सरोवर फोडी पालो?
सील पालिआं सां चिलां रे? मोडी तरुअर–डालो? ७६
सहिगुरु–गुरुणी नवि संतोष्या? सातइ षेत्र न पोष्यां?
संपतिसा सूं दान न दीधां? थांपिणि–मोसा कीधा?' ७७
अडवडती पडती आषडती चडती गढ गिरिनारी,
नेमि जिणेसर नयणे देषी रंजी राजलि नारी रे.[४०] ७८

७. सेरीसापार्श्वनाथ–स्तवन

कविए वि. सं. १५६२मां शेरीसानी यात्रा करी जणाय छे. ए प्रसंगे रचायेली पंदर कडीनी आ कृति छे :

'संवत पन्नर बासठ्ठि प्रसाद सेरीसा तणो,
लावण्यसमें इम आदि बोलें नमो नमो त्रिभुवनधणी'.[४१]

एमां जैनोना त्रवीसमा तीर्थंकर पार्श्वनाथनी स्तुति छे. काव्य छन्दोबद्ध अने शब्दलालित्यथी भरेलुं छे.[४२]

८. रावणमन्दोदरीसंवाद

सीतानुं हरण करीने रावण एने लंका लई गयो, त्यारपछी मंदोदरी अने रावण वच्चे थयेल काल्पनिक संवाद आ काव्यमां छे. ६३ कडीनुं आ नानुं काव्य रसभर्युं छे. संवादनी शरूआत कवि मंदोदरी पासे, जाणे सूतेला सिंहने जगाव्यो होय ए रीते, वेगथी करावे छे :

'सूतेलो सींह जगावीउ, नडीओ वासग नाग रे,
सीत हरी तिं स्युं कर्युं, रूठा रामना पाग रे. १

४० ला. द. भा. सं. मंदिर–ह. प्र. नं. ६२११ ४१. 'जैन गूर्जर कविओ'–भाग १.
४२. 'नरसिंहयुगना कविओ.' आ काव्य अप्रसिद्ध छे.

सांभलि रावण राजीया, जासे महियलि माम रे;

सती सीता तइं कां हरी, विरी वंकडो राम रे.' २

एनी रचना वि. सं. १५६२मां थई छे :

'संवत पंनर वासठि रच्यो रास संवाद रे.'[४३] ५९

९. वैराग्य विनति

जैनोना प्रथम तीर्थंकर आदीश्वरनी आ प्रार्थना छे. 'आदिनाथ विनति' ने नामे पण ए मळे छे. एनी रचना वि. सं. १५६२ना आसो सुदि १० ना रोज थई छे :

'पंनर वासठइ आदिजिन तुठइ, करी वीनती ऊलटि घणइए,

आसो मसवाडइ दसमीं दिहाडइ, मुनि लावण्यसमइ भणइ ए.'[४४] ४७

४७ कडीनी आ कृतिमां कविनुं छन्द अने प्रास उपरनुं प्रभुत्व जणाई आवे छे.

१०. सुरप्रियकेवली रास

जैनोना चोवीसमा तीर्थंकर महावीरना शिष्य श्रेणिकना समयमां थई गयेला सुरप्रिय नामना जैन संतनुं चरित्र आ काव्यमां छे. एनी रचना खंभातमां थयेली छे ने एनो रचनासमय वि. सं. १५६७ ना आसो सुदि ६ ने रविवार छे :

'संवत पंनर सत(ड)सठइ आसो सुदि रविवार,

रचिउं चरित्र सोहामणुं त्रंबावति मझारि.'[४५]

आ रासमां २०१ कडीओ छे.

११. विमलप्रबंध

कविनी आ एक सुदीर्घ अने श्रेष्ठ कृति छे. एनी रचना पाटण पासे आवेला मालसमुद्रमां वि. सं. १५६८ मां थई छे :[४६]

'संवत पंनर अठसठइ वड्ड रास विस्तार,

ते प्रमांणि पूरुं चडिउं मालसमुद्र मझारि.'

कविए एने 'रास' अने 'प्रबंध' एम बंने नामे ओळखाव्यो छे. ए नव खंड अने एक चूलिकामां वहेंचायेलो छे. कविए गणाव्या मुजब एमां १३५६ कडीओ छे ने मुख्यत्वे चोपाई तेमज दुहा, वस्तु, कवित छन्द अने जुदा जुदा ढाळोनो उपयोग करेलो छे.

---

४३. 'जैन गूर्जर कविओ'–भाग १ आ काव्य हजु अप्रसिद्ध छे.

४४. 'जैन गूर्जर कविओ'- भाग १. आ कृति हजु अप्रसिद्ध छे. ४५. 'जैन गूर्जर कविओ'–भाग १. ऐतिहासिक राससंग्रह'–भाग १. आ रास हजु अप्रसिद्ध छे. ४६. एनां बे संपादन आपणे त्यां प्रकट थयां छे : (१) 'विमलप्रबंध' (सं. मणिलाल ब. व्यास) अने (२) 'विमलप्रबंधः एक अध्ययन (डॉ. धीरजलाल ध. शाह)

पाटणना पहेला भीमदेव सोलंकीना वीर, मुत्सद्दी अने कलाप्रेमी मन्त्री विमलशानुं चरित्र एमां विस्तारथी आलेखवामां आव्युं छे. प्रथम त्रण खंडमां विमलना पूर्वजो, एमनां पराक्रमो तथा श्रीमाळी ओसवाळ अने पोरवाड वणिकोनी उत्पत्तिनुं वर्णन करवामां आव्युं छे. चोथा खंडमां विमलना जन्म, बाळपण अने विद्याभ्यासनुं तेमज पांचमा खंडमां श्रीदेवी साथे एना लग्ननुं वर्णन करवामां आव्युं छे. छठ्ठा खंडमां विमले पाटणना राजा भीमदेवने पोतानी बाणविद्याथी प्रसन्न करी दंडनायकनी पदवी प्राप्त कर्यानुं, तेमज दुश्मनोनी कानभंभेरणीथी भीमदेवे विमलनुं कासळ काढवा करेली युक्तिओ अने एमां विमले मेळवेल विजयनुं वर्णन करवामां आव्युं छे. सातमा खंडमां पाटण छोडी विमले चन्द्रावतीनगरीनुं राज्य मेळवी, त्यां स्थिर थई, रोमनगरना सुलतान पर विजय मेळव्यानुं, तथा आठमा खंडमां विमले ठठ्ठानगरना राजाने हरावी गुर्जरनरेश भीमदेवनी भेट मेळव्यानुं अने चन्द्रावतीने नवेसरथी वसाव्यानुं वर्णन छे. छेल्ला नवमा खंडमां विमले मुश्केलीओनो सामनो करी आबु उपर 'विमलवसही'नां प्रख्यात देरासर बंधाव्यानी विगत छे.

आम, विमलनुं समग्र चरित्र आ प्रबंधमां आलेखवामां आव्युं छे, पण "जैन कविओए लखेलां अन्य जीवनचरित्रोनी जेम सांप्रदायिक अने धार्मिक वर्णनोथी ते मुक्त नथी. आबु पर्वत उपर बंधावेलां जगप्रसिद्ध 'विमलवसही'नां मन्दिरोने कारणे विमळ जैनोमां आदरणीय अने अनुकरणीय व्यक्ति तरीके प्रशंसायेल छे; आजे पण प्रशंसा पामे छे. आथी एना प्रत्येक कार्यमां लावण्यसमयने अद्‌भुतता जोवा मळे अथवा आ इष्ट व्यक्ति विशे एवां एनां कार्योनो उल्लेख थाय जेनाथी जैन धर्मनी प्रतिष्ठा वधे, ए आ चरितना आलेखन पाछळनी कविनी दृष्टि छे....आथी 'विमलप्रबंध'ना सुदीर्घ विस्तारमां कथाओ, वर्णनो, धार्मिक उत्सवो, लांबा उपदेशो वगेरे विशेषपणे जोवा मळे छे—इतिहासतत्त्व ओछुं."[४७]

आ रीते जैन धर्मनो प्रताप वधारवानो कविनो उद्देश होई, आ प्रबंध सांप्रदायिकताथी रंगायेलो छे. एम छतां तक मळतां कविए एमां अढार वर्ण, विद्याभ्यासनी पद्धति, सामुद्रिक लक्षणो, लग्नना रीतरिवाज, भोजन, कलियुगनां लक्षणो, अस्त्रशस्त्र, अश्वप्रकार, स्त्रीनी चोसठ कला, शुकन—अपशुकन, नगररचना, रागरागणी, जुदा जुदा देश, भाषाना भेद इत्यादि विशे सारी माहिती पीरसी छे. तत्कालीन समाजजीवनना अध्ययन माटे ए उपयोगी सामग्री पूरी पाडे छे, पण एनुं य प्रमाण एटलुं मोटुं छे के तेथी वस्तुनो प्रवाह शिथिल लागे छे अने रसक्षति थाय छे. तेथी ज तो

४७. 'विमलप्रबन्ध—एक अध्ययन'—डॉ. धीरजलाल ध. शाह

आपणा एक सुप्रसिद्ध विवेचके कह्युं छे: "इतिहास अने कविता लेखे आ प्रबंधनुं मूल्य एटलुं नथी, जेटलुं ए युगनी समाजस्थिति अने लोकाचार पर परोक्ष प्रकाश पाडनार कृति तरीके छे." [४८]

आम छतां गुणपक्षे आ कृतिमां घणुं छे. लावण्यसमयनी आवी शक्तिमां एमनी वर्णनशक्ति खास ध्यान खेंचे छे. श्री. कनैयालाल मुनशी आ शक्तिने बिरदावतां कहे छे: "कविनी वर्णन करवानी शक्ति ऊंचा प्रकारनी छे. वर्णननो विषय गमे तेटलो शुष्क होय पण ए एवी छटाथी वर्णन करे छे के वांचवानुं अधूरुं मूकीने ऊठवानुं मन न थाय." [४९]

विमलना जन्म वखते कलियुग हतो. कलियुगनां माणसोनां स्वभावचित्रो कवि सरस आलेखे छे. उच्छृंखल स्त्री एना पतिने कहे छे:

'छोरू घरि कूंआरा सात, कहिनु तात नि कहिनी मात,
रलइ तूंह निते घर भरइ, ते खाइ सहू ठालं करइ. १०
आपण बे जण केरु वहु, मांनु बोल अम्हारु खरु,
मायबापथी थाउ जूआ, धन मेलीनि भरीइ कूआ. ११
रातिदिवस रलशूं घर भणी, किशी वात मावित्रह तणी,
राछपीछ मझ पीहर तणां, आणा घर भरेशूं घणां.' १२
(खंड ३)

वहुनुं मानीने छोकरो जुदो रहे छे. मावाप विचारे छे:

'जोज्यो कलयुग करणी इशां, मायबापि दुष सहीआं किशां. १६
देवदेवाडे मांन्या भोग, मायताय मिलया संयोग. १७
दस मसवाडा दोहिलु धरिउ, जणिउ पुत्र नि पोढउ करिउ. १८
मायतात तव हरषिइं भरियां, धन वेची घर ठालां करियां,
जोज्यो ते वेटानां हेज, मायबाप विहु अलगी शेज. २१
वेटानां धोयां मलमूत्र, जांणिउं राषेशि घरसूत्र, २२
मस्तकि टोपी मदफूवणी, करि कडली ते फइअर तणी. २३

४८. 'गुजराती साहित्य' (भाग पहेलो)–श्री. अनन्तराय म. रावळ
४९. 'नरसिंहयुगना कविओ.'

मोटां मादलीआं वांकडी, माय तणि मांनि मोजडी,
अलजइआं आण्यां अंगलां, काने कनक तणां वेटलां. २४

पाये घूघरडी घमघमइ, बाळअडु ते अंगणि रमइ,
साहामूं जोइ करती कांम, माडी हैअडि धरती हांम. २५

करइ कांम हालरडां गाइ, माता हैअडि हर्ष न माइ,
पोढउ थातु पगलां भरइ, पंच वरस जव वुल्यां परइ.' २५

(खंड ३)

पछी एने भणाव्यो, परणाव्यो, त्यारे छेवटे

'आज अम्हारू वडपण इशूं, बेटइ ए ते वोलिउं किशउ,
बलतइ बोलइ साहामु धशउ, ॰ बेटउ अनेपिइं वशउं. ४१
वहूअरना तव माग्या पडचा, मनवंछित मनोरथ फल्या. ४२

(खंड ३)

आवां प्रसंगचित्र अने स्वभावचित्र साथे कवि कलियुगनी लोकस्थितिनां चित्रो पण वेगथी सर्जे छे :

'जोउ कलियुग केरु अपाय, लोभिइ वाधइ रंकह राय. ७७
यौवन माटइ मोडइ अंग, परनारीशूं झाझा रंग,
घरघरणीशूं नावि घाटि, करइ वेठि नर फोकट माटि. ७८

मनि मिल नितु करइ सनांन, वधइ जीव नि आपि दांन,
धन ऊधारि करणि करइ, विण आलइ रणिउ थै मरइ. ७९

जे जाणइ जे माहारु मित्र. जाते दिनि ते थाइ शत्र. ८१

वसुधां हशि घणा विषवाद, सागर मेल्हेशि मर्याद. ८३
को कहिनइ नवि मांनइ गणइ, सहू चालइ छंदिइ आपणइ. ८५

विनय गयु वाधिउं अभिमांन, लखपरिं लोभिइं मांडइ कांन. ८६
हाट घाट ते मांड्यां जाल, करइ कूड ते नान्हां बाल,
मोटां नगर गयां ते घठी, रा लोभी कर मागइ हठी.' ८७

(खंड ३)

लग्नोत्सुक श्रीदेवीनुं कर्णमधुर शब्दोमां करवामां आवेलुं वर्णन पण नोंधपात्र छे :

'कूंअरि अंग करइ मांजगउं, सिंगारी सोहावी घणूं,
पहिलं आंज्यां आछां नेत्र, पटउलं पहिरइ पानेत्र. ८५
लंब वीणि लहकि गोफिणउ, रूअडू रंग रापडी तणउ,
मने रंगिइं माता पूरिउ, शरि सहिथउ ते सिंदूरिउ. ८६
नीलवटि टीली ग्युतपति घणी, झालि झबूकि सोना तणी,
मादलीयां वलीयां वेढलां, कंचू कसण कसि ते भलां. ८७
करि चूडी कंकण खलकती, शरि बावनचन्दन बहिकती,
रिमिझिमि पयल करि झांझरां, जांणे मयण तणां पांजरां. ८८
मुष जोइ आरिसा मांहि, वींजणडे वीजावि वाइ,
सहीयर सहीयर सरसी मिलइ, टोलइ टोडर घालि गलइ. ८९
उढी घूघरीआली घाट, वेगि' जोइ वरनी वाट.' ९०

(खंड ४)

नगरठट्टाना राजा सामे विमले करेला युद्धनुं जुस्सादार ने झडझमकथी भरपूर भाषामां करेलुं वेगभर्युं वर्णन आ बधां वर्णनोमां जुदी ज भात पाडे छे :

' झूझाला झूझइ वीर वडा, रणि रोसि भर्या भय भीम भडा. ४४
नव खंड अखंड ति षंड करइ, भड पेले षांडे षंति धरइ. ४६
घण गोला गोफिणि फार फिरइ, रणसागरि रूंध्या वीर तरइ,
सिरि वाजि गुरज ते सुरज समी, पल खूंटते खूंट ते जाइ नमी. ४७
मदभींभल गज गर्जित भमइ, असवार रसि समरि रमइ,
दंतूसलि मूंसलि सूंढि मुडइ, भड चंप्या कंप्या पुहवि पडइ. ४९
तप तपता तपता प्रगट पडच्या, करि काती राती के विकटा,
भडतां भडतां लटकंति ढल्या, जण जांणे झूंबि वृक्ष वटा. ५०
घण घूम्या दूम्या घाय वडि, भयभीता जीता रानि रडइ,
गयणे उडंती अंगि अडि, समली जमली जम लीजत पडइ. ५१
सुर किंनर कोटी लोक लषा, रण जोई होइ पंच पषा,
कट कट्टरि कट्ट विकट्ट कटा, गढ कूटी कीधा लोटवटा. ५२
हय वाल्या ढाल्या वीर तपइ, रणझालि फालि टोप टपइ,
दवि पक्खर पक्खर पंष षिरइ, तिम सक्खर सक्खर लक्ख वरइ. ५३

हंव हव हव हवडी हाक पडइ, झव झव झव वीज षडग्ग विढइ,
धव धव धव धींगड धीर धसइ, कमकमता कायर षेटि षिसइ. ५४
रण रण रणकाहल रणकी चलइ, डम डम डम डमरू डमकी चलइ,
ढम ढ़म ढम ढोल ढमक्की चलइ, चम चम चम चंग चमक्की चलइ. ५५
भड भीषण रीषण रूपि थया, बालापण आपणा आज भया,
जण धूजी मूंजी मांहि मिल्या, धरणीधर धोरी धुरि ढल्या. ५६
भड उट्ठी अंगोअंगि इशु, तड तड तड त्रूटइ कसण कसु,
सीह अग्गलि जंबूक जीव यशु, विमलग्गलि पंडीउ राउ तिशु. ५७
तर तर तरडी दृष्टि करी, मुहि मरडी मांणइ मूछि भरी,
कड कड कड करडी दंतकुली, भड धायु पंडी पुट्ठि वली. ५८
रणघंघल मंगल तूर रवा, नफ्फेरी भेरी नाद नवा,
जगि विमलमंत्रि जयलच्छि वरइ, वंदीजन जयजयकार करइ.' ६१
(खंड ८)

आ दरेक स्थाने कवि छन्द उपर प्रभुत्व दर्शावे छे. सर्वत्र योग्य शब्द कृत्रिमता वगर पद्यमां गोठवाई जाय छे. प्रसंगोपात्त भाषामां माधुर्य अने ओजस सर्जाय छे.

झडझमक उपरांत अलंकारोनो पण बहोळो उपयोग कवि करे छे. एने लीधे यादी जेवां वर्णनो रसिक थई पडे छे. ए रीते कन्या श्रीदेवीनां सामुद्रिक लक्षणोनुं वर्णन जोवा जेवुं छे :

'चंदवदनि चंपक वर्नी, निर्मल हृदय विशाल,
रामा राता अधर जस, संपत्ति सुख्ख रसाल. ३
मृगनयणी मृगकंधरी, मृगपेटी सुकुमाल,
हंसगमणि सा सुन्दरी, भूपतिनि घरि भालि. ७
कृष्ण सरीखी सांमली, गोरी चंपक वांनि,
अंग वदन कर कोमलां, झीलइ रंग निधांन. १०
कनक कमल पहि पिंगली, देहकंति झलकंति,
मणिमांणिकसोवन तणां घर आभरण लहंति. ११
सत्थल कदलीथंभ जस, करचरणे नहीं रोम,
विपुल गुह्य मणि गूढ जस नीलवंटि लद्धउ सोम.' १५
(खंड ५)

रोसनगर पर विमले चडाई करी ते वखते एनी सेनाना हाथीओनुं वर्णन पण आ प्रकारनुं छे :

' अंगि रंगि रूडा चित्रांम, के मयगल जयमंगल नाम,
फूंकफोड के सांकलत्रोड, के विषछोड महामदमोड. ४८
पर्वतढोल धरणिधंधोल, परदलबोल कि विरीरोल,
एकताल के दुर्जनसाल, के विषकाल चमरखंबाल. ४९
गढगंजण भंजण वड ठांम, सिंघलीयाला साचा नाम,
वाट मयगल मदकल्लोल, चिहु पाशे चालि चकडोल.' ५०
(खंड ७)

क्यारेक तो वर्णनने तादृश बनाववा कवि उपराउपरी अलंकारो प्रयोजे छे. भीमदेवनी सभानुं वर्णन एनुं सुन्दर उदाहरण छे :

' तां चंदा नि तां चांद्रिणी, दीपइ दीप–झलामल घणी,
तारा तेज तणां तां पूर, जं नवि ऊगइ अम्बरि सूर, ४१
सोहि सभा मद्धि सुरि घणी, विसहर विकट शेष जिम फणी,
तरुअरि कल्पवृक्ष ज्यम सीम, मणिमांहिइं चिंतामणि जिम, ४२
भूपति मांहि रह्या ज्यम रांम, रूपवंत शरि सोहि कांम,
दातारिइं अवतरिउ कर्ण, उपइ सकल सभा आभर्ण; ४३
साहसि सूरु विक्रम वीर, मेरु सरीषु महीअलि धीर,
न खमि तेज भीम ते भयु, मझ मत्था ऊपहरु थयु. ४४
सभा सरोवर सोहइ कमल, भीम हशी बोलावि विमल.' ४५
(खंड ६)

कविना मोटा भागना अलंकारो रूढ छे, छतां एमां कोई कोई वार मौलिकता अने प्रतिभाना चमकारा देखाय छे. उ. त., भीमदेवे विमलती समृद्धि जोइ त्यारे

' जव दीठउं घरनूं वारणउं, स्वर्गविमांन करिउं पारणउं.' (६–४९)

श्रीदेवीना झांझर माटेनी उत्प्रेक्षा पण चमकृतिभरी छे :

' रिमिझिमि पयल करि झांझरां, जांणे मयणतणां पांजरां.' (५–८८)

भीमनी सभामां बेठेला विमल माटेनी उपमा पण मनोहर छे :

'सभासरोवर सोहइ कमल, भीम हशी बोलावि विमल.' (६–४५)

आ दीर्घ काव्यमां कवि प्रसंगवशात् अर्थान्तरन्यास–सामान्य विधान अने कहेवतो पण प्रयोजे छे. उ. त.,

अर्थान्तरन्यासः—

'रहि रानि मृगला तृण चरइ, माछी नीर विणासि करि,
सज्जन सुखिइं रहि घर मांहि, त्रिहु निकारणि विरी थाइ.' (६–३५)

'धन विण माणसनु मद टलइ, धन विण मोटाइ सवि गलइ,
धन विण कोइ न मांनि बोल, धन विण थाशि रंक निरोल,
धन लीधूं तु लीधा प्राण, नीर वीइणउं जसूं निवांण.' (खंड ७)

कहेवतोः—

बाइनां फूल वाइनइ चडइ. (१–८८)
मागण मरण समाणउ जोइ. (२–९)
अणतेडिउ जे परघरि जाइ,
मान महुत नवि पामइ राय. (२–११)
गाजवीज घण थोडा मेह. (३–६३)
गुलइ मरइ जे मानवी, तेह विस दीजइ कीम. (६–३६)

आमांनी केटलीक कहेवतो अत्यारे पण प्रचलित छे.

आ वधी वस्तुओने परिणामे डॉ. धीरजलाल शाहे कह्युं छे तेम, काव्यनो विशाळ पट अनेक चांदरणांथी आकाश दीपी ऊठे तेम दोपी ऊठे छे.[५०] लांवी मुसाफरी पण मार्गमां आवती अनेक हरियाळीओथी आनन्दजनक थई पडे छे, तेम आ वधां तत्त्वोने लीधे आ सुदीर्घ कृति रसिक नीवडे छे. 'विमलप्रबन्ध' रचाया पछी दश वर्षे, वि. सं. १५७८ मां सामा पक्षना गच्छपति सौभाग्यनन्दीसूरिए एनुं संस्कृतमां भाषान्तर कर्युं हतुं अने कविना काळ पछी ७०–८० वर्षे कोई गृहस्थे एनी संख्याबन्ध नकलो करावी ए वखतना बधा भंडारोमां मोकली आपी हती, ए हकीकत आ कृतिनो प्रभाव ए जमानामां केटलो बधो हतो एनो पुरावो छे.

१२. करसंवाद

जैनोना प्रथम तीर्थङ्कर ऋषभदेव वरसी तपना पारणे श्रेयांसकुमारने त्यां पधारे छे. श्रेयांसकुमार पोते ऋषभदेवने वहोरावे छे. आ प्रसंगे श्रेयांसकुमारना जमणा अने डाबा हाथ वच्चे थतो कल्पित विवाद आ कृतिमां आपवामां आव्यो छे. बन्ने हाथ पोतपोतानी महत्ता बतावबा दलीलो करे छे.[५१]

---

५०. 'विमल प्रबन्ध–एक अध्ययन'

५१. ला. द. भा. सं. विद्यामन्दिर–ह. प्र. नं. ६१४७. आ काव्य हजु अप्रसिद्ध छे.

जमणो हाथ कहे छे के जोशी मारामां पडेली रेखाओ जोईने विद्या, धन अने आयुष्यनुं प्रमाण कहे छे. त्यारे डावो हाथ कहे छे :

> ‘ कहइ डावु, जोसी सवि लहइ, ते लक्षण अपलक्षण कहइ,
> आप वषाणइ ऊछांछलु, ते माणस नही भारझलु’. ३९

आगळ जतां जमणो हाथ दलील करे छे :

> ‘ दक्षण मारगि विसइ पंति, दक्षण कर प्रीसइ एकंति,
> दक्षण कर सवि लहइ दक्षणा, कहइ दक्षण कर अम्ह गुण घणा.’ ४०

त्यारे डावो हाथ जवाब आपे छे :

> ‘दक्षण दिसिथी डावु मेर, दक्षण डावी वाजइ भेर,
> दक्षण डावी पांति इ रहइ, कहइ डावु, पराभव कां सहइ.’ ४१

आ रीते बन्ने हाथ केटला उपयोगी छे ए दर्शाववामां आव्युं छे. एमां कविना विनोद अने चातुर्यनो परिचय मळे छे.

मध्यकालीन गुजराती साहित्यमां आ प्रकारनां केटलांक कल्पित संवादकाव्यो छे तेमां आ काव्य महत्त्वनुं स्थान प्राप्त करे एवुं छे. नयसुन्दरे वि. सं. १६६५ मां अने समयसुन्दरे वि. सं. १६७३ मां ‘नलदवदन्ती रास’ लखेल छे तेमां दवदन्तीनो त्याग करतां वखते नळ वस्त्र चीरवानो विचार करे छे त्यारे एवुं पापकर्म न करवा माटे एना डाबा अने जमणा हाथ वच्चे संवाद योजवामां आव्यो छे, एनी पण ए याद आपी जाय छे.

२९ कडीनुं आ काव्य शांतिज(सातो)नगरमां वि. सं. १५७५मां रचायुं छे :

> ‘ जिहां पोढां जिणहर पोसाल, वसइ लोक दीपता दयाल,
> शांतिज(सातो)नगर मंडि सुविशाल, गायु करसंवाद रसाल. ६८
> संवत पनर पंचहुत्तरइ, मुनि लावण्यसमय उच्चरइ.’[५२] ६९

१३. अन्तरीक पार्श्वनाथ छन्द

चोपन कडीनुं आ सांप्रदायिक काव्य वि. सं. १५८५ के ८६ मां रचायुं छे :

> ‘ संवत पनर पंच्यासीया (पाठा. छयासीउ) वषांण,
> सुदि वैसाप नणो दिन जाण,
> उन्दट आगासीज थयो, गायो पास जिणेसर जयो.’[५३] ५३

---

५२. जैन गूर्जर कविओ–भा. १, ला. द. भा. सं. विद्यामन्दिर– ह. प्र. नं. ६१४७

५३. जैन गूर्जर कविओ–भाग १

कोई हस्तप्रतमां रचनासमय वि. सं. १५५० पण मळे छे :

'पन्नर पचासें वरष प्रमांण, सूद वैसाष तणो दिनमांन,
जांणि उलट आषात्रिज गयो, गायो पास जिनेश्वर जयो.'[५४] ५०

लंकानो राजा खरदूषण एक वार देरासर जवानुं भूली गयो, तेथी एने कोढ थयो, एनुं वर्णन एमां करवामां आव्युं छे. काव्य सामान्य प्रकारनुं छे.

१४. सूर्यदीप–वाद छंद

सूर्य अने दीपक पोतपोतानी महत्ता दर्शाववा विवाद करे छे ए छप्पय छन्दनी त्रीस कडीओनी आ नानी कृतिमां कविए सुन्दर रीते रजू करेल छे. एमां बन्नेनुं महत्त्व दर्शाववामां आव्यु छे :

'प्रहि ऊगमि अवतार, दीप दिनकरण भणिज्जइ,
जेह–सिउं जेहवां काम, ताम लोके बहु किज्जइ;
दीपक देइ साखि, देव देहरासरि नमीइ,
भोजन कूर कपूर, भाण–अजूआलइ जिमीइ.
लावण्यसमय कहइ भाव सुणि, जउ रहिउ तु राखु किमइ;
तप तपइ तेज दीपक तणुं, जो जाइ सूर संध्या–समइ. ११
रयणी–दीपक चंद, दिवस–दीपक जो दिणयर,
कामिणी–दीपक कंत, देस–दीपक राजेश्वर.
त्रिभुवन–दीपक दान, ज्ञान–दीपक गुरु भणीइ,
वंश–दीपक सुपुत्त, विनय–दीपक सुणीइ.
दीपक दिनकर देखि करि, अणप्रीछिइ कां तडफडु ?
लावण्यसमय कहइ, सूरथी जो दीपक--गुण दीपइ वडु.'[५५] २२

काव्यमां कविनी विनोदशक्ति झळकी ऊठे छे. उपदेशनुं तत्त्व पण एमां गूंथायेलु छे. कविनुं छन्दप्रभुत्व पणे एमां देखाई आवे छे.

आ कृति हजु अप्रसिद्ध छे. एनो रचनासमय मळतो नथी.[५६]

१५. देवराज–वच्छराज रास

आ रासनी रचना कतपुरमां थयेली छे,[५७] अने वि. सं. १५७२मां ए लखायो होवानो संभव छे :

---

५४. ला. द. भा सं. विद्यामंदिर–ह. प्र. नं. ७१५५

५५–५६ गुजराती साहित्यनां स्वरूपो–डॉ. मंजुलाल र. मजमूदार

५७ जैन गूर्जर कविओ–भाग १. आ रास 'आनन्दकाव्यमहोदधि मौक्तिक ३ (सं. जीवणचन्द साकरचन्द झवेरी, ई. स. १९१४)मा प्रगट थयेलो छे;

'पहेलो अक्षर लाभनो ए, मा० बीजो भवनो जाणी,
त्रीजो पुण्यवन्त वीजलु ए, मा० आगलि समय ठवेइ.'

सिंधु देशना चंद्रावतीनगरीना वीरसेन राजा अने एनी राणी धारिणीना बे पुत्रो देवराज अने वच्छराजमांथी मोटो पुत्र देवराज पिताना मृत्यु पछी गादीए आवतां नाना भाई वच्छराजने मारी नाखवानुं कावतरुं करे छे. ए जाणतां ज वच्छराज माता अने बहेननी साथे नासी छूटे छे अने माळवामां उज्जेणीनगरीमां सोमदत्त वणिकने त्यां रही, अद्भुत पराक्रमो करी श्रीदत्ता, रत्नावती अने कनकवती ए त्रण राजकुंवरीओने परणी, मोटा भाईने युद्धमां हरावी सिंधुदेशनुं राज्य मेळवे छे एनुं एमां छ खंडमां अने चोपाई, दुहा, गाथा तेमज वस्तु छन्दमां अने पवाडानी देशीमां विस्तारथी वर्णन करवामां आव्युं छे.

रासमां कविए प्रसंगोपात्त शृङ्गार, वीर अने अद्भुत रस जमाव्यो छे अने तक मळतां समाजचित्रो आलेख्यां छे. ए रीते खंड पहेलानुं ज्ञातिओनुं तथा खंड चोथानुं भोजनसामग्रीनुं वर्णन तत्कालीन समाजजीवन पर प्रकाश पाडे एवुं छे.

कविनी दृष्टांतकला अने समान्य विधानो योजवानी शक्तिनो पण आ रास वांचतां वारंवार परिचय थाय छे. वीरसेन राजा अने धारिणीदेवीनी प्रीतिनुं वर्णन करतां कवि कहे छे :

'जिसी प्रीति गौरी ने शंभु, जिसी प्रीति माछलडी–अंबु,
जिसी प्रीति मधुकर–केतकी, जिसी प्रीति गयवर–सल्लकी,
जिसी प्रीति इंद्राणी–इंद्र, जिसी प्रीति कमलिनी–दिणंद.
जिसी प्रीति चंदा–चांद्रणी, तिसी प्रीति राजा–धारणी.' (खंड १)

वच्छराजना गुणोनुं वर्णन करती वखते पण कवि आ ज कला अजमावे छे :

'गुणे करीने अति अभिराम, लहुओ वच्छराज तस नाम;
राजा पदवी एहने होय, मनह मनोरथ पूजे तो य.
लहुअ लगे वछराज विनीत, चतुर तणां चमकावे चित्त;
अवगुण अंग थीको परिहरे, लहुअ लगे लक्षण आदरे
लहुओ रवि सोहे अतिघणो, दश दिशि तेज तपे जेह तणो;
लहुओ मृगपति मयगल भिडे, लहुअ दीप तिमरनें नडे;

लहुअ चंपक परिमल आवास, लहु चिंतामणि पूरे आश;
लहुओ पण पोते गुण बहु, एह राजे हुए सुखीआं सहु.' (खंड १)

वच्छराज उजेणीमां सोमदत्त वणिकनुं घर भाडे लई रहे छे त्यारे कवि कर्मनी गहनता आ रीते रजू करे छे :

'सोमदत्त-घर इण परे रह्यां, करम—वसे दुखियारां थयां;
करम करे ते न करे कोय, राज करे ते रळता जोय.
आगे करमें घणा रोळव्या, नंदिषेण सरखा भोळव्या;
करमें रावण पडीओ चूक, सीताहरण रण कीधो भूक.
कीचक पडीआ पंडव पास, पंडव पंच गया वनवास;
करम तणी शी कीजे वात, रविरथ हयवर सरज्या सात.
करमें पेख कलंकित चंद, मरण लहे भालडी मुकुंद;
करमविपाक कीसुं हुं भणुं, नळ रांधे पर घर रांधणुं.
करमें कदरथी चंदन बाल, नरग गयो श्रेणिक भूपाल;
करमें बलि घाल्यो पाताल, दुःख सह्यां तिम गय सुकुमाळ.' (खंड २)

कविनां आ दृष्टांतो एमना पौराणिक ज्ञाननी साक्षी पूरे छे.

देवराज अने वच्छराज वच्चे थयेला युद्धनुं जुस्सादार भाषामां आवेलुं वेगभर्युं वर्णन कविनी वर्णनशक्तिनो सारो नमूनो छे :

'बिहु दळ घाव वण्या नीसाणे, ने रण वागां तूर;
कोह करंता वे दळ झूझे, शूरमें चढिया शूर.
घोडे घोडा रथ रथीआ—शुं, गयवर गयवर साथि;
खडगयधर खडगयधर साथि, पायक पायक साथि.
हाकबूक मुख अहनिश जंपे, मेहेले खडगप्रहार:
वीर वडा झूझंता देखी कायर छंडे थहार.
बिहुं दळें भाट सरंगमि चडिय बोले बहुविध छंद;
श्वास दूहवीता गयंवर अतिहिं करे आक्रंद.
रयण दीसनी विगती न लाभे, आप—पर नवि सूझे;
रोसे चडद्या रण राउत केरा मस्तक विण धड झूझे.
तव वछराज मूके सिंहनाद, सुहड छंडाव्या छीक;
महवडी पेसी सडसड सूडे, वहे रुधिरनी नीक.

मोडोधा मंकड जिम खेले, रडवडिया रेवंत;
मंडलिक मान मूकाव्या, कियो परदळनो अन्त.' (खंड ६)

आ लोककथानक विशे मध्यकाळमां आपणे त्यां घणां काव्य लखायां छे, तेमां आ काव्य एना सांप्रदायिक रंगोने लीधे विशिष्ट स्थान धरावे छे.

१६. सुमतिसाधुसूरि विवाहलो

लावण्यसमय पोतानी कृतिओमां पोताना गुरु तरीके जेमनो वारंवार उल्लेख करे छे ते सुमतिसाधुनी दीक्षानो प्रसंग ९२ कडीना आ काव्यमां 'विवाहला'-ना जेटला उमंगथी अने गौरवथी वर्णववामां आव्यो छे. शब्दलालित्य अने प्रवाही छन्दने कारणे ए चित्तने प्रसन्न करी जाय एवो छे. दीक्षाना वरघोडानुं वर्णन तादृश छे :

'चउरी गूडर ताडिआ ए, तलिया तोरण चंग तु,
माहाजन सहू जीमाडीइ ए, मंदरि मोटउ जंग तु.
कुंवर हिव सिणगारीइ ए, मस्तकि भरीउ खूंप तु,
बांहे सोवन–बहिरखा ए, दीसइ रूअलडउं रूप तु.
कडिं नवरंग पछेवडउ ए, ओढणि आछउं चीर तु,
सार तुरंगम आणिउ ए, चडिउ बावनवीर तु.
कामिणि मुखि मंगल भणइं ए, भट्ट भणइ बहु छंद तु.
लूण उतारइं बहिनडी ए, कुंअर अति आणंद तु.
वर पोसालइं आविउ ए, दुरिअ गयां सवि दूरि तु,
श्रीरत्नशेखरसूरि वंदिआ ए, मनह मनोरथ पूरि तु.'

एवी ज रीते मात्र थोडी ज लीटीओमां गुर्जर नारीनुं सुरेख चित्र कविए सर्ज्युं छे :

'झालि झबूकइं गालि रे, जाणे ससि नइ सूर रे;
रागवसिइं सेवा करइं ए, अतिघण तेजनउं पूर रे.
मस्तकि सोहइ राखडी, आंखडी अति अणिआली रे,
ओढणि आछी चूनडी, पहिरणि नवरंग फालि रे.
साव सुलक्षण सारिअ, सारिअ काजलरेष रे,
रूपिइं रंभा अवतारिअ, दीसइ रूअडलउ वेस रे.'

आ कृतिनो रचनासमय उपलब्ध नथी.[५८]

५८. आ काव्य 'ऐतिहासिक राससंग्रह भाग १' मां प्रसिद्ध थयेलुं छे.

१७. चतुर्विंशति जिनस्तवन

आ कृति वि. सं. १५८७ पहेलां रचाई होवानो संभव छे, कारण के आ कृतिनी शरूआतमां 'आदिनाथ भास सं. १५८७' एवो उल्लेख छे.[५९]

२८ कडीनी आ कृतिमां प्रथमनी २४ कडीमां जैनोना चोवीस तीर्थंकरोनी, दरेक कडीमां एकेक तीर्थंकरनी, स्तुति छे. एमांनी प्रथम २७ कडीओ मालिनी छन्दनी अने छेल्ली चार लीटीनी कडी हरिगीत छन्दनी छे. कविनुं छन्द प्रभुत्व उच्च कोटिनुं छे.

प्राचीन-मध्यकालीन गुजराती साहित्यमां अक्षरमेळ वृत्तोनो प्रयोग ओछो मळे छे अने अक्षरमेळ वृत्तोमां रचायेली सळंग कृति तो गणीगांठी छे.[६०] ए रीते तेमज तत्कालीन गुजराती भाषाना अभ्यासनी दृष्टिए उपयोगी होवाथी आ आखीये कृति अहीं आपी छे.[६१] वर्णसगाई, अन्तर्यमक तथा प्रासनी योजना, तेमज चार ज लीटीमां दरेक तीर्थंकरनुं व्यक्तित्व सर्जवानी कविनी शक्तिने कारणे पण आ कृति नोंधपात्र छे.

मालिनी छंद

कनकतिलक भाले, हार हीइ निहाले,
ऋषभपय पखाले, पापना पंक टाले.
अरचि नव रसाले फूटडी फूलमाले,
नर भव अजूआले, राग नइं रोग टाले. १

अजित किणि न जीतु, जेहनइं मान वीतु,
अवनिवर वदीतु मानीइ मानवी तु.
लहसि सुख निचीतु, पूजि रे मानवी तु.
जु जिन मनि चींतउ मुकीइ मान–वीतु. २

---

५९. जैन गूर्जर कविओ—भाग ३, खंड १

६०. 'प्राचीन गुजराती साहित्यमां वृत्तरचना'—डॉ. भोगीलाल ज. सांडेसरा (ई. १९४१)

६१. आ कृति 'जैनयुग' पु. १ (पृ. १७८-७९, सं. मोहनलाल दलीचन्द देसाई) मां प्रसिद्ध थई छे. पण ला. द. भा. सं. विद्यामंदिरना ग्रंथभंडारमांथी वधारे शुद्ध अने जूनी हस्तप्रतो नं. ५२५३ (त्रण पत्रनी) अने ४१४३ (बे पत्रनी) मळी होवाथी, ए परथी अहीं एनुं संपादन करवामां आव्युं छे, अने ए हस्तप्रतने अनुक्रमे A अने B संज्ञा आपीने पाठभेद नोंध्या छे. कोई प्रतमां लख्यासंवत नथी पण लिपि (पडीमात्रा अने खडीमात्रा बंनेनो उपयोग एमां थयो छे ए) उपरथी वि. सं. १६०० लगभग ए लखायानो संभव छे. बंनेमां A प्रत वधारे जूनी छे.

१. A रिषभ AB पाय.

२. A कणि. B लहेसि. A मति. B चीतिउ.

समवसरणि बइठा चीत मोरइ पइठा.
असुख अति अरीठा उपड्या ते उवीठा.
सुपरि करि गरीठा सौख्य पाम्यां अनीठा.
भव हूअ मझ मीठा, **संभवस्वामि** दीठा. ३

लहक सिरि धजानु, ज्ञान केरु खजानु,
जिनवर नहीं नाह्नउ, सामि साचउ प्रजानउ,
जस जगि वर-वानउ छइल मांहिं न छानु
सुत समरथ मानउ मात **सिद्धार-पानउ.** ४

विषम विषयगामी केवलज्ञान पामी।
दुरगति दुख दामी जे हुआ सिद्धिगामी,
हृदय धरि न धामी, पूरवइ पुण्यकामी,
सकल **सुमति सामी** सेवीइ सीस नामी. ५

म करि अरथ माहरु, लोभना लोढ वारु;
भविक ! भव म हारु, पिंड पापिइं म भारु.
नरयगति निवारु, चींति चेतेस वारु.
पद्मप्रभ जुहारु; सांभलउ बोल सारु. ६

किय शिवपुर वासो सामि लीलाविलासो,
जय जगतिं **सुपासो**, जेहनइं देव दासो.
दलिअ करमपासो राग नाठउ निरासो,
गुरुअ-गुण निवासो दोष दोषिइं न जासो. ७

मदन-मद नमाया, क्रोध-योधा नमाया,
भवभमर भमाया, रोग-सोगा गमाया,
सकल गुण समाया, लक्ष्मणा जास माया,
प्रणमिसु जिन-पाया चंग **चन्द्रप्रभाया.** ८

---

३. B चीति. A सोख्य. B हूआ.

४. B लहिक A धजा तु. B साचु; प्रजानु. B वरवानु. A माहे. B मानु; सिधारषानु.

५. B हूउ; सिधि.

६. A म्हारु. B चीति; वहारु. A नरयगति वारु. B सांभलु.

७ A गुरुअ.

८. A नडाया. A भवभरम.

सुविधि सुविधि मांडी, पापनां पूर छांडी,
मयण–मद नमांडी, चीत चोपूं लगाडी,
कुगति मति शमाडी, मुक्तिकन्या रमाडी,
सुणि–न–सुणि नमाडी देषवा ते रुहाडी. ९
कनकवरणि पीला जेणि जीती प्रमीला,
सिरि धरिअ सुशीला, दूरि कीधी कुशीला,
प्रगटित तपशीला, **शीतल स्वामि** शीला,
म करसि अवहीला, जेहनी लील लीला. १०
भविक नर ! भणीजइ, सिउं भमु माग बीजइ ?
अहनिशि समरीजइ, सेव **श्रेयांस** कीजइ,
विविध सुख वरीजइ, पुण्यपीयूष पीजइ,
अनुदिन प्रणमीजइ, लाछिनु लाह लीजइ. ११
जस मुख–अरविंदो ऊगीउ कइ दिणंदो,
किरि अभिनव चंदो पुन्निमानउ अमंदो,
नयण अमिअबिंदो जासु सेवइं सुरिंदो,
पय नमिअ नरिंदो **वासुपुज्जो** जिणंदो. १२
असुख–सुख हणेवा, सौख्यनां लक्ष लेवा,
भवजलधि तरेवा, पुण्य पोतूं भरेवा,
मुगति–वहू वरेवा, दुर्गतिइं दाह देवा,
विमल विमल सेवा चित्त चीतिइ करेवा. १३
अकल नवि कलायु, पार केणइ न पायु,
त्रिभुवनि न समायु, जेहनइं ज्ञान मायु,
जस जगि वर जायु, रोगनउ अंत आयु,
हृदयकमलि ध्यायु ते **अनंतु** सुहायु. १४

---

९. A चींत.
१०. A सिरि घरि सुशीला. A करिसि.
११. चोथी लीटी–B तिम तिम यम पीजइ. A लाहु.
१२. A अरवंदो. A करि. B पुन्निमानु; वासुपुज्जे.
१३. A असुख गति. A सोख्यनां लख्य. A चींतइ करेवा.
१४. A कलाव्यु त्रीजी लीटी–A जव जिनवर जायु. B रोगनु.

धरम धरम भाषइ, मुक्तिनउ मार्ग दाषइ,
जगि जिनवर पाषइ पाप जाइ न पाषइ.
वरस दिवस पाषइ जे प्रभो चित्ति राषइ,
पुरुष अणिअ आषइ सौख्य ते चंग चाषइ. १५
मयगल घर वारी नारि सिंगारि भारी,
रयण कनक सारी कोडि केति विचारी,
प्रभु तसु परिहारी ज्ञानचारित्रधारी
त्रिभुवनि जयकारी **सांति** सेवु सधारी. १६
वर कनकि घडाया हार हीरे जडाया,
मुगट सिरि अडाया सूर तेजिइं नडाया,
तिवल तडतडाया पाप पूंठिइं पडाया,
कुसुमचय चडाया **कुंथु** पूजंति राया. १७
करम मरम जाली, पुण्यनी नींक वाली,
रति-अविरति राली, केवलज्ञान पाली,
अखय-सुख रसाली सिधि पामी सुंहाली.
अर अरचि सुमाली आपि रे फूल टाली. १८
सुणि-न सुणि-न हल्ली पुण्यनिइं पूरि घल्ली,
घर तरुअर-वल्ली पुत्तपुत्तेहिं भल्ली,
नितु नवल-नवल्ली भूरि भोगेहिं फुल्ली,
प्रणमइ **जिण-मल्ली,** तासु कल्लाणवल्ली. १९
विगत-कलि-कुरंगा पामीआ पुण्य तुंगा,
नचिलि गविल जंगा दूष दोषा दुरंगा,
जव हूअ जिन संगा **सुव्रतस्वामि** चंगा,
किरि तरल-तरंगा आलसू मांहिं गंगा. २०

१५. B मुक्तिनु. A सोख्य.
१६. A श्रंगारि. B संति. A सेवु जुहारी.
१७. B कनक. A मुकुट; तेजेइं; तिविल.
१८. A करमरम.
१९. B सुणि न थल्ली. A जिन.
२०. A विगतिकलिकुरंगा. B नवल गिवल जंगा. A दोखया. B हूआ. A माहि.

नमि नरय निवारइ, मान–माया विडारइ,
भवजलधि अपारइ हेलि हेलां ऊतारइ,
भगत–जन सधारइ, लोभ नाणइ लगारइ,
जिन जुगति जुहारइ, ते सवे काज सारइ. २१

कुगति कुमति छोडी, पापनी पालि फोडी,
टलिअ सयल षोडी, मोहनी वेलि मोडी,
जिणि शिववहु लोडी, को नही **नेमि** जोडी,
प्रणमइ लक्ष कोडी नाथ वि हाथ जोडी. २२

जल जलण वियोगा, नाग संग्राम सोगा,
हरि मयगल मोगा, वात चोरारि रोगा,
सवि भयहर लोगा, पामीआं **पास** जोगा,
नर नही कहि जोगा, पूजतां भूरि भोगा. २३

कठिन करम मेल्ही काठीआ तेर ठेली,
विमल विनयवेली भावि भोलइ गहेली,
निखुणि हरषि हेली, भेटि पामी दुहेली,
सविसविहूं पहेली **वीर** वंदू वहेली. २४

दुरित दल दुकाला, पुण्य पाणी सुगाला,
जसु गुणवर वाला रंगि गाइ रसाला,
भविक नर त्रिकाला, भावि वंदुं मयाला
जय जिनवर माला, नामि लच्छी विशाला. २५

अमिअरस समाणी देवदेवे वषाणी,
वयणरयणखाणी, पापवल्ली-कृपाणी,
सुणि-न सुणि-न, प्राणी ! पुण्यची पट्टराणी
जगि जिनवर-वाणी सेवीइ सार जाणी. २६

रिमिझिमि झमकारा नेउरीचा उदारा,
कटि-तटि षलकारा मेषलीचा अपारा,

---

२२. A प्रणमइ सुर कोडी; बे.
२४. B मेहली. A भोरइ गहेली.
२५. A जस गुणवर; लछी.

कमलि-रमलि-सारा देह लावण्यधारा,
सरसति जयकारा होउ मे नाणधरा. २७

तपगच्छि दिणयर लब्धिसायर सोमदेवसूरीसरा,
श्रीसोमजय गणधार सेवीय समयरत्न मुणीसरा;
मालिनीछंदिइं झमकबंधिइं स्तव्या जिन ऊलटि घणइ,
मिइं लहिउ लाभ अनंत सुखमय, मुनि लावण्यसमय भणइ. २८

१८. खिमऋषि (बोहा), बलिभद्र–यशोभद्र रास

आ रासनी रचना वि. सं. १५८९मां अमदावादमां बुहादीनपरामां पूर्ण थई छे :[६२]

'संवत पनर नव्यासीइं, माघ मासि रविवारि,
अहिमदावाद विशेपीइं, पुरू बुहादीन मझारि.'

एमां यशोभद्र अने एमना शिष्य खिमऋषि अने बलिभद्र, ए त्रण जैन मुनिओनुं चरित छे. आम तो रास त्रण खण्डमां वहेंचायेलो छे; दुहा अने चोपाई छन्दनी पहेला रासमां २१३, बीजा रासमां १२६ अने त्रीजा रासमां १७३ कडीओ छे; छतां गुरु-शिष्यना संबन्धने कारणे सळङ्गसूत्रता जळवाई रहे छे. खिमऋषिना कठिन अभिग्रहो तथा बलिभद्र अने यशोभद्रसूरिना चमत्कारोनुं एमां विस्तारथी वर्णन करवामां आव्युं छे, जे कंटाळाजनक थई पडे छे, छतां झडझमकभरी शैली अने विषयने विशद बनाववानी कविनी दृष्टांतकलाथी कोई कोई भाग आकर्षक नीवडे छे :

'भमतां चक्र भरइं कुंभार, भमतां भूप भरइं भंडार,
भमतु योगी भिक्षा लहइं, भमती नारी निज कुल दहइं.
+ + +
वृक्ष न लेइ फल तणउ सवाद, वीण अरथि न आवइं नाद;
सूर सदा अजुआलुं करइ, उत्तम पर–उपगारी सिरइं.
नदी न पीइं नीर ल्गार, कूरम कांइ धरइं भुइं भार;
महीअलि मेह सरोवर भरइं, उत्तम पर-उपगारी सिरइं.

---

२७. B रमझम.
२८. A लब्धिसायर. A सेविअ; मुनीसरा. A मलिनी, B मालिनीय A यमकबंधिइ, B तव्या. A मइं. A लावण्यसमय सदा भणइ.
६२. आ कृति 'ऐतिहासिक राससंग्रह भाग २' मां प्रगट थयेली छे.

> पान पदारथनी वेलडी, दूध दहीं दीसइं सेलडी,
> साकर सरस सर सरस झरइं, उत्तम पर-उपगारी सरइं.' (खंड ३)

१९. प्रकीर्ण

आ उपरांत लावण्यसमये केटलीक नानी कृतिओ रची छे, तेमांथी नीचेनी कृतिओ विशे 'ऐतिहासिक राससंग्रह'नी प्रस्तावनामां नोंध छे :

१. गौतमरास, २. गौतमछन्द, ३. जीराउला पार्श्वनाथ विनति, ४. पंचतीर्थस्तवन, ५. राजिमतीगीत, ६. दृढप्रहारीनी सज्झाय, ७. कर्माशाहे करावेला उद्धारनी प्रशस्ति, ८. पंचविषय स्वाध्याय, ९. आठमनी सज्झाय, १०. सात वारनी सज्झाय, ११. पुण्यफलनी सज्झाय, १२. आत्मबोध सज्झाय १३. चौद स्वप्ननी सज्झाय, १४. दाननी सज्झाय, १५. श्रावकविधि सज्झाय, अने १६. ओगणत्रीस भावना.

'जैन गूर्जर कविओ' भाग १मां आ सिवाय बीजी केटलीक कृतिओनी नोंध छे: १. मनमांकड सज्झाय, २. हितशिक्षा सज्झाय, ३. पार्श्वनाथजिनस्तवन प्रभाती, ४. आत्मप्रबोध, ५. नेमराजुल बारमासो, अने ६. वैराग्योपदेश[६३]. ए ज पुस्तकना भाग ३ खंड १मां १. गर्भवेली-(११४ कडी) अने २. गौरीसांवली गीतविवाद ए बे कृतिओनो उल्लेख छे.

आ बधी कृतिओमां कविनो धर्मप्रेम, वैराग्य अने भक्तिभाव जोवा मळे छे.

आ उपरांत कविनां केटलांक गीत अने हरियाळीओ हस्तप्रतोमां मळे छे. कविनी हरियाळीनो नमूनो जोवा जेवो छे :

> 'बीज विण वधइ केलि, केलि नही उजलवन्तउ,
> ऊजलवन्तउं हंस, हंस नही जलि उपन्नउं,
>
> जलि ऊपनउं कमल, कमल नही जलि सीदाइ,
> जलि सीदाइ अग्नि, अग्नि नही सहू को खाइ,
>
> सहू को खाइ अन्न, न फल तसु को कहइ;
> लावण्यसमय मुनिवर भणइ. जाण पुरुष लीलां करइ.'[६४]

---

६३. आ उल्लेखमांनी कृति नं. ४, ५, ६ शा. भीमशी माणेक प्रकाशित 'सज्झायमाला'मां मळे छे.
६४. ला. द. भा. सं. विद्यामन्दिर—ह. प्र. नं. ८४६०

कविनुं जीभलडीनुं गीत प्रीतमदासना ए ज प्रकारना गीतनी याद आपे एवुं छे :

'जीव भणइ, सुणि जीभडली, पापइ पिंड भरावइ;
आपसवारथ आघी थाइ, अम्हचइ काजि न आवइ, भइ.
वापडली रे जीभडली, ढालि पडी तुं एहवइ,
खाटाखारा षटरस सेवइ, अरिहंत नाम न लेवइ, भइ.

ध्यान धरुं जव सामी केरुं, तव तुं सहीअ बोलावइ,
जपमाला कर थिकी पडावइ, मझनइं मांड डोलावइ, भइ.
काया पुर पट्टण, हूं छउं राजा, तुं थापी पटरांणी,
आज लगइ गुरुवचन विहूणी, मइ इसी अभगति जाणी, भइ.

नर बत्रीस रह्या रखवालइ, आगलि पोलि पगारा,
तुहइ नीलजपणउं न छांडइ, बोलइ छंदाचारा, भइ.
तुं बंधावइ, तुं छोडावइ, तुझ जामलि कुण आवइ,
नारि भली जेह ज प्रीअ भगती, घरनू सूत्र चलावइ, भइ.

सावअ–लक्षण वहु गुणवंती, घणउं किस्यउं तुझ कहीइ,
जीव भणइ. सनमारगि चालउ, तिम रूडइ निरवहीइ, भइ.
जीव–सीखामण जिह्वा लागी, जिनगुण गावा लागी,
कहइ लावण्यसमय वइरागी, पापभ्रंति सहू भागी. भइ[६५].

आम लावण्यसमयनुं साहित्यसर्जन ठीक ठीक विपुल छे. छन्द अने भाषा पर एओ घणो काबू धरावे छे. छन्दमां शब्दोने तो एओ धार्या प्रमाणे रमाडे छे ने प्रसंगोपात्त माधुर्य के ओजस प्रयोजे छे. अलंकारो, दृष्टान्तो अने सामान्य विधानोथी कोई पण विषयने तेओ दीप्तिवन्त बनावी मूके छे. एमनुं पांडित्य अने सामाजिक जीवननुं ऊंडुं ज्ञान एमनी कवितामां वारंवार प्रगट थाय छे. कोई पण प्रसंग, पात्र के भावना वर्णनने रसमय बनाववानी कळा एमने सहज छे. ए रीते लावण्यसमय मध्यकाळना प्रतिभाशाळी कवि छे. श्री. कनैयालाल मुनशी कहे छे तेम प्रथम पंक्तिना जैन कविओमां एमनुं स्थान घणुं ऊंचुं छे[६६].

---

६५. ला. द. भा. सं. विद्यामन्दिर–ह. प्र. नं. ५३३ ६४९, १५९५
६६. 'नरसिंहयुगना कविओ.'

नेमिरंगरत्नाकर छन्द

समालोचना

लावण्यसमयरचित 'नेमिरंगरत्नाकर छन्द' मध्यकालीन गुजराती साहित्यमां विशिष्ट स्थान धरावे एवी, अनेक दृष्टिए महत्त्वनी, कृति छे.

१. रचनासमय

सामान्य रीते प्राचीन-मध्यकालीन साहित्यकृतिना अन्ते रचनासंवतनी संख्या आपवामां आवे छे. पण केटलीक वार जेनी संख्या निश्चित होय तेवी वस्तुओनो उल्लेख करी रचनासाल सूचववामां आवे छे. उ. त., जैनकवि जीवणजीए पोतानी चोवीसीने अन्ते तेनी रचनासाल नीचे प्रमाणे जणावी छे :

शशि मुनि शंकर लोचन, परवत वर्ष सोहाया;
भादो मासनी वदि आद्या गुरु, पूर्ण मंगल वरताया रे.

अहीं शशि=१, मुनि=७, शंकरलोचन=३ अने परवत=८ ए प्रमाणे सीधा क्रममां संख्या लेतां चोवीसीनी रचना सं. १७३८मां थयानुं समजाय छे.

केटलीक वार आवी रीते सूचवायेली संख्या ऊलटा क्रममां लेवानी होय छे. उ. त., यशोविजयजीकृत 'जंबूस्वामी रास'मां रचनासाल आ प्रमाणे आपी छे :

नंद तत्त्व मुनि उडुपति संख्या वरस तणी ए धारो जी,
खंभनयर मांहिं रहिअ चोमासुं, रास रच्यो छइ सारो जी.

अहीं नंद=९, तत्त्व=३, मुनि=७ अने उडुपति=१, ए रीते ९३७१नी संख्या आवे छे, पण तेनो स्वीकार थई शके एम नहि होवाथी एने ऊलटा क्रममां लेवी पडे छे अने ए रीते रच्यासमय सं. १७३९ समजाय छे.

लावण्यसमये पण आवी ज युक्तिपूर्वक 'नेमिरंगरत्नाकर छन्द'ना रच्यासमयनो उल्लेख कर्यो छे :

तिथिमान आणी तिणि प्रमाणी, संवत जाणी सुहकरो,
रसवेद वामिइं वरस नामिइं माह मास मनोहरो.

(अधिकार २—कडी १५४)

अहीं रस=६ अने वेद=४, वामिइं एटले डाबी तरफथी—ऊलटा क्रममां. लावण्यसमयनो जन्म वि. सं. १५२१मां थयो हतो अने वि. सं. १५८९मां एमणे

छेल्ली कृति रची हती. ए रीते वि. सं. १५४६मां, कविनी पचीस वर्षनी जुवानवयमां, 'नेमिरंगरत्नाकर छन्द'नी रचना थयेली छे.

२. काव्यस्वरूप

आ काव्यनी केटलीक हस्तप्रतोनी पुष्पिकामां (A B, अने D हस्तप्रतोमां प्रथम अधिकारने अंते अने B हस्तप्रतमां बीजा अधिकारने अंते पण) एने 'छंद' तरीके ओळखावेल छे. आ रीते मध्यकाळमां झडझमकवाळी भाषामां अने एक के जुदा जुदा छन्दमां लखायेल काव्यने 'छन्द'नी संज्ञा आपवामां आवी छे. उ. त., रणमल्ल छन्द, मयण छन्द, गुणरत्नाकर छन्द वगेरे. परन्तु कविए काव्यमां ज स्पष्टपणे एनो 'प्रबन्ध' तरीके पण उल्लेख कर्यो छे, (जुओ प्रथम अधिकारनो आरंभनो श्लोक अने बीजा अधिकारनी कडी १५५).

संस्कृत साहित्यकृतिओमां 'प्रबन्ध'नो अर्थ सुसंकलित, सुव्यवस्थित साहित्य-रचना एटलो ज छे.[1] कालिदासे 'मालविकाग्निमित्र'ना प्रारंभना प्रास्ताविक भागमां 'प्रबन्ध'नो अर्थ 'काव्यनाटकादिक रचना' एवो कर्यो छे.[2] **वासवदत्ताना** प्रणेता सुबन्धुए 'कथात्मक रचना'ने माटे 'प्रबन्ध' शब्दनो प्रयोग कर्यो छे.

विक्रमनी चौदमीथी सोळमी सदीमां संस्कृतमां केटलाक प्रबंधो रचाया छे. तेमांना 'कुमारपालप्रबन्ध' जेवा प्रबंधो पद्यमां, तो मेरुतुंगनो 'प्रबन्धचिन्तामणि' अने राजशेखरनो 'चतुर्विंशतिप्रबन्ध' गद्यमां छे. बल्लालनो 'भोजप्रबन्ध' गद्यपद्यमिश्रित छे. आमांथी केटलाकमां एक ज ऐतिहासिक व्यक्तिनुं चरित्र विगते आलेखवामां आव्युं छे, तो 'प्रबन्धचिन्तामणि' के 'चतुर्विंशतिप्रबन्ध'मां जुदी जुदी ऐतिहासिक व्यक्तिओना प्रसंगो निरूपवामां आव्या छे.

प्राचीन-मध्यकालीन गुजराती साहित्यमां पण केटलाक प्रबंधो रचाया छे. तेमांना पद्मनाभरचित 'कान्हडदे प्रबन्ध' (वि. सं. १५१२) अने लावण्यसमयरचित 'विमलप्रबन्ध' (वि. सं. १५६८) नुं वस्तु चरित्रात्मक अने ऐतिहासिक छे. एमां बीजा रसो साथे मुख्य रस वीर छे. आख्यानमां कडवां पडवामां आवतां तेने बदले तेमां लांबा विभाग के खंड पाडवामां आव्या छे, अने दूहा, चोपाई जेवा मात्रामेळ छन्दोनो मुख्यत्वे उपयोग करवामां आव्यो छे.

---

१. अनुज्झितार्थसंबन्धः प्रबन्धो दुरुदाहरः–शिशुपालवध २-७३

२. प्रथितयशसां भाससोमिल्लकविपुत्रादीनां प्रबन्धानतिक्रम्य वर्तमानकवेः कालिदासस्य क्रियायां कथं परिषदो बहुमानः–मालविकाग्निमित्र, अंक १

आ उपरथी ऐतिहासिक व्यक्तिना चरित्रने निरूपता सुबद्ध, सुदीर्घ अने सळंग वीररसकाव्यने 'प्रबन्ध' तरीके ओळखवामां आवतुं एम लागे छे.[३]

'नेमिरंगरत्नाकर छन्द' मां आपणी दृष्टिए पौराणिक पण जैन धर्मनी दृष्टिए ऐतिहासिक एवो उदात्त प्रसंग आलेखवामां आव्यो छे. जैनोना तीर्थंकर नेमिनाथनुं चरित्र विगते तेमां वर्णववामां आव्युं छे. बीजा रसनी साथे एनो मुख्य रस धर्मवीर छे. एना बे खंडमां बहुधा मात्रामेळ छंदनो उपयोग करवामां आव्यो छे. एनी रचना सळंग, सुसंकलित अने सुव्यवस्थित छे. आ रीते एमां प्रबन्धनां लक्षणो जळवायां छे.

३. पद्यबन्ध

'नेमिरंगरत्नाकर छन्द'मां नीचे प्रमाणे छन्दो वपराया छे.

१. **अनुष्टुप**—पहेला अधिकारना आरम्भना श्लोकमां अने बीजा अधिकारनी १४९ मी कडीमां आ छन्द प्रयोजायो छे. एमां आठ अक्षरनां चार चरणोमांनो पांचमो अक्षर लघु अने छठ्ठो अक्षर गुरु होय छे, तेमज पहेला अने त्रीजा चरणनो सातमो अक्षर गुरु अने बीजा तथा चोथा चरणनो सातमो अक्षर लघु होय छे. दरेक चरणनो आठमो अक्षर गुरु होय छे.

२. **दुहा**—बीजा अधिकारनी कडी १ थी ६, ११ थी १५, २० थी २५, ३० थी ४१, ४५ थी ५० तेमज ६६ अने ६७मां आ छन्द प्रयोजायो छे.

दुहामां पहेला तथा त्रीजा चरणमां १३ तेमज बीजा अने चोथा चरणमां ११ मात्रा, १३ मी मात्रा गुरु अने पंक्तिने अन्ते अनुक्रमे गुरुलघु अक्षर होय छे. कोई वार पंक्तिना छेल्ला अक्षर गुरु पण होय छे. तेनां उदाहरण बीजा अधिकारनी २० मी अने ३३ मी कडीमां मळे छे.

३. **रोळा अने छप्पा**—पहेला अधिकारनी कडी ८८, ८९ अने ९० मळीने छप्पो बने छे. एवी रीते बीजा अधिकारनी कडी ९७ थी १२०—दरेक त्रण कडी मळीने छप्पो बने छे. १६०, १६१ अने १६२ कडीनो पण छप्पो छे.

---

३. प्राचीन-मध्यकालीन गुजराती साहित्यमां साहस अने प्रेमनां कथाकाव्यने पण प्रबन्धनुं नाम आपवामां आव्युं छे. उ. त., भीमनो 'सदयवत्सवीर प्रबन्ध' (वि. सं. १४६६) अने गणपतिनो 'माधवानल-कामकन्दला प्रबन्ध' (वि. सं. १५७४). आ परथी लागे छे के कोई पण प्रकारनी सुदीर्घ अने सुबद्ध रचनाने प्रबन्धनुं नाम आपवामां आवतुं.

बीजी तरफथी नाल्हकविकृत 'विसलदे रासो' (वि. सं. १२७२), अंबदेवसूरिकृत 'समरारासु' (वि. सं. १३७१ पछी) वगेरेनुं वस्तु ऐतिहासिक होवा छतां तेमने 'रास' तरीके ओळखाववामां आवेल छे. आ परथी लागे छे के रास अने प्रबन्धनो भेद बहु कडक नहोतो.

छप्पामां पहेली वे कडी–चार लीटी रोळानी अने छेल्ली वे लीटी उल्लाळा छन्दनी होय छे. रोळानी पंक्तिमां कुल २४ मात्रा अने ११ मी मात्रा पछी यति आवे छे. उल्लाळानी पंक्तिमां कुल २८ मात्रा अने १४मी मात्रा पछी यति आवे छे.

४. **हरिगीत**–बीजा अधिकारनी कडी १५० थी १५९ हरिगीत (हरिगीतिका) छन्दनी छे. एमां दरेक पंक्तिमां २८ मात्रा आवे छे अने छेल्लो अक्षर गुरु होय छे.

५. **आर्या**–पहेला अधिकारनी ५५मी कडी अने बीजा अधिकारनी १४८ मी कडी आर्यानी छे. एमां पहेली लीटीमां ३० अने बीजी लीटीमां २७ मात्रा होय छे. दरेक लीटीमां १२ मात्रा पछी यति आवे छे.

६. **चरणाकुल**–काव्यमां सौथी वधारे उपयोग आ छन्दनो थयो छे. नीचेनी कडीओमां ए प्रयोजायो छे.

पहेला अधिकारनी कडी १, २, ३, ६, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २३, २६, ३७, ३८, ४५, ५१, ५४, ५५, ५६, ५८, ५९, ६०, ६३, ६६, ६९, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ८०, ८१, ८२, ८५

बीजा अधिकारनी कडी ७१, ७२, ७५, ७६, ७७, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८७, ९१, ९३, ९४, १२१, १२२, १२३, १२६, १२७, १२९, १३०, १३१, १३२, १३३, १३४, १३५, १३८, १४१, १४२, १४३, १४४, १४५

चरणाकुळमां दरेक चरणमां सोळ मात्रा अने छेल्ला वे अक्षर गुरु आवे छे. उपरांत १, ५, ९ अने १३ मात्रा उपर ताल आवे छे.

७. **पद्मावती**–आमां दरेक पंक्तिमां ३२ मात्रा तेमज १०, ८ अने १४ मात्रा पछी यति आवे छे. छेल्लो अक्षर गुरु तेमज त्रीजी मात्राए अने पछी दर चार चार मात्राए ताल आवे छे. प्रथम वे यतिखंडो वच्चे प्रास योजवामां आवे छे.[४]

---

४. दश आठे खासा, धरि अनुप्रासा, उपर कळा चौदे आवे,
पद्मावति नामे, छंद सुकामे, गुणवंता कविजन गावे;
लीलावति जेवा, ताळ ज लेवा, कोमळ पद रचशे कविता,
उजळो जश जामे, सघळे ठामे, ते शोभे जेवो सविता.

'दलपत पिंगळ' पृ. २१

नीचेनी कडीओमां आ छन्द प्रयोजायो छे.

पहेला अधिकारनी कडी ४, ५, २१, २२, २४, २५, २७, ३१, ३२, ३५, ३६, ३९, ४०, ४३ अने ४४.

बीजा अधिकारनी कडी ९५, ९६ अने १४६

८. **त्रिभंगी**–आ छन्द पद्मावतीने मळतो छे, पण पद्मावतीथी आगळ जई एमां आठ मात्राए एक यति वधारे होय छे अने एथी थयेला त्रणेय यतिखंडो एक ज प्रासथी सांधेला होय छे.[5]

पहेला अधिकारनी कडी २८ मां अने बीजा अधिकारनी कडी ७३, ७४, ७८, ७९, ८८, ८९, १२४, १२५, १३६, १३७, १३९, १४० अने १४७ मां आ छन्द प्रयोजायो छे.

९. **दुमिल**–आमां दरेक पंक्तिमां ३२ मात्रा, १६ मात्रा पछी यति, अने दरेक चरणनो छेल्लो अक्षर गुरु छे. बब्बे चरणना प्रास मळेला छे. "दलपत पिंगळ'ना दुमिला अने डिंगळना दुमेलने घणे अंशे ए मळतो आवे छे.

पहेला अधिकारनी कडी २९, ३०, ३३, ३४, ४१, ४२, ४८ अने ५७मां तथा बीजा अधिकारनी कडी ८६, ९०, ९२ अने १२८मां ए प्रयोजायो छे.

१०. **मरहट्ठा**–आ छन्द पद्मावतीने बहु ज मळतो छे. फरक एटलो ज छे के पद्मावतीनो अंत्य खंड १४ मात्रानो छे एने बदले आमां अंत्य खंड ११ मात्रानो, दोहराना उत्तर पदनो आवे छे.[6]

पहेला अधिकारनी कडी ७, ८, ४६, ४७, ४९, ५०, ५२, ५३, ६१, ६२, ६४, ६५, ६७, ६८, ७०, ७१, ७८, ७९, ८३, ८४, ८६ अने ८७मां आ छन्द प्रयोजायो छे.

---

५. मात्रा दश आणो, आठ प्रमाणो, वळि वसु जाणो, रस दीजे,
अंते गुरु आवे, सरस सुहावे, भणतां भावे, त्यम कीजे;
लीलावति जेवा, ताळ ज देवा, त्रिभंगि तेवा, छन्द करो,
जति पर अनुप्रासा, धरिये खासा, सरस तमासा, शोधि धरो.

'दलपत पिंगळ', पृ. १९

६. मात्रा दश आठे, धर जति पाठे, उपर कळा अगियार,
मरहट्टा नामे, कविता कामे, छन्द बनावो सार;
छे गुरु लघु छेल्लो, एम ज मेलो, खेलो लावी खांत,
तजि बे चच्चारे, ताळ ज धारे, त्यारे थाय निरांत.

'दलपत पिंगळ'

११. हनुमंत पधडी–दलपतरामे जेने 'पद्धरी' कह्यो छे[७] ते ज आ हनुमंत पधडी छे. एमां दरेक चरणमां १६ मात्रा अने चरणने अन्ते जगण होय छे. दलपतराम प्रमाणे दरेक चरणनी ३, ६, ११ अने १४ मात्रा पर, ज्यारे हेमचन्द्रनी रीते १, ५, ९, १३ मात्रा पर ताल आवे छे.

बीजा अधिकारनी कडी ६८ थी ७०मां आ छंद प्रयोजायो छे.

१२. पधडी–बीजा अधिकारनी ५६थी ६५ कडी आ छन्दनी छे. एमां दरेक चरणमां बार मात्रा छे अने अन्ते गुरुलघु अक्षर छे.

१३. प्रकीर्ण–बीजा अधिकारनी कडी ७, ८, ९, १०, १६, १७, १८, १९, २६, २७, २८, २९, ४२, ४३, ४४, ५१, ५२, ५३ अने ५४ मां कोई देशीनो उपयोग थयेलो छे.

४. कविप्रतिभा

जैनोना बावीसमा तीर्थंकर नेमिनाथना चरित्रे संख्यावंध कविओने आकर्ष्या छे अने तेमणे ए विशे विविध प्रकारनां नानांमोटां काव्यो रच्यां छे. वि. सं. १२८९मां पाल्हण नामना कविए 'आबुरास' के 'नेमिजिननो रास' रच्यो छे. त्यारपछी वि. सं. १५९६मां पुण्यरत्ने 'नेमिरास' रच्यो छे. नेमिनाथविषयक संख्यावंध फागुकाव्यो पण रचायां छे. तेमां राजशेखरसूरिकृत 'नेमिनाथ फागु' (सं. १४०५), जयसिंहसूरिकृत 'नेमिनाथ फागु' (सं. १४२२ आसपास), समुधरकृत 'नेमिनाथ फागु' (सं. १४३७ पूर्वे), जयशेखरसूरिकृत 'नेमिनाथ फागु' (सं. १४५० नजीक), माणिक्यचंद्रसूरिकृत 'नेमि फाग' (सं. १४७८), समरकृत 'नेमिनाथ फागु' (सं. १४९३ पूर्वे), पद्मकृत 'नेमिनाथ फागु' (सं. १४९३ पूर्वे), सोमसुन्दरकृत 'रंगसागर नेमिनाथ फागु' (सं. १४९६ आसपास), धनदेवगणिकृत 'सुरंगाभिध नेमि फाग' (सं. १५०२) अने विनयविजयकृत 'नेमिनाथ भ्रमरगीता' (सं. १७०६) प्रसिद्ध छे. नेमिनाथविषयक बारमासी काव्योमां विनयचन्द्रनी 'नेमिनाथ चतुष्पदिका' (सं. १३०५) समयदृष्टिए प्रथम आवे छे. त्यारबाद सं. १५४९ आसपास काहन कविए, सं. १५८१ पूर्वे चारित्रकलशे, सं. १६६२मां लालविजये, सं. १७०६मां विनयविजये, सं. १७०९ आसपास जयवन्तसूरिए,

---

७. प्रतिचरण सोळ मात्रा प्रमाण, ते चरण अंत जो जगण आण;
त्रण चक्र रुद्र रत्ने ज ताळ, पद्धरी छन्दनो ए ज ढाळ.

'दलपत पिंगळ,' पृ. १४

सं. १७४२मां माणिक्यविजये, सं. १७४४मां नयविजये, सं. १७५५मां विनयचन्द्रे, सं. १७२९ थी १७६२ दरम्यान जिनहर्षे, सं. १७९५मां उदयरत्ने, सं. १७९५मां देवविजये, सं. १८४५मां महानन्दे—एम केटलाय कविओए आ विषयनां बारमासीकाव्यो रच्यां छे. आ उपरांत सं. १५२४मां मतिशेखरे 'नेमिनाथ वसन्तफूलडां', सं. १५६२मां लावण्यसमये 'नेमिनाथ हमचडी' अने सोळमा शतकना अन्तभागमां विनयदेवसूरिए 'नेमिनाथ धवलविवाहलु' रच्यां छे.

आ बधां काव्योमां 'नेमिरंगरत्नाकर छन्द' विशिष्ट भात पाडे छे. नेमिनाथना जन्मथी मांडीने तेमना किशोरवयनां पराक्रम, लग्न करवा माटेनो तेमनो इन्कार, उग्रसेन राजा अने शिवादेवीनी पुत्री राजिमती साथे नेमिनाथना लग्न करावबा माटे कृष्णनो प्रयत्न, वसंतखेल द्वारा गोपीओनी विनवणी, एमना आग्रहनो नेमिनाथे करेलो स्वीकार, लग्ननी तैयारी, लग्नप्रसंगे थनार जीवहत्याथी नेमिनाथने उत्पन्न थयेल निर्वेद अने तेमणे करेल संसारत्याग, आशाभंग राजिमतीनी विरहव्यथा, गिरनार पर जईने नेमिनाथे लीधेल दीक्षा अने करेली केवलज्ञाननी प्राप्ति, राजिमतीने अने संसारीओने नेमिनाथे आपेल उपदेश— ए प्रसंगो तेमां लावण्यसमये विस्तारथी अने उमळकाथी आलेख्या छे. आ दरेक स्थळे तेमनी उच्च वर्णनशक्तिनो परिचय थाय छे.

गोपीओ नेमिकुमारने लग्न करवा वीनवे छे, तेनी सामे दलील करतां स्त्रीओ पतिने केवी रीते हेरान करे छे तेनुं नेमिकुमार वर्णन करे छे. (अधिकार १, कडी ५९ –७६). गृहजीवननुं अने स्त्रीस्वभावनुं आ तादृश चित्र लावण्यसमयनुं मौलिक सर्जन छे. नेमिनाथविषयक अन्य काव्यमां ते मळतुं नथी. तेने लीधे काव्यमां हास्यनी छांट उत्पन्न थाय छे अने काव्यना उद्देशने असरकारक बनाववामां ते उपयोगी नीवडे छे.

लग्नने अंगे थनार पशुओनी हत्यानी कल्पना आवतां ज नेमिकुमार लग्न कर्या विना लग्नना मांडवेथी पाछा फरे छे. त्यारे राजिमतीनुं मन भांगीने भूको थई जाय छे. तेनी आ विरहावस्थानुं वर्णन लावण्यसमये बीजा कविओ करतां विस्तारथी कर्युं छे. (अधिकार २, कडी ८३ थी १११). 'कव्यां कवीश्वरि अविरल आगइ' ए पंक्तिमां कविए पोते जणाव्युं छे तेम वि. सं. ना पंदरमा शतकमां

रचायेल 'मयण छन्द' जेवी कृतिनी स्पष्ट असर तेमां वरताय छे.* छतां चमत्कृतिभर्या प्रासानुप्रास अने आंतर्यमकथी तेमज अनुभावोना तादृश आलेखनथी ए हृदय-स्पर्शी थई पडे छे अने विप्रलंभ शृंगारनो अनुभव करावी जाय छे.

काव्यने अन्ते कडी १२१ थी १४० मां आवेलो नेमिनाथनो उपदेश पण लावण्यसमयनो उमेरो छे. काव्यने सांप्रदायिक रंग आपी शांत रसनी निष्पत्ति करवामां ते महत्त्वनो फाळो आपे छे.

आखुंये काव्य शब्दलालित्यथी भरपूर छे. स्वाभाविक रीते ज प्रयोजायेला प्रासानुप्रास अने आंतर्यमक तेमां स्थळे स्थळे जोवा मळे छे. समान उच्चारना शब्दो द्वारा जुदा जुदा अर्थ व्यक्त करवानुं कविनुं चातुर्य ध्यान खेंचे एवुं छे प्रथम अधिकारनी कडी ३६ अने ३८ तेमज बीजा अधिकारनी कडी ८५, ८६, ८७, ९० अने ९२मां तेनां उदाहरणो प्राप्त थाय छे. कविनुं भाषाप्रभुत्व उच्च कोटिनुं छे.

भाषानी जेम कविनुं छंदप्रभुत्व पण आकर्षक छे. सर्वत्र योग्य शब्द कृत्रिमता वगर छंदमां गोठवाता जाय छे ने माधुर्य सर्जता जाय छे. तेमां ये चरणाकुळ, मरहट्ठा, पद्मावती अने त्रिभंगीनो प्रवाह अति वेगवन्त छे.

उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, अत्युक्ति, दृष्टान्त अने व्यतिरेक जेवा अर्थालंकारो कविए आ काव्यमां प्रयोज्या छे. तेमांना केटलाक अलंकारो रूढ छे, पण केटलाकमां मौलिकता अने कविप्रतिभाना चमकारा देखाय छे. उ. त.,

'अलगी नांषइ सोवनत्रोटी, जिम जवरोटी कागइं बोटी' (२–९४) अने 'थूक जिम अलगी लांषइ' (२–१०४) ए पंक्तिओनो उपमा सचोट छे.

बीजा अधिकारनी कडी १५, १६, १७, १८, १९, २० अने २१मां रहेला व्यतिरेक के प्रतीप अलंकार चमत्कारभर्या छे.

---

* आ वर्णनमांनो कडो ९७, ९८ अने ९९ साथे सरखावो 'मयण छन्द'नो नीचेनो छप्पोः

" वहिन तुहिन हार, गलि धरुं कि ? अहं अहं :
मणिमय मंदिरि कुसुम–सेजि पच्छरुं कि ? अहं अहं :
कोइल केकि कपोत, कीर कहि ग्रहूं कि ? अहं अहं :
काम कुतूहल करण कथा, सखि ! कहूं कि ? अहं अहं :
सारंग–ज्योति सामी टलत, अवर किंपि मनि न न सहइः
तिणि कारणि सही पडुत्तरु, अणखि अवल 'अहं अहं' करइ."

('गुजराती साहित्यनां स्वरूपो : पद्यविभाग,'
पृ. ११७—डॉ. मंजुलाल र. मजमूदार)

बीजा अधिकारनी कडी ९२नी नीचेनी पंक्तिमां अत्युक्ति अलंकारमां पण कविनी मनोहर कल्पनानां दर्शन थाय छे.

'जे सिर वरि सोवन राषडी ए, झालइ सोइ करी राषडी ए.'

कथनने सचोट बनाववा लावण्यसमय कहेवतोनो पण सुभग प्रयोग करे छे. तेमनी आ शक्तिनो परिचय पहेला अधिकारनी ७०मी कडीमां मळे छे. पत्नीना त्रासथी कंटाळी गयेल पति दैवने फरियाद करतां कहे छे : 'ए भरीय अणत्थिइं तइं मुझ मत्थिइं भागी कांइ कुहाडि.' कुहाडी तो खूब वपराया पछी, पोतानुं बळ न चाले त्यारे भांगे. पत्नीना त्रासनी अतिशयतानुं अने तेनी सामे पतिनी निःसहायतानुं आमां सरस सूचन थयुं छे. 'गुल गलिउ नइ साकर भेली' (१–५४), 'शाणा आगलि सुंडल मांडइ' (१७६), ए कहेवतो पण ध्यानपात्र छे.

५. समाजचित्र

लावण्यसमयनी अन्य काव्यकृतिओनी जेम आ काव्यमां पण तत्कालीन समाजजीवननां केटलांक सुरेख चित्रो जोवा मळे छे.

नेमिकुमारना जन्मप्रसंगना वर्णन परथी लागे छे के ए जमानामां पुत्र-जन्म वखते राजदरबारमां उत्सव ऊजवातो. ते प्रसंगे भूंगळ, भेरी, ढोल वगेरे वाजित्रो वागतां. भाट, चारणो अने बंदीजनो राजाओना गुणगान करता ने नट लोको खेल करता. शेरीओने शणगारवामां आवती. राजमहेल अने राजमार्गो पर आसोपालवनां तोरण बांधवामां आवतां. स्त्रीओ नवां वस्त्रो पहेरीने एकठी थती ने मधुर स्वरे गीतो गाती. राजमहेलमां आवनार लोकोनो पाननां बीडांथी सत्कार करवामां आवतो. ब्राह्मणो अने भाटचारणोने राजा तरफथी दान अपातुं.

बाळ नेमिकुमारनां आभूषणो अने पहेरवेशना उल्लेखो पण काव्यमां मळे छे. ते परथी जणाय छे के राजकुंवरने नानी वयमां हाथमां कडली, केडे सोनानो कंदोरो, गळामां रत्नजडित हार अने माथे टोपी पहेरावबामां आवतां.

पोशाक अने आभूषणोना उल्लेख पण काव्यमां मळे छे. ते मुजब स्त्रीओ चीर, कमखा अने घाट के घाटडी ए वस्त्रो पहेरती तेमज माथे राखडी, अंबोडे गोफणो, कानमां झाल, गळामां सोनानो हार अने त्रोटी, कांडे चूडो ने कंकण तथा पगमां नूपुर ए आभूषणो धारण करती. पुरुषो माथे सोनानी खींटली, कानमां कुंडळ, गळामां हार अने बाहु पर बहेरखां ए आभूषण धारण करता. तेमां माणेकमोतीनो उपयोग थतो.

नेमिकुंवर अने गोपीओना वसंतविहारना वर्णन परथी लागे छे के ए समयमां वावना पाणीने कस्तूरी, कपूर, केसर, चंदन अने पुष्पोथी सुवासित करवामां आवतुं अने युवान स्त्रीपुरुषो तेमां स्नान करतां.

कृष्णनी आयुधशाळामां नेमिकुमारे दर्शावेल पराक्रमथी पृथ्वी पर मचेला खळभळाटनुं काव्यमां वर्णन करवामां आव्युं छे. ते परथी लागे छे के ए वखते वस्तुओ साचववा माटे घरमां उतरेड अने सीकां प्रचलित हतां. वळी गाय अने भेंसने दोरडा वडे खीले बांधवामां आवती अने गोळीमां दहीं वलोववामां आवतुं.

गोपीओ नेमिकुमारने लग्न करवा वीनवे छे, तेनी सामे दलील करतां नेमिकुमार लग्न कर्या पछीनी मुसीबतो वर्णवे छे. तेमांथी तत्कालीन गृहजीवननुं समृद्ध चित्र प्राप्त थाय छे. ते मुजब लागे छे के संयुक्त कुटुम्बमां जेठाणी देराणीने दुःख आपती. देराणीए जेठाणीने पगे पडवुं पडतुं. खराब स्वभावनी स्त्रीओ कीमती वस्त्रो ने आभूषणो मागीने पतिने पजवती. घी, तेल, बळतण, मीठुं, मरचुं, पान, कंकु वगेरे चीजो बजारमांथी पतिए खरीदी लाववी पडती ने तेमां मोडुं थतां आवी स्त्री रिसाई जती, के रोककळ करती ने सारो संगाथ मळतां पियर पण जती रहेती. घर छोडीने जती रहेती स्त्रीनी घेर घेर वात थती ने पियरमां तेनी सखीओ तेने ठपको आपती. पति पण पछीथी कायर थईने तेने तेडावी लेतो ने कह्यागरो बनी जतो. पुरुष कायरपणुं बतावतो तेम तेम स्त्री तेने वधारे दबावती. मायाभारे स्त्रीओ पतिने मारती. आवी पत्नीथी पति डरतो.

ते समयनी लग्नविधिनी माहिती पण नेमिकुमारना लग्नप्रसंगमांथी मळे छे. ए उपरथी जणाय छे के ए काळे मागुं लईने कन्याने त्यां कोई वडील सगास्नेहीने मोकलवानो रिवाज हतो. लग्नसम्बन्ध ज्ञातिमां ज पसन्द करवामां आवतो. लग्नसम्बन्ध बांधती वखते सगांसम्बन्धीओ अने स्त्रीओ एकठां थतां, स्त्रीओ गीत गाती. फूल अने पानसोपारीथी ए बधांनुं सन्मान करवामां आवतुं. लग्ननुं मुहूर्त ज्योतिषी पासे कढाववामां आवतुं. पछी लग्ननी तैयारीओ थती. पकवान अने वडी बनाववामां आवतां. लग्नमंडप बांधवामां आवतो. तेमां चाकळा अने चंदरवा बंधाता. चोकमां चोरीनी विधि थती. मांडी, मुरकी, हेसमी, गलपापडी, लाडु, खाजां, दाळ, भात, कूर (दहींमिश्रित भात), दहीं, अथाणां ए जमवानी वानगीओ हती. जम्या पछी महेमानोने पान, सोपारी ने लविंग आपवामां आवतां.

वरराजा घोडा पर सवार थईने कन्याने घेर परणवा जतो. तेने माथे मुगट अने ते पर खूंप (पुष्पनो शणगार) पहेरावनवामां आवतो. ते उपरांत माथे खींटली, कानमां कुंडळ, गळामां सोनानो हार अने हाथ पर बहेरखां ते धारण करतो. तेनी पाछळ पान चावता जानैया अने तेनी पाछळ मंगळ गीत गाती स्त्रीओ चालतां. लग्नप्रसंगे सुगन्धी जळ अने द्रव्योनो उपयोग थतो. जाननी आगळ ढोल अने वाजिंत्रो वागतां, वरने तोरणे पोंखवामां आवतो.

बेसवानां साधन तरीके पाटला अने जाजम (चाउरि)नो तथा जमवानां साधन तरीके भाणां अने कचोळांनो उल्लेख काव्यमां थयो छे.

लग्नोत्सुक राजिमती शणगार सजे छे त्यारे भावि अनिष्टनुं सूचन आ रीते करवामां आव्युं छे: 'क्षिणि फरकिउं दक्षिण अंग ताम.' (२-७०). तेथी राजिमती 'मुखि घूघूकार करइ अपार.' आ विगत ए समयना लोकोनी शुकन-अपशुकनमां श्रद्धा व्यक्त करे छे.

आम लावण्यसमयनी वर्णनशक्ति अने अलंकारशक्ति, छन्द अने भाषा परनुं तेमनुं उच्च प्रकारनुं प्रभुत्व तेमज तेमां आलेखायेलुं तत्कालीन समाजचित्र 'नेमिरंगरत्नाकर छन्द'ने मध्यकालीन गुजराती साहित्यमां विशिष्ट स्थाननो अधिकारी बनावे छे.

भाषास्वरूप

'नेमिरंगरत्नाकर छन्द' भाषानी दृष्टिए महत्त्वनी कृति छे.

तेनी ध्वनिमालामां ऋ के ळ देखाता नथी. तद्भव शब्दोमां अन्त्य के उपान्त्य स्वरयुग्मो अइ के अउ मांथी हजु ऐ के औ संयुक्त स्वरो विकस्या नथी, जो के एनुं उच्चारण थतुं हशे. ऐ अने औ संस्कृत तत्सम शब्दोमां सचवाया छे. उ. त., **दैव** (२–१०४), **सौभाग्य** (२–१४९)

ऋ बहुधा रि मां रूपान्तरित थयो छे. उ. त., **रिदय** (१-७७, १–७८), **रिधि** (२–१०६)

चरणान्त प्रासमां कोई वार इ अने य नो प्रास सधायो छे. उ. त., **पाय** .... **सुहाइ** (२–६९), जे इ नुं प्रतिसंप्रसारण सूचवे छे.

क्वचित् लघुप्रयत्न य मळे छे. उ. त., **देस्यूं** (१–५५), **सुणिज्यो** (२–५), **च्यारि** (२–६५), **जाज्यो** (२–७१)

ह नुं उच्चारण स्वरसहित जुदुं मळे छे. उ. त., **नान्हडली** (१–२७), **एहवी** (१–७८), **साहमा** (२–१०), **तुम्हारउ** (२–१३०)

क्वचित् त्वरित उच्चारणने कारणे शब्दोना वर्णोनुं संकोचन थयुं छे. उ. त., **ल्यावइ** (१–७४), **नापु** (१–८४)

क्वचित् र नो प्रक्षेप थयो छे. उ. त., **त्रोडी** (१–३७), **त्रूटइ** (१-४०)

केटलाक अर्ध–तत्सम शब्दोमां विप्रकर्ष मळे छे. उ. त., **दुरमति** (१–१), **भगतिइं** (१–८), **सिरिवच्छ** (१–२९), **कीरति** (२–१३७)

मूळ संस्कृत न नो प्रा. अप. द्वारा मध्य. गुजरातीमां ण चालु रह्यो छे, तेम अहीं पण **कवियणजण** (१-२), **हंसगमणि** (१–३), **पदमिणि** (१–४८), **देसण** (२–१४३) मळे छे.

तेवी रीते मूळ संस्कृत र नो प्राकृत द्वारा चालु रहेलो ल मळे छे. उ. त., **सुकुमाल** (२–९८), **सुकुमाला** (२–१४०)

बहुधा तद्भव शब्दोमां अने क्वचित् तत्सम शब्दोमां ज्यां ष् आवे छे त्यां ख् ना लेखनप्रतीक तरीके ते वपरायेलो छे. उ. त., **चोपी** (१–९), **वषाणइ** (१–१०), **पारषि परषइं** (१-११), **शंष** (१–३१), **सुषि** (१–४२), **दिषाडइ** (१–४५), **दष** (२–१३२), **राषजे** (२–१५३)

कवचित् क्ष नो ख थया पछी ष रूपे लखायेलो छे. उ. त., **षिणि** (१–५२,२–८५, २–८७), **अपय** (२–१६२), **लप** (२–१३२)

संस्कृत तत्सम शब्दोना श अने ष ने बदले कोई कोई स्थळे स वपरायो छे. उ. त., **आस** (१–६०), **सोलह** (१–८०), **देस–विदेसि** (२–६), **ससि-सूरमंडल** (२–५८), **दोस** (२–१०९), **उपदेस** (२–१२०)

आ उपरांत (१) **दुसमन** (१–१०), **तिव्रिल** (१–२३) जेवा फारसी–अरबी शब्दोनो, (२) **सोइ** (१–११, २–९२), **बहुत** (२–४०), **हइ** (२–१११), **भयं** (२–१४७) जेवा व्रज–हिन्दी शब्दोनो, (३) **तोरी** (२–२७), **मोरुं** (२–१०२) जेवा राजस्थानी शब्दोनो, तेमज (४) **हरिची** (१–३०), **सुणिल्ला–धुणिल्ला** (२–७५) जेवा मराठी धाटीना शब्दोनो तेमां प्रयोग थयो छे.

व्याकरण

नाम, विशेषण, सर्वनाम, क्रियापद अने अव्यय ए संस्कृत व्याकरणनां पांचे शब्दस्वरूप आ कृतिनी भाषामां ऊतरी आव्यां छे.

(१) नाम : जाति—संस्कृत–पालि–प्राकृत–अपभ्रंश जेम नामो त्रणे जातिमां मळे छे.

नरजातिमां अ आ इ ई कारान्त नामो मळे छे. उ. त., **जनम, कुंअर, धूंप, पगर, हार, वरराजा, हरि, पति, मणि, स्वामी.** आ उपरान्त नरजातिमां उ अने ओ प्रत्ययान्त नामो मळे छे. उ. त., **कंदोरउ, पाटलउ, वालु, गोफणु, जीवडउ, मरूउ, नेमिनाहो, दिणयरो, नेमिजिणेसरो.**

नारीजातिमां अ आ इ ई उ कारान्त नामो मळे छे. उ. त., **सूंगल, वाट, वात, टेव, जान, वेदन, माया, वीणा, गदा, पुहवि, लाछि, कुहाडि, भमहि, सूइ, कंती, वाणी, सेरी, ताली, वस्तु.**

नान्यतरजातिमां अ, इ, ई, उ कारान्त नामो मळे छे. उ. त., **कवित, चीर, अंगण, लगन, ठाइ, पानि, मोती, तनु.** आ उपरांत नान्यतरजातिमां उं–ऊं प्रत्ययान्त नामो मळे छे. उ. त., **परिणवुं, कायरपणउं, पानडउं, नातरूं.**

वचन—नरजातिमां बहुवचननो सामान्य प्रत्यय आ छे. उ. त., **सिंगारा, कमपा, भमरा, विहारा.** पण कोई वार ओनो उपयोग थयो छे. उ. त., **देवो सिली** (२–११४). आ उपरांत अप्रत्यय रूपो पण मळे छे.

नारीजातिमां बहुवचननो सामान्य प्रत्यय आ छे. उ. त., **नीका** (१–३०)

नान्यतरजातिमां बहुवचननो सामान्य प्रत्यय **आं** छे. उ. त., **पवालां, भाणां, बाणां, वयणलां, टोलां, दूधडां.** आ उपरांत अप्रत्यय रूपो पण मळे छे.

घणी वार बहुवचननो प्रत्यय लागतो नथी, पण विशेषणोने के भूतकालीन क्रियापदोने बहुवचननो प्रत्यय नरजातिमां **आ** अने नान्यतरजातिमां **आं** लागे छे, ते परथी बहुवचननो अर्थ सूचवाय छे. उ. त., **पयकमल सुंहालां** (१–२८), **नेमिंतणा गुण** (१–१२), **दानव मलिआ** (१–३६), **जीतां रातां कमल** (२–२०)

मानार्थे बहुवचननो प्रयोग पण जोवा मळे छे. उ. त., **तु रे जनम्या धन धन जिन सामलवन** (१–२१)

विभक्ति—पहेली तेमज बीजी विभक्तिनो प्रत्यय नथी.

त्रीजी विभक्तिनो प्रत्यय असंयुक्त अने संयुक्त **इ–इं** तेमज **ए** छे. उ. त., **सीलइ** (१–८०), **सुगंधइ** (२–६१), **छंदइं** (१–५), **बुधिइं** (१–९), **वेगिइं** (१–१४), **माहवि** (२–२३), **नेमिविरहिं** (१–९४), **मोतीडे** (२–५२), **नयणे** (२–६६).

चोथीमां **नइं** ए अनुग अने **रेसि** ए नामयोगी वपराया छे. उ. त., **नारीनइं** (१–८१), **हरिनइं** (१–८५), **पितानइं** (२–९), **झीलण रेसि** (१–५०).

पांचमीमां **थिकी** (१–४४), **थिउ** (१–४८), **थी** (२–१३५) ए अनुग वपराया छे.

छठ्ठीमां विशेष्यनां जाति अने वचनना संदर्भमां **नउ** (१–१५), **नी** (२–५२), **नूं** (१–८७), **तणउ** (१–४७), **तणी** (१–४६), **तणइ** (२–१२), **तणेइ** (२–५२), **तणा** (२–७५), **तणां** (१–४२), **केरु** (२–५३), **केरउं** (१–५५), **केरी** (१–२), **केरइ** (२–१४२), **केरा** (१–९), **चु** (१–५५), **ची**(१–३०) ए अनुग वपराया छे. आरंभनी भूमिकामां मळतो ने पछी लुप्त थयेलो **ह** प्रत्यय (सं. **स्य**>प्रा. **स्स**>अप. **स्सु–सु–**) क्वचित् मळे छे. उ. त., **मूलह विण** (१–२९), **हरषह पाणि** (२–२६).

सातमी विभक्तिना प्रत्यय असंयुक्त ने संयुक्त **इ–इं** तेमज संयुक्त **ए** छे. उ. त., **चहुटइ** (१–६३), **चउसासइ** (२–३०), **हियडइं** (१–५), **मनि** (१–८), **अंगि** (१–२), **भालि** (१–२७), **काने** (१–४), **धवलहरे** (१–२५). संस्कृत नारीजातिना **आम्** प्रत्ययनो अवशेष पण क्वचित् मळे छे. उ. त., **आउधशालां पुहतउ** (१–३०), **मांहइ** (२–१०१), **माहिइं** (१–११), **मांहि** (२–१३), **मांहिं** (२–१४०), **वरि** (१–१६), **ऊपरि** (१–४१), **पे** (२–१०३), **मझारि** (२–११), **मझारे** (१–१३) पण सातमीना अर्थमां वपराया छे.

सति सप्तमीनो प्रयोग पण क्यारेक मळे छे. उ. त., **प्रहि ऊगमि परणवुं करेसिइं** (२–७६).

(२) **विशेषण**—अविकारक विशेषणो विशेष्यनी पूर्वे अने पछी कोई पण जातना फेरफार विना ज प्रयोजाय छे. विकारक विशेषणनां पहेली विभक्तिनां एक-वचननां रूप **ए प्रस्ताव अछइ अति मोटउ** (१–५५), **नान्हडली कडली** (१–२७), **वीहुं त्रीजउं उपमान** (२–१३) ए प्रमाणे थाय छे. बहुवचनमां **कवित ते रूडां होइसिइं** (१–१२), **भट्ट भला** (१–४०) थाय छे.

विशेष्यनी जेम त्रीजी अने सातमी विभक्तिना प्रत्यय **इ–ई–ए** विशेषणने पण लागे छे. उ. त., **तिणइं दुषिइं** (१–४४), **इणि परि** (१–२६), **मननइं रंगि** (२–३), **सहीयरनइं टोलइ** (२–८७), **मोटे मोटे मोतीडे जडी** (२–५२).

संख्यावाचक—संख्यावाचक विशेषणोमां **अध, साढा** (वार); **इक, इग, एक; वि, बे, बेउ, वेहु; तिन्नि; चार, च्यारइ, च्यारि, चउ; सत्त, सात; अट्ठ; नव; दह, दस; बार; सोल; अढार, अढारह; छत्तीस; च्यालि, चउपन्न, चउ-प्पन्नह; सट्ठि; चउसठि; एकोतर; वहुत्तरि; सइं, सु, शत; सहस; लक्ख, लाप; कोडि**—ए रूपो मळे छे.

आवृत्तिवाचक—**प्रथम, पहिलउं, वीजु, विहुं, त्रिसणु, त्रीजउं, छठइं, अट्ठमि, नवमइ** ए रूपो मळे छे.

अनिश्चित संख्यावाचकमां **वहुलां, परघल, बहुत, अतिघण, घणाला** ए विशेषण ध्यानपात्र छे.

(३) **सर्वनाम**—**हूं, तूं, ति–ते–तेह, ए–एह, जे, इ, आप, कु–को, सिउं** वगेरे सर्वनामो एनां विविध विभक्तिजन्य रूपोमां प्रयोजायेलां मळे छे.

हुं

विभक्ति	ए. व.	व. व.
१	हउं, हूं, हुं	—
२	—	—
३	मइं	—
४	—	—
५	—	—
६	मुझ, मझ, मोरुं,	अम्ह, अह्मारा
७	—	—

तूं

वि.	ए. व.	व. व.
१	तूं	तुह्मि, तुह्मे
२	—	—
३	तइं	—
४	—	—
५	—	—
६	तुझ, तोरी, तुह्मचु,	तुह्म, तुह्मारउ
७	—	—

जे

वि.	ए. व.	व. व.
१	जं, जि	जे
२	—	—
३	जिणि, जीणइं जेणइ	—
४	—	—
५	—	—
६	जसु जस	—
७	—	—

दर्शक अने त्रीजो पुरुष सर्वनामो

वि.	ए. व.	व. व.
१	सा, स, सं, सो, सोइ, तेअ, ति, ते, तेह, तं, एह, ए, इ, ओ	—
२	—	—
३	इणि, तिणि, तिणइं	—
४	—	—
५	—	—
६	तसु, तासु, तास, तेहना, तेहनी	—
७	तिणि, तिणिं, इणइ	—

स्ववाचक—आप, आपइं, आपुलइ

अनिश्चित—कु, को, कोइ, कांइ, कइ, किंपि, केवि, सवि, सहू, केता

प्रश्नवाचक—सिउं, सिउ, स्या, किसिइं

संबंधक—जे, जे–ते, जं–तं

साधित रूपोमां इसिउं, इसिउ, एहवी, जेवड, त्रेवडी, किसिउं, एतइ, एतलइ, केता, जिस्यां ए विशेषणात्मक रूपो वपरायां छे.

(४) क्रियापद—क्रियापदनां त्रणे काळनां रूप मळे छे.

वर्तमानकाळ–कर्तरि रूप

पु.	ए. व.	ब. व.
१	बोलउं, कहउं, मागूं, जंपूं	कहीइ, थइइ, कहीयइ, लहीयइ
२	डरइ. आणइ, झपइ, कहि	मानउ, जाणउ
३	करइ, चालइ, अछइ, पडए	करइ, करए, धूजइं, लडथडए, रडइए

कर्मणि रूप

कर्मणि रूप मुख्यत्वे त्री. पु. ए. व. अने ब. व. मां मळे छे. तेनां संख्याबंध रूप प्रयोजायां छे. उ. त., दीजइ (२–२९), जोइइ (१–६४), मूंकीइ (२–४०), चूरियइ (२–४०) इत्यादि. कर्मणिनुं नपुं रूप कहाइ (२–३१), सुहाइ (२–४२), पमाइ (२–१३१) वगेरे पण आ कृतिमां मळे छे. दीजइ (२–४६), कीजइ (२–१०४), लीजइ (२–१०२), थाइ (२–१२६) वगेरेनो अर्थ कर्तरि पण थई चूक्यो छे.

भविष्यकाळ–कर्तरि

पु.	ए. व.	ब. व.
१	—	गाइसु, करसिउं, करिसु, कहिसिउं, देस्यूं
२	—	खासिउ, जासिउ
३	करसिइ, करेसिइ, बोलसिइ होसिइ, हुसिइ	जोसिइ, जोइसिइं, वधेसिइं

आज्ञार्थ

(१) शुद्ध आज्ञार्थ—शुद्ध आज्ञार्थमां बीजा पुरुष एकवचनमां कहइ, कहि, कर, करि, सुणि, पालि, आपे, कापे इत्यादि अने बहुवचनमां जोउ, थाउ, जाणउ, करु, आपु, रहु इत्यादि रूप मळे छे.

शुद्ध आज्ञार्थमां बी. पु. ए. व.मां कर्मणिनां रूपोनो पण प्रयोग थयो छे. उ. त., कीजइं (१–५८), कीजइ (१–८३), लीजइ (२–१०७).

भविष्यार्थ आज्ञार्थ—भविष्यार्थ आज्ञार्थमां बी. पु. ए. व.मां रापजे, दापजे (२–१५३) अने व. व. मां सुणिज्यो, धरज्यो, जाज्यो जेवां रूपो प्रयोजायां छे.

प्रेरकनो प्रयोग

मूळ धातुना उपान्त्य अ नो आ थईने के मूळ धातुने आव अने आड प्रत्यय लागीने बनेलां प्रेरक रूपो आ कृतिमां मळी आवे छे. उ. त., वालइ, तारइ, ऊडाडी, नमाडी, रमाडी, रिमाडचा, दिपाडइ, परणावउं, सुणाविउ, हरपावउ, मनाव्या.

कृदंत

वर्तमान, भूत, हेत्वर्थ, संबंधक अने विध्यर्थ के सामान्य कृदन्त अहीं जोवा मळे छे.

वर्तमान कृदन्तमां रमतु, जातउ, ऊपजतु (ए. व.), माता, रोतां, जिमतां (व. व.) उपरांत सं. ०अन्त् (एनुं निर्बळ रूप अत्) मांथी प्राकृतमां विकसेला अन्त अंगथी बनेला झलकंती, वहंतु, धूजंतउ, वाजंति, बोलंति, मांचंता, नाचंता, विहरंता, पडंतां, करंतां रूप पण ठीक ठीक संख्यामां मळे छे. सं. कर्मणि रूप बनावता य् नो विकास ई पण केटलांक वर्तमान कृदन्तनी पूर्वे आवी मळ्यो छे. उ. त., वदीता, कहीतां.

भूतकृदंतमां हुउ, कीधउ, गयु, तुट्ठउ, दिट्ठउ, दीठउ, चडीउ, वूठउ, पूरिउ जेवां रूपो पुंल्लिग एकवचनमां अने समाया, आया, आव्या, डरिया, वाठा, नाठा, पइठा, नट्ठा, तेडचा, जनम्या जेवां रूपो पुंल्लिग बहुवचनमां मळे छे. मराठीनी जेम प्राकृत भूतकृदंतना इल्ल प्रत्ययवाळां रूपो पण तेमां प्रयोजायेलां छे. नपुंसक ए. व.मां लागउं, करिउं, नीठउं, दीठउं, लीधूं, थयूं, जोयउं, हतूं, नडतूं अडतूं अने नपुंमक व. व.मां काढीयां, जीतां, कीधां, ग्यां, पइठां जेवां रूपो मळे छे. स्त्री. ए. व. मां चडी, ऊपाडी, दीधी, पइठी, कही, हुंति अने स्त्री. व. व.मां सिणगारी, परिवरी, सनकारी जेवां रूपो मळे छे. सौराष्ट्रमां व्यापक आणी प्रत्ययवाळां रूपो पण स्त्री. ए. व. अने व. व. मां मळे छे. उ. त., कहाणी (१–८५), ऊजाणीं (१–७२). सामान्य रीते भूतकृदंत क्रियापदनुं काम सारे छे.

हेत्वर्थमां करिवा, तरिवा, वरवानु, करवानु, सूवा जेवां रूपो मळे छे.

संबंधकमां कही, लोपी, टाली, पामी, प्रणमीय जेवां रूपो मळे छे. अप-

भ्रंशथी चाल्या आवेला एवि, एवी अंत्यगवाळां रूपो पण मळे छे. उ. त., वंदेवी (१–१), पिक्खेवि (२–१०७).

विध्यर्थ (सामान्य) कृदंतमां परणवूं (१–८५) जेवा रूप मळे छे.

(५) अव्यय—अव्ययोमां क्रियाविशेषण, नामयोगी, उभयान्वयी अने केवळ-प्रयोगीनो विकास आ भूमिकामां ठीक प्रमाणमां छे.

क्रियाविशेषण अव्यय

आ कृतिमां नीचेनां क्रियाविशेषण अव्यय मळे छे.

स्थळवाचक—**जहिं, जां, वरि, ऊपरि, दूर, दूरि, परतखि, पे, पाषलि, धुरि, भीतरि.**

काळवाचक **हिवइ, हिव, हवइं, जव, तव, आगइ, आज, जाम, ताम, किवारइं, पुनरपि, अहनिसि, सदा, पूरविं, वार वार, त्याहर पछी, पछइ**

रीतवाचक— **जिम, तिम, जं, तं, इस, किम, एमइं, किमइ, परि, परे, प्राणइं, प्राणि, सहजइं, अनिवार.**

कारणवाचक— **कां, काइ, किम, कांइं, सिउं**

निश्चयवाचक— **निश्चइं, निटोल, नीम, सही**

संशयवाचक— **कि, किरि, रखे**

नकारवाचक— **न, नही, नहीं, नवि, म, अंअः**

नामयोगी अव्यय

स्थळवाचक—**पासि, पासइं, वरि, ऊपरि, मझारि, मझारे, सरिसु, लगइ, मांहि, मांहइ, भणी, पे, प्रतिइं, प्रतिं**

काळवाचक—**पाछिली**

हेतुवाचक—**रेसि**

सहितार्थक—**सिउं, सरसिउं, सहित, साथिइ**

रहितार्थक—**विण, पापइ, पपइ**

तुलनावाचक—**समाण, समान, पाहिं, पाहि**

साधनवाचक—**थिकी, करी**

उभयान्वयी अव्यय

समुच्चयवाचक—नइ, नइं, अनइ

विकल्पवाचक—कि, कइ, के

विरोधवाचक—पुण, पणि, पण

संबंधवाचक—जइ-तु, जु–तु, जउ–तु, जं–तं, जउ, तु, वळी, जिम जिम–तिम तिम

परिणामवाचक—नहींतरि

केवळप्रयोगी अव्यय

संबोधनवाचक—हो, रे

शोकवाचक—हा हा

विनय–संमतिवाचक—ज़ी ज़ी

कि, रे, रि, य अने अ पादपूरक तरीके वपराया छे.

कविश्री लावण्यसमयविरचित

नेमिरंगरत्नाकर छंद

प्रथम अधिकार

स्मृत्वा श्रीशारदां नेमेश्छन्दोभिर्विविधैर्वरैः ।
प्रबन्धं वन्धुरं कुर्वे रंगरत्नाकराभिधम् ॥

सारद सार दया कर देवी, तुझ पयकमल विमल वंदेवी,
मागूं सुमति, सदा तइं देवी दुरमति दूर थिकी नंदेवी. १

हिवइ हउं बोलउं मेल्ही माया, तूं कवियणजण केरी माया;
वहु गुणमणि तुझ अंगि समाया, अवगुण अवर अनंत गमाया. २

तुझ तनु सोहइ ऊज्जल कंती, पूनिमशशिहर परि झलकंती;
पय घम घम घुग्घर घमकंती, हंसगमणि चालइ चमकंती. ३

चालइ चमकंती जगि जयवंती, वीणा पुस्तक पवर धरइ,
करि कमल कमंडल, काने कुंडल, रविमंडल परि कंति करइ. ४

हियडइं हित आणी सुणि मुझ वाणी, जइ हूं तुझ बहुमान लहउं,
तु मनि आणंदइं, नेमिजिण वंदइं, नव नव छंदइं कवित कहउं. ५

देवी कोई नही जसु तुल्लइ, तव तूठी सा सरसति बुल्लइ;
सुरनर किंनर राज वषाणी, ते तुझ दीधी अविरल वाणी. ६

A एर्दं० श्री गौतमाय. B एर्दं० ॥ श्री वीतरागाय नमः C श्रीः ऐ नमः ॥
B समृत्वां. A शारदा. B सारदा. AB नेमे. C नेमै.
A छंदोभिविविधैर्वरैः B छंदोभिर्वंवधैवरैः C छंदोभिर्विविधिर्वरैः
AB प्रबंध. C प्रवंधं बंधुरं. ABC रंगरत्नाकराभिधं.

१. C शारद. AC दया पर. B मांगू, C मांगुं. B तइ. A दूरमति. B दूरि थकी.
२. BC हिव. AB हूं बोलूं. B मेहली. B केरडी. A वुहु. A गणमणि, B गुणमण. B अंग न माया. B अव अनंत.
३. C ससिहर पय झलकंती. A घघुर, B घुघर.
४. B जे चालय. B वेणी. C धरइं. B करि कमलि कमंडलु. C कंत.
५. A हीयडि, B हइडइ. A जय हूं. AB लहूं. B तूं. C मन. A. आणंदिइं. B 'नेमिजिण वंदइं' ए शब्दो नथी. A छंदिइं. B 'कवित' ने वदले 'छंद' छे. AB कहूं.
६. B जस, C तसु. A तूठी सरसति, C तूठी सारसति. B वोलइ. A सुरुनर. BC राजि. A अविचल.

तइं वाणी दीधी पुहविप्रसिधी, किधी सु-परि अपार;
भवसागर तरिवा, पातक हरिवा, करिवा कवित उदार. ७

इम बोलइ कवियण, सुणिज्यो भवियण, मुझ मनि अति आणंद;
नितु नव नव युगतिइं गाइसु विगतिइं, भगतिइं नेमिजिणंद. ८

जु तूटी सरसति मन सुधिइं, कहिसिउं कवित तु चोषी बुधिइं;
गाइसु गुण नेमीसर केरा, पोपिसु भावइं भाव भलेरा. ९

कवित कवित कही सहूअ वषाणइ, कवित तणा पुण भाव न जाणइ;
सोइ कवित जिणि दुसमन दूमइ, कोविदजनमनि लागउं घूमइ. १०

देषी चंद चकोरा हरषइ, वस्तु विशेषइं पारषि परषइं,
करिउं कवित जउ चतुर न चाहइ, सोइ कवित कहीइ स्या माहिइं ? ११

करिसु कवित ते रूडां होइसिइं, रसि लीणा कोविदजन जोइसिइं;
हिव अलवइंसिउं आलस छांडउं, नेमि तणा गुण गावा मांडउं. १२

इक वीनतडी धरज्यो हीइइ, ते ए कवित मांहिं नहीं कहीइ,
जनम हुउ सोरीपुर सारि, पुण पहुता द्वारिका मझारि. १३

कंसप्राण जब जो हरि हरिया, जरासिंधुभयि यादव डरिया,
वेगिइं गया रयणायरि नासी, लहीय लाग द्वारिका निवासी. १४

---

७. A दिधी. B पहुवि. C पातग.

८. C कविअण. B सुणियो. C भविअण मझ. A मुनि. B नित. B युगतइ, C युगति. A गायुसु, C गायसु. B विगतइ, C विगति. B भगतइ, C भगति.

९. B सुधइ, C शुधि. BC कहिसु. A कवित हू. B नेमीस्वर. B पोषिस. A भाविइं.

१०. A सहू A कवितणा गुणभाव. AB जिण. A दूसमन. B कोविदजनमन, A कोविद-जणमनि. AB लागूं.

११. C हरषिइं. AC विशेपिइं. B परिष, C पारिप B परिपइ. B करूं. BC जु. A चाहिइं. B कही स्या गाहिं, C कहीइ स्या माहि.

१२. B रुयडूं, C रुडउ. BC होसिइ. जोसिइं. A अलविइं, C अलवि. A सुं, B स्यूं. AB छंडूं. B मंडूं.

१३. B एक. A धरयो, B धरियो. A हइइ, C हीइ. A ते कवित. AC माहि. A जन्म. A हऊ, B हवु. B सूरीपुर. A पहूंता, C पुहता. C मझारि.

१४. कंसप्राणि. B जे. B हरया C हरिआ. AC भय. B डरया, C डरिआ. BC वेगि. A रयणायर. AC लही.

ए प्रस्ताव अछइ अति मोटउ, चिहुं पदे कीधउ चरबोटउ;
आडउं त्रेडउं हवइं न हेरूं, कहिसु चरित्र नेमीसर केरउं. १५

सोरिअपुर वरि वर सिंगारा, गढ मढ मंदिर पोलि पगारा,
युगियुगता जहिं जिन-विहारा, ऊपरि कनककलश झलकारा. १६

छाना छइल वसइ दातारा, केवि चतुर नर गुणभंडारा;
परिघल पुण्य करइ अनिवारा, तिणि नयरिइं नितु जयजयकारा. १७

समुद्रविजय जय धरणीधारा, हय गय पायक बहु परिवारा,
अरिदल दलणि धरइ ऊभारा, जइ-लच्छी उरि नवसर-हारा. १८

तसु पटराणी पुहवि-सारा, शिवादेवी सहजइं सुविचारा,
रूपइं रंभ करइ धिक्कारा, प्राणनाथ-सिउं प्रेम अपारा. १९

तासु उअरि किअ लइ अवतारा, चउद सुपन सिउं सामि अहमारा,
त्रिभुवन सोह चडावणहारा, जनम्या धन धन नेमिकुमारा. २०

तु रे जनम्या धन धन जिन सामलवन नेमिकुमार नरिंद-घरे;
सिणगारी नारी सवि सविचारी, मंगल बुल्लइ मधुर सरे २१

तव नरवर-विंदा, चउसठि इंदा, आवइ अहनिसि रंगभरे,
पय प्रणमीय भत्तिइं, ते एक-चित्तइं, उत्सव मंडइ विविह परे. २२

भूं भूं वज्जइ भूंगल भेरी, स्वरमंडल नीसाण नफेरी,
तूर तिविल झल्लरी नवेरी, ढोल ढमक्कइ सेरी सेरी. २३

---

१५. B मोट्ठ. A चिहूं ए दिवसि करिउ चरबोट्ठ. C कीधु. B चरबोट्ठ AB आडूंत्रेडूं. A हिवइं. C नवेरुं. A कसिसु. B नेमीश्वर. AC केरूं.

१६. A सोरीपुरु, B सोरीअपुर. AB वर वर. BC जगियुगता. A जिहियां, B जिहां. B जैन विहारा.

१७. A छयल. B किंवि. A परघल. A 'करइ' नथी. तीणि. नय नितु.

१८. A मां आ कडी नथी. B मां त्रीजुं चरण नथी. B जयलछछी

१९. B तसु. B पहुवइ. A सहजि, B सहिजइ. A रूपिइं. A धिकारा. B स्यूं.

२०. A तासुउ, B तास. A ऊरि, B ऊयरि. A किय, B कुलि. A चोऊद. B सपन. A सूं, B स्यूं B हमारा. C त्रिभुवनि. B मोह.

२१. A त रे धन धन जनम्या. BC सुविचारी. AC बोलइ. A विविधु सुरे.

२२. A नव. C चुसठि. A अहिनसि. A पय पामी भगतिइं. A मंडव विवह पुरे, B विवध परे.

२३. B सिरमंडल, C सरमंडल. A तविलि, B तिवल. A झल्लर. C निवेरी. B ढमकइ.

तु रे ढोल ढमक्कइ, घुग्घर घमकइ, पेला पेलइं खंति घरे,
वंदीजन भाट कि चारण चाट कि वाट कि नट लिव तेणि पुरे. २४

दानइं सनमानइं, फोफलपानिइं, सवि संतोष्या सुपरिकरे;
वंघइ सुविशाला वंनरमाला झाकझमाला धवलहरे. २५

इणि परि अभिनव विरचीय जंगा, दिनि दिनि वाधइ कूंअर सुचंगा,
अंजनगिरि सम सोहइ अंगा, गयदूषण, भूषण नवरंगा. २६

कु रे भूषण भालिं निहालिं, निरुपम टीलउं जोतां तृपति टली;
नान्हडली कडली करि आवडली, वांकडली वांकलडीय वली. २७

आरोपी टोपी मस्तकि उपी, सुजनि समोपी, सुकवि भणइ;
पयकमल सुंहालां, वाहु मृणालां, अधर प्रवालां वानि घणइ. २८

कडि कंदोरउ कंचणि घडीउ, उरि सिरिवछूछ रयणमणिं जडिउ;
कलावंत कुंअर न्हानडीउ, पुण्यवंतनइं पदवी चडीउ. २९
रमतु राउलि गिउ गहगहतउ, हरिची आउधशालां पुहतउ,
कुतगि कोडि सिला ऊपाडी, लहकइ लेई गदा ऊडाडी. ३०

जिणि गदा ऊडाडी गयणि भमाडी, त्राडी पूरिउ शंष वली;
हरि घणु हीजाडी, वेगि नमाडी, रंगि रमाडी ठाणि चली. ३१

सवि आउध शर्म्मी, मोटउ मर्मी कर्मी कूंअर गेहि गयु;
ते निसुणी नाद विषाद वहंतु, कृष्ण वदन तव कृष्ण थयु. ३२

---

२४. A त रे. A ढमकइ. A घघर, B घुघर. B भट के वाट नट लिव तिण सरे. C वंदीजण. चारण वाट कि वाट नट लिव तिणि पुरे.

२५. A दानिइं सन्मानिइं, B दानि सनमानि. B पानि. A वंधिइं. B वन्नरिवाला.

२६. C विरचित्र जंमा. A दिन दिन. AC वधइ. A चंगा.

२७. B निहाल. A निरुप. AB टीलूं B त्रिपति. A तृपति वली. A न्हान्हाडली. B नाहडली C वांकडली वांकडी वडी.

२८. A आरोपीइ. B वनि.

२९. BC कंदोरु. BC कंचण. A सिरिवछ. B रयणिमणि. A कूंयर, B कूंवर. B नान्हाडीउ, C नान्हडीउ. A पुण्यवंतनिइं, B पुण्यवंतनी.

३०. B गयु. AB गहगहतु. BC आयुधशाला. A पुहुतु, B पहुतु. AC कुतिगि. A लहकि B लहिकइ. A उलाली, B ऊलाडी.

३१. A जीणइ. A ऊलाली. B पूरयउ. BC ठाण.

३२. BC आयुध. B सरमी. B मो मरमी. A कर्मी. B करमी. A कूयर गहिगहिउ.

तिणि अवसरि धरणी धडहडइए. दह दिसि गयणंगण गडगडए;
गज अध-गज जातां आषडइए, गिरिसिरि सिषर सिषर षडहडए. ३३
रोसि भरी नारी तडफडए, विण त्रेवडि ऊत्रेवडि पडए;
महीयलि नाद सुणी ए वड ए चंदसूर वेहु लडथडए . ३४
लडथडिआ कायर चंद-दिवायर, सायर सत्तइ झलहलीया,
किंनर झलफलया, सुर षलभलीया, शेषनाग सवि सलवलिया. ३५
धरणीधर ढलिया, पुहविइं पलिया, तारा त्रुटवि टलवलीया;
कोलाहल कलीआ दानव मलिआ, रलया मानव वलवलिआ. ३६
तुंग तुरंगम सरसी घोडी, नाठी गाइ गई गोकल जोडी;
खीलउ ढीलउ करी विछोडी भइंसि भडकिइं बंधन त्रोडी. ३७
फुट्टइ गोली, गोरस नीका वहइ वसुधातलि धवली नीका;
त्रड त्रड त्राटक त्रूटइं सीकां, नारी वदन करइ तव फीकां. ३८
करि फीकां नारि कि वदन घरबारि कि केवि असारइ अडवडए;
चंपक जासूल कि बहुलां फूल कि मूलह विण वनि रडवडए. ३९
भट्ट भला झूझार कि धूजइं अपार कि भूपति भूमि पड्या रडवडए;
वहूअर-उरि हार कि त्रूटइ तार कि थाहरि थाहरि थलहडए. ४०
इसिउं देषी हरि हीअडइ डरीउ, "मझ ऊपरि को हरि अवतरीउ,
राजकाजि मुझ पूंठइ फिरीउ," हा हा हरि गाढउ गहिवरिउ. ४१

---

३३. A तीणि. AC धडहडइ. A दह द. B गयणंगणि. A गिरि शिषिरि शिषिरि षडहडइए.
३४. B तडफडइ, C तडफडइए. B त्रेवड. AB ऊत्रेवड. C पडइए. BC महीअलि. C एवडइ ए. A लडथडइए, B लडथए.
३५. A लडअडीया, B लडथडया. B सत्तय. AC झलहलया. AB सुरु. AC षलभलया AB सलवलया.
३६. B पहुवइ. AC टलवलया. AB कलया. A निदत्रि मिलया. C रुलिआ. A वलवलया.
३७. B तु रे तुरंगम. AC सरिसी. BC गल जोडी. AB षीलु. B ढीलु. AB करीय. B भटक्कइ, C भटक्की.
३८. A फूटइ. C गोरस सीकां. AB वहि. A धवली निका BC तड तड. A त्रुट्टइं.
३९. B फीका. A नारि वदन घरिवार कि, B नारि कि वदन केवि. AC अडवडइए. B चंपकि. A बुहूलां. A रडवडइए.
४०. A भड, C भट. A रडवडइए, B रडए. A थलवडइए.
४१. B इस्यूं A होयडि, B हइडइ. A कोइ. A पूठिइं.

तव वलिभद्र वचन मुषि वरणइ, " कां हो कृष्ण, किसिइं तूं करणइ ?
राज नामिं ए आणइ अरणइ, एक नारि पाधरी न परणइ. ४२

न-न परणइ नारि कि मदन अवतारि कि, नेमीसर संसार तरइ;
ए विषयतणां सुष विष सम देषी निश्चइं दारा दूरि करइ. ४३
तिणइं दुषिइं दूष्यां तरस्यां भूष्यां माततात मनि षेद धरइ;
कहि कहि रे वाला कान्हा काला, तेह थिकी तूं काइ डरइ ?" ४४

तव हरि नेमीसर तेडावइ, कारण जाणी जिणवर आवइ;
मिलिया बंधव मालाषाडइ, वाहु तणां वल वेउ दिषाडइ. ४५
दिषाडइ वाहु तणां वल, पहिलउं हरि लंबावइ हाथ;
ते कमलमृणाल तणी परि ततक्षिणि वालइ त्रिभुवननाथ. ४६

वलतु जिणवर-कर लाछि तणउ वर वालणि लग्गउ जाम,
ते परि जंपूं किम, जोउ हरि जिम हरि हींडोल्डिउ ताम. ४७

हरि चिंतइ, " ए इसिउ वलिउ, कां हींडइ कामिणिथिउ टलीउ ?
माततात हीयडइ हरषावउं, इक पदमिणि प्राणइं परणावउं. ४८

परणावउं प्राणइं कइ विन्नाणइं," चिंतइ चित्ति उपाय,
'अंतेउर सरिसु नेमिकुमर वर मेली सवि समुदाय.' ४९
हरि हरषिइं पहुतु वनि गहगहितउ झीलण रेसि रसाल;
पेषी जल-पोषी, चिहुं पखि चोषी, चउषंडी चउसाल. ५०

---

४२. A वलिभद्द. AC विरणइ. A किरणइ. B नारि ए.
४३. AB अवतार. B नेमीश्वर. A विषम सम. B विष सम जाणी.
४४. A तीणि. BC दुषि. A मातपिता. A दुष धरइ. A कहिश कहिश. B थकुं, C थिकु. BC कां. C डरइ ए.
४५. B नेमीश्वर. C मिलिआ. A वेहू. B देषाडइ.
४६. BC देषाडइ. AB पहिलं. B कमलनाल. C ततषिणि.
४७. A वालतु. C तणु. A वालिणि. A लगु, B लग्गु. C जंपुं. A जोइ. B हिंडोल्यु.
४८. BC अइसु. A कांइ हीडिइ. B कामिणिथु, C कामिणिथी. A हीयडि हरषावूं, B हइडइ हरषावूं. B एक. BC पदमिनी. A परणावूं, B परिणावूं.
४९. A परिणावूं, B परणावूं. C प्राणिइं. B काइ. विनाणइ. C चिंती. B चींतीत्ति. A अंतेउर नेमिकुमर वर सरिसु. B सरस्यु. A समदाय.
५०. A हरिपिइं, C हरषि. A पुहुतु, C पुहतु. AB वन. AB गरगहतु. C जलि पेइंसि. A पक्षि. B चुपंडी. B चुसाल.

कृष्णागर कस्तूरी चूरी, केसर सार कपूरइं पूरी,
चंपक चंदन वासइं वासी, षडोषलीइं नीर निवासी. ५१
नानावासी नीर अबीर वहुलपणि वहिकइ अवनि मझारि,
अभिनव अंतेउर सरसिउ देउर झीलइ देव मुरारि. ५२
इम कूड कमाइ गिउ ऊजाइ, सनकारी सवि नारी,
तव लछमछ गोपी लज्जा लोपी कुतिग करइ अपारि. ५३
गुल गलीउ नइ साकर भेली, इणि परि अतिघणउ ठांमेली;
नेमि प्रतिइं जंपइ अंतेउर, "झीलइ देव अनइ अम्ह देउर. ५४
सामी, तुम्हचु वाधइ वानु, बोल प्रमाण करु जउ मानउ,
एक नारि परणेवउं मानउ, नहींतरि सम देस्यूं जावानु." ५५
रंगइं राही राषइ साही, रूपिणि पाय पडइ ऊमाही;
आलि करइ अति राणी राउली, कमलनाल भरी छांटइ चंद्राउली. ५६
ताल न चूकइ संघली साथइ, पाडइ ताली हसती हाथइ,
हावभाव नव नव परि करए, अमीय समी वाणी मुषि झरएं. ५७
ठाकुर बोल कहइ वरवानु: "नेमि, न कीजइ नीठर वानु;
ठाम नही हीवइ वल करवानु, आ अवसर कन्या वरवानु". ५८
"तुह्मि जाणउ झाझी जेठाणी, अम्ह घरि नारि हुसिइ देराणी;
पाय पडंतां अति दुष आवइ, किसिउं तेणि परिणवुं न भावइ. ५९
कइ जाणउ परणतां सुहेली, निरवहितां पणि खरी दुहेली;
नारी विरुद अछइ ए आगइ, जं जं मनि भावइ तं मागइ. ६०

---

५१. BC केसर कपूरक पूरइं पूरी. A वासिइं, B वासि.
५२. AB ननवासी, C न तु वासी. A नीरइ. A वुहलपुण, C वहुलपुण. A सरिसूं, B सरस्यूं.
५३. A जिउ, B गयु. A नारि. A अपार.
५४. A गुलिउ. C जइं साकर A ठामेली. B इण. BC प्रतइं. B देवर
५५. AC सामी तु तम्ह वाघइ. B करूं. AB जु मानु. AB परणेवूं मानु. AC कइ तुम्ह सम देसिउं जावानु.
५६. AB रंगिइं; रूपणि. B कमल भरी.
५७. AC साथिइं. A हाथिइं, C हाथि. A नव नव करइए. B अमी समाणी. A झरइए.
५८. AB बोल कहु ठरवानु. C हिव; करिवानु.
५९. BC तुम्हे. AB जाणु. A हुंस. A किसि, B किस्यूं. B परणेवूं, C परणवुं.
६०. B जाणु; परणेतां; सोहेली; B पुणि, C पुण. BC दोहेली. A विरद.

कु रे मागइ माणिकमोती मोटां, पोटां नहीअ लगार,
वर घाट विशाला कनक प्रवालां चीर तुंहालां सार. ६१
पिणि कमपा मागइ, वार न लागइ, आ ऊपन्नउं काज:
'रहु रहु प्रिय धीरा, जाचा हीरा आणी आपु आज. ६२
नीम नथी इंधणनी भारी, ते आगिली तुणि परिवारी;
आव्या घरि पणि चहुटइ जासिउ, घृत पापइ ऌपूं किम पासिउ ? ६३
किम खासिउ ऌपउ, सहू को भूपिउं, नही सालणउं सराप;
घरि तेल ते नीठउं, मिरी न मीठउं, वानां जोइइ लाप. ६४
तुझे हइइ न जाणउ, किंपि न आणउ, वली बहुलु तंबोल,
जोईइ घर सारू रूडउ वारू कुंकुम केरु रोल.' ६५
वलतूं नर जु फाडइ वांकउ, नारी वदन करइ तव वांकउं;
वली वचन जु बोलइ 'वाली,' नारी भणइ, 'जा जा रे हाली. ६६
जा जा रे हाली,' लज्जा टाली, बोलइ वांगड बोल;
घर-अंगण छंडइं, कंदल मंडइ, नीठर थई निटोल: ६७
'हुं सदा अणूरी, एक न पूरी तइं पुहुचाडी आस;'
इम ऊठइ हूंकी, 'रे रे सुपी तुझ-सिउं सिउ घरवास ?' ६८
हठि चडी हिहणवा हाकइ, पापिणि पति मारेवा ताकइ;
जोइ पाटलउ पडीउ पासइं, नर थरहर धूजंतउ नासइ. ६९
तु रे नासइ नर थरहर धूजंतउ, दैव प्रति दिइ राडि;
ए भरीय अणत्थिइं तइं मुझ मत्थिइं भागी कांइं कुहाडि. ७०

---

६१. A त रे; नही.
६२. A ऊपनुं, B अ ऊपन्नू. C प्रीअ.
६३. B नींम. AB ते पाछिली. BC पुण. C चुहटइ. C पखिइ; ऌखउं. B घास्युं.
६४. B घास्युं. AB ऌपूं. B सहूइ. B भूख्यूं. A सालणूं. B तो. A नीठयूं. AB मिरीय. AB मीठूं.
६५. C हीइ. B जाणु. B आणु. B बहुल. AB रूडु.
६६. C वलतु. AB वाकुं. AB वांकूं. A जो बोलइ
६७. AB लजा. C बंगड. A घरि अंगणि. C थइअ
६८. B पहुचाडी , C तइं पुहचइं सी आस. B तुझ स्यूं स्यु.
६९. C हिहणावा. AB पाटल. A धूजंतु.
७०. A धूजंतु. B प्रतिइं. A दि. BC भरी.

नारिइं नर ताजिउ गाढउ लाजिउ, मेहलइ घर घर वात;
देसाउर केरुं कोइ नवेरउं, पूछइ तव संघात. ७१

दूरि जमाइ जातउ जाणी, आवइ पीहर, चेडि ऊजाणीं;
'कां रे हिली हीआनी नाठी, गयउ नाह, तूं गाढी घाठी !' ७२

तव सा हिइ विमासइ ऊंडउं, 'जाइ नाह नही अम्ह रूडउं;
एह तणउं आणिउं घरि षाजइ, ए जं बोलइ तं सवि छाजइ.' ७३

प्राणइ पति पाछउ तेडावइ, ते बापडउ वली घरि आवइ,
त्याहर पछी जं नारी अणावइ, ते ते कायर वेगिइं ल्यावइ. ७४

पुरुष हुइ पंचानन तोलइ, वलतूं नारी वचन न बोलइ;
जिम जिम कायरपणउं प्रकासइ, तिम तिम नर गाढेरउ घासइ. ७५

जउ नर फिरतां देउल देषाडइं, तु ते नारी न चडइ आडइ;
जिम जिम नर नीसत सत छांडइ, शांणा आगलि सुंडल मांडइ." ७६

जंपइ नारायणनी राणी, " निसुणउ नेमिकुमर अम्ह वाणी;
उत्तम मध्यम हुइ नरनारी, जोउ राजन, रिदय विचारी. ७७

कु रे जोउ नारी रिदय विचारी, उत्तम एहवी हुंति;
सुषिणी प्रीय-सुषिइ, दुषिणी दुषिइ, नेहा नवि मूकंती. ७८

सा अति सुकुलीणी, प्रिय गुणि प्रीणी, प्रमदा प्रेमरसाल;
सोहइ शशिवयणी, वर मृगनयणी, चतुरि न चूकइ चाल. ७९

दानि करी दक्षिण करि वरसइ, सीलइ सीताना गुण पुरसइ,
पुण्य करइ नइं पाप निवारइ, ते कुल एकोतर सु तारइ. ८०

जं जं नरनइं मनि ऊबीठउं, तं नारीनइं न गमइ दीठउं;
कुवचन किसिउं न बोलइ, वालइ धन अंगणइ सा सुंदरी माल्हइ. ८१

---

७१. A नारिं. B ताजयुं. लाजयु. A मेल्हइ. B नवेरुं. A नवु संघात.
७२. A जातु. B पीहरि. B हली, C हल्ली. A हीयानी, B हइआनीं. B नाह हवि तूं.
७३. B सा हइ. AB ऊंडूं; रूडूं. AB तणूं. B आण्यूं.
७४. A प्राणि. AB वापडु. C त्यार पछि. A वेगि.
७५. A पुरुष पुहुवि पंचानन. AB कायरपणूं.
७६. BC जु. A जउ फिरतां, C जु फिरतां. A चडिइ. B छंडइ. B स्याणा; सूंडर.
७७. B निसुणु. B रिदयि, C हृदय.
७८. A तो र जोउ. C हृदयि. C प्रीअ सुखीइ; दुखीइ दुषिणी. B नेह.
७९. C सुकलीणी. Bमां 'प्रीय गुणि' ए शब्दो नथी. C प्रेमि रसाल. BC ससिवयणी. B चतुर.
८०. B दानिइं. A सील्लि. C शीलिइं. C शीताना; पुरिसइ; एकोत्तर.
८१. B जं जं मनि भरतार. AB ऊबीठूं. AB दीठूं. B किस्यूं. A अंगणि. C घर अंगणि.

उत्तम मध्यम नारि न सरषी, स्वामी, कांइं न परणउ परषी !
तुझ बंधवा राज निरवाहइ, एक वहुअर सिउं नही निरवाहइ ? ८२
तु रे चाहइ अंतेउर वींटिउ, देउर, किमइ न मूंकइ केडि !
प्रीछवइ रसाले वचन सुंहाले, नेमि, न कीजइ जेडि. ८३
हिवइ थाउ ढीला, अति अडसीला किम न थईइ, देव;
अम्ह सिउं संतापु ? ऊतर नापु, ए तुम्ह विरूइ टेव." ८४
नेमि प्रति परणवूं न भावइ, उत्तर देतां मेलि न आवइ;
हा न कही, तिम ना न कहाणी, 'मानिउ मानिउ' बोलइ राणी. ८५
तु रे बोलइ राणी, श्रवणि सुहाणी, वाणी अमीय समाण;
ते नयरी परिसरि समुद्रविजय-घरि हरिनइं कीधउं जाण. ८६
कन्या वरवानूं नेमि पितानूं करसिइ वचन प्रमाण,
सुरकिंनर जोसिइ, रूडउं होसिइ, महीमंडलि मंडाण. ८७

अथ कलश

एमइं मन ऊमाहि माइ सरसति सिर नामी,
समयरत्न गुरुराय पाय पुण तेहना पामी, ८८
पुहुवि-प्रसिधउ प्रगट प्रथम अधिकार सुणाविउ,
नेमि सहित परिवार नयरि आणंदिइं आविउ; ८९
परिणावा उत्सक हुयां, किम पूजइ मननी रली,
लावण्यसमय ते बोलसिइ जु लहिसिइ अवसर वली. ९०

इति श्रीरंगरत्नाकराभिधे श्रीनेमिनाथछंदोऽधिकारे
प्रथमोऽधिकारः संपूर्णः ॥

---

८२. C सरिषी. A तझ बंधावचा राज न वाहइ. C राज नर्वहइ. A सुं, B स्यूं
८३. A तु रे चाहि. AB किम्हइ. A केड; जेड.
८४. BC हिव. B किहमें. B अहमनइं स्यूं संतापु.
८५. B परणेवुं, C परणवउ. AC ऊतर. C मानिउं.
८६. A त रे AC अमीअ. C नयरह परि. A कीधूं
८७. A वरिवानूं, C वरिवानउं. A करिसि, C करिसिइ. A सुरु, रूडूं.
८८. A सरि; समइरत्न; पाय पुण तेहना पुण पामी.
८९. A सुणाव्यु, B सुणायु. C परिवारि. B आयुं.
९०. BC हूआ. AB रली. A लावण्यसमइ. C बुल्लसिइ. A जां होसिइ.
A इति श्रीरंगरत्नाकराभिधे छंद प्रथमाधिकारः ॥
C इति श्रीरंगरत्नाकराभिधाने प्रथमोधिकारा ।। छ ।।

द्वितीय अधिकार

दूहा

ब्रह्मा-वंश विभासती, सती—शिरोमणि मात,
सादरि सेविसु शारदा, जाणि जगि विख्यात. १
सेवक ऊपरि करि कृपा, सामिणि, नयणि निहालि;
पूरविलउं तइं पडिवज्यिउं, ते प्रतिपन्नउं पालि. २
मात, मया करि मझ भणी, आवीय अवतरि अंगि;
जिम बीजु अधिकार हुं मांडउं मननइ रंगि. ३
वलतुं जंपइ सरसती, ' मइं तुझ पुहुवि प्रसिध,
आगइ अप्पिउ वचनरस, वली विशेषिइं दीध.' ४
लद्धउ वचनरस सरस मइं, सुणिज्यो जे जगि जाण;
नेमिकुमर वर परणसिइं, करसिइं तास वषाण. ५
हरि हरषिउ हीअडइ घणउं, हरष्या दसइ दसार;
देसि-विदेसि विलंब विण जोई कुमरी सार. ६
जोइ जोइ कुमरी सार, वली न लाइं वार;
जुठला नेमिकुमार, रषे पतलइ. ७
आगइ दोहिला मनाव्या, आज चिंतइ गोपीराज,
वडइ प्रमाणि काज वंछित फलइ. ८
जोवउ जेहनइं मस्तकि छत्र; मेहलीय देसनां सूत्र,
पितानइं पूछइ पुत्र रभस भरे. ९

B अने C मां छंदनुं नाम नथी.

१. A शरोमणि, B सिरोमणि. B सामिणि सेवसि सारदा.
२. B सामणि, A पूरवलुं, B पूरविलूं. A पडिवजिउं, B पड़िवज्यूं. A प्रतिपन्नूं, B प्रतिपन्नू.
३. Bमां आ कडी नथी. A मागूं,
४. B वलतुं बोलइ. C माइं. B तूं पहुवि. **A** अग्गिइ, B अगइ. A आपिउ, B आप्यु. A वशेषि, B विसेषइ.
५. A दिध, B दिद्ध. B ते सरस मइ. A सुणियो जे जगि तुम्हे जाण. C जुगि जाण. A कहिसिउं, B कहिस्यूं.
६. A हरिषिउ. B हइडइ हरष्यू घणूं. B देसविदेस. A वण.
७. B वलीअ. BC लागइ वार. A तुठला.
८. BC गोपीनु राज. C वड प्रमाणि.
९. AC जोउ; मेल्ही, B देसनूं. AC पितान पूछइ पुत्र.

आवइ साहमा वेवाही, चतुर ते कन्या चाही,
मूरष मोकल्या वाही आपुलइ घरे. १०

जोडावाडइ जे मिलइ, तिसी नहीं को नारि,
तिणि कारणि घरि घरि भमइ हरि द्वारिका रि मझारि. ११

उग्रसेन-घरि अंगणइ सषीअ तणइ परिवारि,
रमती दीठी रंगभरि राजलि राजकुमारि. १२

रूपइं करी रंभा जिसी, कइ उरवसी समान;
त्रिभुवन मांहि न ऊपजइ बिहुं त्रीजउं उपमान. १३

कोमल अंगि कला घणी, रंजइ नव नव रंगि;
हरि हरषइ निरषइ घणउं वइसारी उछंगि. १४

दंत जिस्या दाडिमकुली, जीह अमीनउ कंद;
अवनि-वदीता जे हता जीता वयणे चंद. १५

जीता जीता वयणि चंदला, त्राठा गया गयणि नाठा,
दिवज ऊगता माठा लाजिं मरइं. १६

जीतां जीतां नयणे हरिण, त्राठां करइ हृदइ काठां,
वेगइ जु वेडि पइठां छूटा तु शर इं. १७

जीता जीता गतिइं जोउ गजपति, क्षणइ न पामइ रति,
हइइ विमासी मति डूंगरे गया. १८

जीता सीहला कटिने लांके, कांइ न चालिउं रंके,
आवइ दीहडे वंके दीसता रह्या. १९

---

१०. AC आवइ इस्या साम्हां वेवाही; कन्या वाही. B मुरषने. B अपुलइ.
११. B तिण.
१२. A आंगणइ AB सषि.
१३. AC रूपि; त्रिभुवनि. A त्रीजुं.
१४. C हरषइ हरषइ घणउं. AB घणूं
१५. B जस्या; कली. A अमीयनु, C अमीअनु. B हवा.
१६. BC वयणे. B घाठां गयणंगणि नाठा. A दिवसि; लगि मरइ.
१७. BC करिय हृदय. A वेगि जइं. B कूटा तु सर ए. C छूटा तु नासि मरइ.
१८. B गतिं, C गति. B हइडइ. C होइ विमासी मासी मति डूंगर गया.
१९. A मां आ कडी नथी. B लंके; चाल्यूं; आवे. C दीहाड वंके.

दूहा

वेणइं वासग जित्त जव जइ पइआलि पइठा;
जीतां रातां कमल करि जइ जल मांहि नट्ठा. २०

हरि मृग हरि हरि कमल वसतां एकइ ठाइ,
हरि जीणइं जीता कुमरि नाठा दह दिसि जाइ. २१

सोहइ सरली नासिका, अति अणीयाली अंखि;
भमहि कसिण, भमरा भमइ भूली भमरी भ्रंति. २२

कला बहुत्तरी-परिवरी हरि-मनि वसी अपारि;
धन धन ते विहिहत्थडा जेणइ घडी ए नारि. २३

उग्रसेन अवसर लही बोलइ एहवी वाणि:
"कइ प्रभु, मेलउ नातरूं, कइ परिणाविसु प्राणि ?" २४

क्षण इक हरि हीयडइ हस्या, रंज्या वचनि विनाणि;
मेलिइ मेलिउं नातरूं, चिंतिउं चडिउं प्रमाणि. २५

चिंतिउं चडिउं प्रमाणि, महीयलि विस्तरी वाणि,
प्रगटीय हरषह षाणि, आरति टली. २६

धाई धसमस गाइं गोरी वली अंतेवारा सोरी,
वंछित केशव ! तोरी आशा फली. २७

बइठा वइठा फूटडा जे फांदि काढी, कुंकमि केसरि गाढी,
पीली तेहनी दाढी, टीलां करे. २८

B अने C मां छंदनुं नाम नथी.

२०. A मां आ कडी नथी. C वेणि. B वासिग जित जवा जइ, C पायालि. B जीतां रातां कल कमि. C जीतां रातां कमल कमि जइ जइ जल माहे नठा.

२१. A कमलि AB एक AC हरि जाणइ. B दसि.

२२. A कसिणि. B भमरा भणइ.

२३. AC बहुतरि. A मुनि. B सी अपार. A ते विहहत्थडा, B ते वहिहत्थडा. AC जेणि.

२४. A मेलु नातरू

२५ AB एक. B हइडइ, C हीअडइ. C वचन. A पछइ मेलिउं. B मेल्यूं नातरूं; चींत्यूं चड्यूं

२६. B चींत्यूं चड्यूं B महीअली. A प्रगटी. B हरिषषाणि.

२७. C धन धसमस.

२८. B फूटरा; केसर. AC डाढी. B पीलइ.

जोड जोडनी नही निरोल कीजइ इ ति रंगरोल,
दीजइ फूल तंबोल दक्षण करे. २९
जे जगि जोसी-ज्योतिषी ते तेडया तत्काल;
लीधूं लगन विलंब विण चउमासइ चउसाल. ३०
सरस रसाले वड वडी, वर पकवान कमाइ;
जेवड त्रेवड त्रेवडी, किम ते वडी कहाइ. ३१
माहवि मंडप मंडणी मंडावइ मंडाणि;
जो ऊपरि कीधी किसी, जिसी न दीसइ वाणि. ३२
चाचरि चउरी ताडीइ, चीर विछाहइ चंगा;
माहवि मोटउ मंडीउ इम जगि जासक जंगा. ३३
चोपी चाउरि पाथरइ मंडप मांहि विशाल;
वइठउं सोहइ साजनउं, गाइण गाइ रसाल. ३४
मंडइ अनुचर चाकुला, आलस अलगां छोडि;
भाणां वाणां कनकमइ कचोलानी कोडि. ३५
वइठी छेक विवेक धरि, उपइ पडही पांति;
धव धव धव धुंसट पडइ जिमइ अढारइ जाति. ३६
नीली सूकी वुरि घणी मूकी फलहुलि फार;
पोरिकि पुरमां पडहडी साकर सरस अपार. ३७
चडचड चार उली चतुरा प्रीसइ परघल छेक;
वर वरसोलां वाटली फलहुलि वली अनेक. ३८

---

२९. B जोड रती नही निरल कीजइ ते रंगरोल दीजइ. C जोड रती नही निरोल कीजइ ति रंगरोल दीजइ. C दक्षिण.

३०. B जोतषी, C योतिषी. B ततकाल, C ततकाली. C चुमासइ.

३१. B किम त्रेवडी कहाइं.

३२. BC माहव. A मंडपि; मंडावी मंडाणि; जिसी किसी.

३३. BC चुरी. B ताडीयइ. A विछाहि, B विछाया. AB चंग. A नाहवि. B मंडीयउं. AB जंग.

३४. A वइठूं सहइ साजनूं. B गुण गाइ, C गाइणि गाइ.

३५. A चाउर चाकुला, B अनुचर चाकला, C अनुचित चाकुला. B भाणा त्राणा.

३६. B धुरि. AC पोडी. B मांति; धव भव धव.

३७. B फाल. AB परमा.

३८. BC चारुली. BC परिघल. B थोक. BC फलहुलि अवरि अनेक.

मांडी मुरकी नइं हेसमी पुलकी जिमतां जीह;
गुलइं गुली गुलपापडी गुलपण एतइ लीह. ३९
मोटा मोदक मूंकीइ मधुरा अमृत समान;
षरहर षाजां चूरीयइ, बहुत परि पकवान. ४०
दुबलि षंडिय वलि छडि तीरि परिइं तीषालि,
रांधी रांधणहारीइ सारी सोवन सालि. ४१

सारी सारी सोवन सालि, सु परिसइ निहालि,
आणीऊ रे वइषालि, वली मूंकइ मंडोरा मगनी दालि;
नामइ घृतनी नालि, सालणां तणीअ पालि बांधइ वली. ४२
जिसिइं जिमतां तरस जाणी, सरस साकर पाणी,
मेल्हयां विछेदिं आणी वाटलां भरियां. ४३
जीरे रे करी सनाढा, वास्यां कपूरिं गाढा,
प्रीस्या करंबा टाढा कूरना करिया. ४४

दूहा

नामइ घलघल घोल घण, आवइ निर्मल नीर;
दीध वली सोवन सिली, कर-चोषालणि चीर. ४५
ऊठ्या सजन जिमी जिसिइ दीजइ तव तंबोल;
सदलां फोफल फूटडां पान प्रतेकिइ सोल. ४६
दीजइ रंग लिवंग वर, वर केवडीउ काथ;
टीलां टसरक काढीयां, सोहइ सज्जन-साथ. ४७

---

३९ A मरकी. BC फुरकी जिमतां. A गुलि गली. B एती. C गुलपणइ एवइ लीह.
४०. B मोदिक; मूकिजइ. AC चूरीइ. B परइ.
४१. B खडी, C खंडिअ. BC तीर. C परइं. A तीषाल B रांधणहारींयइ.
४२. A सु परिसीनी. B वली चडइ घणीं मंडोरा मुगानी दालि. C मुंकी; मुगनी.
४३. B जिसइ; साकार. B मेहल्या, C मेहलीआ C भरिआं.
४४. BC जीरे जीरो करी. B वास्या कपूर गाढा, C कपूरिं वास्या गाढा प्रीस्या गाढा प्रीस्या.
A कूरनां करां, C कूरना करिआ.
B अने C मां छंदनुं नाम नथी.
४५. C घलेणा घोल. BC निरमल. B वर चोषालणि.
४६. B दिज्जइ. A पोफल; प्रतेकिं. C षात प्रत्येकिइं सोल.
४७. B लवंग. B काढीयइ, C काढीइ. A सजन, B सजनह.

चोषइ चंदनि छांटणां, केतकि करणी जाइ,
करि करि दिज्जइ केवडा, करि जेवडा सुहाइ. ४८
गिरूउ मरूउ महमहइ, चंपक जंप करंति,
कालु वालु सिरि धरइ, दमणु विमणु दंति. ४९

श्रावण शुदि छठइं दिवसि नेमिकुमर वर-सीसि
षांतइ पूंप भलउ भरिउ, मांडिउ चडतइ दीसि. ५०

मांडिउ मांडिउ रे चडतइ दीसि, भरिउ भलेरु सीसि;
मोह्या मानव तीसि पूंप परइ. ५१
मोटे मोटे मोतीडे जडी, पींटली सोनानी घडी,
पूंप तणेइ पासि चडी कुतिग करइ. ५२
ते रे ऊपइ, तिसिउ नवेरु, जिसिउ धवल मेरु,
फूटडा फूलडा केरु पगर भरिउ. ५३
साचइ साचइ इसिउ असावु, जिसी सरल कांवु,
टुंकइ मयंक लांछु लीलां धरिउ. ५४

आर्या

परिवार सरस हूउ, रायमइ रायपुत्ति परिणयए;
नवरंग नेमिनाहो तव तुंग तुरंगमे चडए. ५५

पधडी छंद

तव चडिउ तुंग तुरंगि, किरि चडिउ पर्वतश्रृंगि;
तिणि जागवइ जगि जंगि, श्रृंगार उपइ अंगि. ५६

---

४८. AC दीजइ. B जेहवा.
४९. A महिमहि. B चंप करंति. AC दिंति.
५०. A छठि, B छट्ठिनइ. B वर सीस. A षांति; भलु. B मांडयु चडत.
५१. A माडिउ माडिउ, B माडयुं माडयुं. A भलुउ भालरु सीसि, B भरयु भलेरइ सीसि.
A मानव नासिइं. B पूंपइ.
५२. B सोनानी जडी: तणे; पासइ.
५३. A त रे, C तु रे. B तस्यु; जस्यु धवलह; भरयु.
५४. B साचउ साचउ. B अस्यु; कांवउ. A धरउ, B धरयु.
५५. AC सारस होउ. चडइए.
B मां छन्दनुं नाम नथी.
५६. A तवइ चडइ तुरंगि. B चडयु परवतश्रृंग. B तेणइ. BC जागतइ.

सिरि मुगट मोटउ वाहि, घण तेज दिनकर पाहिं;
वहिरषा सरषा वांहि, मणि जडचा जासक माहिं. ५७
झलकंति कुंडल कानि, ससिसूरमंडल-मानि,
तिम तिलक सोवनवानि, मम मुंकि मानव मानि. ५८
उर-वरि नवसर हार, तप तपइ तेजि उदार;
जे अवर वर सिणगार, कवि कहइ न लहउं पार. ५९
चालंति यादव जान, मुषि रंगरूडउं पानि;
गहगह्या गाइण गानि, वरसंति अविरल दानि. ६०
वासी सुगंधइं वाट, मारगि छाया पाट;
शृंगारीइ सवि हाट, तप तपइ तोरण त्राट. ६१
माचंति मानव थाट, तिणि जानि कोइ न जाट;
जे वचनि करि वाचाट, ते भटित बोलइ भाट. ६२
कुंकण अनइ कर्णाट, जे देश मोटउ लाट;
एतलइ रंगा घाट, रोपीउ जां वइराट. ६३
खेलंति खेला खंति, ते ताल नवि चूकंति;
वाजित्र वर वाजंति, घण ढोल ढमढमकंति. ६४
सिणगारी सारी नारि, बोलंति मंगल च्यारि;
जव जाइ तोरणवारि, जिन इंद्रनइं अवतारि. ६५

गुषि रही राजीमती निय नयणे भरतारः
जोइ जांनइं परवरिउ वार वार अनिवार. ६६

---

५७. BC मुकट. A जास.
५८. B मस मूंकि. A मानइ मानि.
५९. A तपइ तपइ. B तेज. A परि सिणगार; कहि.
६०. A यान, C जानिं. A रूअडु, B रूयडूं पान. A गायन. C वरिसंति. B दान.
६१. A वरसी सुगंधि. B पाथरइ पाधर पाट, C पाथरइं पाथरि पाट. B शृंगारीय. BC तोरणि.
६२. A नाचंति. B तेणइ.
६३. B नइ. A मोटउ जाट, B गंगा घाट; वयराट.
६५. A सिणिगारइ. तोरणि. B जिन इंद्रतणइ अणुहारि.
आ कडी पछी A मां 'आया अथ हनुमंत पधडी छंद' लखेल छे; B मां तथा C मां 'आर्या' लखेल छे.
६६. C निअणे. A जानि, B जानिइं. A परिवरिउ, B परिवरयू.

रूप अनोपम रंगभरि निरषिउ नेमिकुमार,
तव राजलि रूडी परि पहिरइ सवि सिणगार. ६७

हनुमंत पघडी

पहिरइ सिरि सिणगार सार, आरोपिउ रिदय उदार हार;
झबकइ झाझी झालि गालि, मयमत्ता मयगल-जित्त चालि. ६८
नेउर रमिझमि रणकंति पाय, करि चूडउ रूडउ अति सुहाइ;
घण घुग्घर घाट विचित्र चीर, मृगनाभि वहिकइ वहुत अवीर. ६९
कीधउ अति उद्भुत वेस जाम, क्षिणि फरकिउं दक्षिण अंग ताम;
मुखि धूधूकार करइ अपार, घण अंगि अरति, रति नहीं लगार. ७०
सहीयर कहइ, "देवि, म झूरि, तुझ दुषडां जाज्यो दूरि दूरि;"
तव कवि कहइ, कोविद! जोइ जोइ, कृत कर्म न छूटइ कोइ कोइ. ७१
पसूअ वाडि जे पासइ भरिया, करणइ मरण तणइ भयि डरीयां;
गयउ जनम पडिआ गलि गाला, चिंतइ, कंपइ, न चालइ चाला. ७२
न—न चालइ चाला, पडिआ गाला, ससा सुंहाला धूजि मरइ;
आहणंति मथाला, छेदइं बाला, वांध्या वालां वहुत डरइ. ७३
पंषी पंखाला समरइ माला, करइ पषाला पंख खिरइ;
न—न फावइ फाला, हरिणा काला, नयणि घणाला नीर झरइ. ७४
तव ते नेमिकुमर वरराजा आया तोरणि करीय दिवाजा;
पसूय तणा पोकार सुणिल्ला, सदयपणइ धुरि सीस धुणिल्ला. ७५

---

६७. A निरिषिउ, B निरष्यु. B राजल; परइ; सयरि सिणगार. C सिरि सिणगार
A अने B मां छंदनुं नाम नथी.
६८. B सयर सिणगार; आरोप्यु रिदयि; मइमत्ता; जित.
६९. B रमझिम. C पाइ. AB चूड. A रूड, B रूयइ A घुघर.
७०. AC कीधु. B अद्भत, C उद्भट. B क्षणि, C षिणि. B फुरक्यूं. C फुरकिउ
७१. B सहीअर. A कहि. BC जायो दूरि. B करम.
आ कडी पछी A अने Cमां 'अथ रूपक' तेम ज B मां 'रूपक' ए शब्दो छे.
७२. A वाड; कुरणइ. A मइं. B भय. A डरयां. C गयु. A चिंति कंपि.
७३. B नव. A छंदि छालां वालां वहुत केवि डरइ. C छेदि वालां. B वहुत रडइ.
७४. A पंषि मरइ, B पंषि परइ. B फालइ फाला. A नोरि.
७५. B वरराजा तोरणि आव्या. C करी दिवाजा. AC पसूअ. A सुणिला, B सुणियल.
B सदइपणइ. A सांस धुरिला. B धुणियला.

है धिग पडउ इणइ परणेवइ, चिंतइ नेमि, न सरसि इमेवइ,
रीव करंतां जीव वधेसिइ, प्रहि ऊगमि परणवुं करेसिइ. ७६
सामलवन मनि साचउं जाणी, कूंयरि तणी कृपा मनि नाणी,
पसूअ-पास छूटंता छोड्या, नवि छूटइ ते त्राटक त्रोड्या. ७७
कु रे त्राटक त्रोड्या, पास विछोड्या, पातक मोड्यां पसूअ तणां;
रही रंगि रिमाडया, वनि पहुचाडयां, के ऊडाडयां गयणि घणां. ७८
निरति निरधारी, वात विचारी, परणउं नारी नीम नही;
सामी सामलिउ वेगइं वलिउ, नेहि न कलिउ नेमि सही. ७९
वालिउ पुण न वलिउ जि न जूठउ, वरिस एक दक्षिण करि वूठउ;
संयम लेई गिउ गिरिनारी, तव राजलि झूरइ निरधारी. ८०
जीवीनूं जीवन सामलीउ, राजलि पेषीउ पाछउ वलिउ;
तिणि अवसरि जे दूषडां वीतां, पार न पामउं तेअ कहीतां. ८१
कवि कहइ बोल बि-च्यारइ, तुहइ अवसरि कह्या पाषइ किम होइ.
अधिकइ-उछइ षोडि न लागइ, कव्यां कविश्वरि अविरल आगइ. ८२
राजकुमरि राजलदे राणी, टलवलइ जिम मीन थोडइ पाणी;
अडवडती ऊंवरि आषडइए चेतरहित पुहुवीतलि पडइए. ८३
पाषलि फिरी वल्या परिवारा, वालिउं चेत करी उपचारा;
"जी जी जगजीवन साधारा," जंपइ "प्रीउ प्रीउ नेमिकुमारा." ८४

---

७६. A पडु. B एणइ. A चिंतइ नेमि न सरसि इमेवइ; B चिंतइ न र रिसइमेवइ. A रीठ, B रीच. A परगणूं करेसि, B परगणू करेस्यइ.

७७. B सावलवन. A साचूं. B पसूय. C पसूअ पास छूटइं ते छोड्या.

७८. A त रे. A पासक मोड्यां. A रंहि रंगि, B रहि रंगि. B रमाडया, C जिमाडयां A ऊडयाया.

७९. A परणूं. B नारी एह नहीं. A वेगिं. B वलियउ. A नी कलिउ, B न कलीयउ.

८०. B वाल्यु पण न वल्यु जिन जूठु. A जिन तूठउ. A वरस्य, B वरस. B दक्षण कर. A संजम. A गयु, B गउ. B राजल.

८१. AC पेषि. AB ते पाछउ. B तेणइ. A पामूं. AB तेअ कवीतां.

८२. A च्यारिइं. C कहा. AB हुइ. B कवीश्वर विरलइ.

८३. A राजलिदे. BC विलवइ. AC जिमतिम थोडइ. C अपडइए. B पहुवी.

८४. B वाल्यूं चेत. A प्रिये प्रिये, B प्रीय प्रीय.

षिणि पाटइं षिणि वाटइ लोटइं, षिणि ऊंबरि षिणि ऊभी ओटइ;
षिणि भीतरि षिणि वली आंगणइए, प्रीय विण सूनी वलीआं गणइए. ८५
करुण सरिइं थानकि को रडए, जण जाणइ नारी को रडइए;
जाणि ऊजाइं पइठी उरडइए, प्रियविरहि राजलि उ रडइए. ८६
षिणि षीजइ षिणि सूइ पोलइ, षिणि पूंदइ सहीयरनइ टोलइ;
क्षणि ऊठी जाइ ऊतारइं, हार दोर कंकण ऊतारइ. ८७
ऊतारइ हार कि सवि सिणगार कि, सरला हार कि भार करइ;
तप तपतां हीर कि चीरच्यां चीर कि, सकल शरीरि कि सोह हरइ. ८८
मणिमाणिक दूर कि कीधां चूर कि, नाख्यां दूर कि दूरि रही;
कंकण फोडंति कि जड त्रोडंति कि तनु मोडंति कि मोहि ग्रही. ८९
वालिंभवाट जोइ आंपडीए, रहइ राजलि पडकीइं खडी ए;
रमण-रूप आलेषइ पडीए, पूजइ फूल तणी पांषडीए. ९०
रोतां अंजन ग्यां ऊपडी ए, प्रीय पाषइ भागी भूषडी ए;
धरि उधन माता कूषडीए, मिल्या पाषइ मेल्ही सूपडी ए. ९१
राजलि इम आणइ आपडी ए, मुखि नवि बोलइ वहुभाषडी ए;
जे सिर वरि सोवन-राषडी ए, झालइ सोइ करी राषडी ए. ९२
पापीअडउ वापीअडउ प्रिअडु संभारइ, सो वासइ निअडउ मधुर सरइ;
की गाइ वली संभारइ मेहनइ मोरा, प्रिय विण प्राण हरइ गाढेरा. ९३
न गमइ अंगि रतूकल फाली, राजलि नेमिविरहिं विकराली;
अलगी नांषइ सोवनत्रोटी, जिम जवरोटी कागइं वोटी. ९४

---

८५. B मां आ कडो नथी. C प्रीआ A गणइये.
८६. A कुर सरिइ. B नारी को रडए. A पइठी रडए. B जाण्यूं जइ परठो उरडए प्रीय-विहरइं राजलि उ रडए. C रडए.
८७. B क्षणि; सूइ क्षिणि वोलइ. C सूइ षिणि षोलइ. B क्षणि.
८८. A उतारइ तार. AB सिणिगार. C सरीर.
८९. BC लाष्यो दूर. BC फोडंत; त्रोडंत. A मोहंति.
९०. BC वालंभ A वार्टि; अंषडोए. A रहि. B षडकीयइं.
९१. A अंजनि गियां. C प्रिअ. B धरीयु; मेहली.
९२. A सिरिवर सोविन; B सिरि वरि सोवन. A जाली सोहइ; B जाली सोइ.
९३. A प्रीप्रीअडु वापीउडु संभारइ; B पापीयडुं वापीयडो प्रीयडु संभारइ. AB नियडु. A मधुर सरि. B की गाइ गाइ मोरा. C की गाइं की गाइं मोरा; हरइ गामोरा.
९४. B राजल नेमविरह. A लहकइ नांषइ सोविनत्रोटी. A वार्गि, B वार्गिइ.

जिम जवरोटी कागइं बोटी, धणचर-बोटी थई अति षोटी;
लागा धन कोटी, मानइ मोटी, काजि न आवइ तिम त्रोटी. ९५

गिउ गोफणु त्रूटी, वेणी विछुट्टी, झटकइ नेउर ग्यां फुट्टी;
आभरण अषूटी भाज्यां कूटी, दयामणी दीसइ छूटी. ९६

सहीय भणइ, "सुणि देवि, कहि अन्न करु कि ?" "अंअः अंअः"
"ऊगटि अंगि करेवि, पंक परिहरुं कि ?" "अंअः अंअः" ९७

"नवउ ति नवसर हार, सा गलि धरूं कि ?" "अंअः अंअः"
"कुसमसेज सुकुमाल सोइ पत्थरूं कि ?" "अंअः अंअः"
विरह-ग्रही कहइ राइमइ, "रे रहि रहि सषि ! सिउं झषइ ? ९८

अणषि करइ तुझ वयणलां वाल्हा नेमीसर पषइ. ९९

सुणि सुणि सहीयर आज राज मुझ न गमइ दीठउं;
भोजनि कूर कपूर पूर नवि लागइ मीठउं. १००

कोमल कमल-मृणाल विरहदव-झाल न झल्लइ;
प्रिय दीठउ परतखि सोइ मन मांहइ सालइ. १०१

तरुणपणइ अरणइ करइ, चंद्र-चंदन नवि गमइ;"
कहइ "मन मोरुं" रायमइ, "नेमीसर सरसिउं रमइ. १०२

हूं लीजउं प्रिय-प्रेमि, प्रीय पण प्रेमि न लीजइ;
हूं रीझूं प्रिय पेषी, प्रिय पेषी मझ-पे षीजइ. १०३

---

९५. A कागिं. AB लागी. A मानि, C मानिइं.

९६. AB छूटी; फूटी. A आंभरणि. C आभर्ण. B भ्यांज्या.
आ कडी पछी A अने C मां 'अथानि परिछंदांसि । अणषीय' लखेलुं छे. B मां 'अथ कवित्त भाषया' लखेलुं छे.

९७. A कहि करुं कि अं अः C देवि अन्न करुं कि अंः अ A ऊगट. B पंकि.

९८. B नवु; सार गलि. C सेजि. B सुकमाल.

९९. AC विरहि; कहि. A रायमइ. B तंव वयणलां; ते वाहला.

१००. AB मझ. B गमय. A दीठुं. B भोजन. A कूर कपूर. AB मीठुं.

१०१. AC न झालइ. A दीठ. C परतखि. A सोहइ. AC माहिं. B सल्लइ.

१०२. A अरुणइ. B अरुणइय. C तरुण अरुण अरणइ. C चंदन चंदउ. AC कहि. B देव नेमीस्वर स्यूं रसइ.

१०३. AB लीजूं. B प्रीय प्रेम, C प्रिअ प्रेमि. C प्रीअ पुण. B प्रिअ देषि, C प्रिअ पेषी. B प्रीय मुझ देखइ षीजइ. C प्रीअ मझ पेषी षीजइ.

जइ मझ सरिषी नारि थूक जिम अलगी लांपइ;
सिउं कीजइ सषि ! देषि, दुष्ट जउ दैव न सापइ ?" १०४
विलवंती विरहइ भरी, वाला बोलइ गहिवरी;
अणप्रीछिइं अपराध विण कहि प्रीयडा ! कां परिहरी ? १०५
कहइ राजलि, 'जिनराज ! राज सिइं थयुं ऊवीठउं ?
रिधिरमणि सुख मेल्ही देव ! डूंगरि सिउं दीठउं ? १०६
भोगवि मानव-भोग, योग जु वडपणि लीजइ,
तु साचइ मन शुधि सहित पछइ तप कीजइ. १०७
अट्ठ भवंतरि नेहलु, नेमि ! न छेहु दापियउ;
भव नवमइ तइं नाहला ! ए ऊपजतु कां राषिउ ? १०८
दीजइ जोसी दोस, जोस नवि जोयउं कांइ;
परगट पुहवि-प्रधान कान्ह गयउ कूड कमाइ. १०९
तोरणि आविउ निठुर नाह, नाठउ दुष लाइ;
सहीयर ! साचउं देषि, आज अम्ह को न सषाइ. ११०
तुं हइ तुं, हूं रायमइ, अवर पुरुष सवि परिहरुं;
हत्थिइं हत्थ न मेलिउ, प्रिय ! सोइ हत्थ मत्थइं करु." १११
तिणि अवसरि चउपन्न दिन्न जिन दीष्या अंतरि;
आसो मासि अमासि ज्ञान पामिउं पातक हरी. ११२
आवइ चउसठि इंद, चंद नागेंद नरेसर;
समोसरण विरचइ विशाल बइसइ परमेसर. ११३

---

१०४. B मुझ सरपी; अलगूं. स्यूं. A जु. B सांकइ, C सांषइ.

१०५. A विरहि. B गहवरी; अणप्रीछइ; कांइ. C प्रीअडां तइं कां परिहरी.

१०६. A कहि. B राजल. A ऊवेटूं. B ऊभीठूं A देवि. A डूंगरे स्यूं. A दीठूं.

१०७. B मान भोग; जोग जो वडपण. C पछइ तपछइ तप कीजइ.

१०८. C भवंतर. A छेह. AC दाषिउ.

१०९. A जोस तइं जोयु कांइ. C जोयुं. B कन्ह. AC गिउ.

११०. A आयु, B आव्यउ. AB साचूं. B कोइ न.

१११. A नाह तु हइ तू हूं रायमइ; B तु हइ तु हूं रायमइ; C तु हइ तु हूं रायमइ. A हथिइं हथ, B हत्थियइ हत्थ. B मेलीयउ. A सोहइ. B मत्थइ धरूं.

११२. B तिण. BC चुपन्न दिन. A मां 'जिन दीष्या अंतरि' ए शब्दो नथी. B पाम्यूं. C पातग.

११३. B रचइ. B परमेस्वर, C परमेसरी.

गयणंगणि देवो मिली दुंदुहिनाद सुणाविउ;
नायक नारायण भणी द्वारिका वधावु आवीउ. ११४

अप्पीय सोवन लक्ख वार साढा सुप्रसिधा,
वधावानइं विमल वस्त्र, भूषण घण दीधां. ११५

तव हरषिउ हरिराज भाववंदण धुरि आणी,
चल्लइ दसइ दसार, साथिइ राजलदे राणी. ११६

इम परिवारि परवरिउ चडिउ विभु गिरिनारि गिरि;
पिक्खेवि सामि समोसरणि देवि पय प्रणमइ आणंद भरि. ११७

पइठी त्रिगढइ जाम ताम राजलि जिन दीठउ;
सोहइ सिर-वरि छत्र, सामि सिंहासनि वइठउ. ११८

पूरी परषद बार पेषि प्रभु-पाय पषालइ;
कीजइ किसिउं वखाण, इंद्र जसु चामर ढालइ ? ११९

सादरि समता आदरइ, मानव मन ए कंति करि;
नेमीश्वर अविरल वाणीइं ए दिइं उपदेस अनेक परि. १२०

अथ रूपक

जिनवर-वाणी सुधा समाणी, साकर पाहिं सरस वषाणी;
चउ-मुहि चउ-विहि धम्म ज भासइ, दया दान पुण अधिक प्रकासइ.१२१

---

११४. A गयणि. A देवि, B देवे. B वधाव्यू आवीयउं.
११५. A अपिय, C अप्पिअ. AB लष.
११६. A साथि, B सथि. A राजलिदे.
११७. B इम परिवारइ परिवरयु चडयु चतुर गिरनारि.
C इम परिवरिइं परवरिउ चडिउ चतुर गिरि.
A पिष्येविणु सामि समोसरणि दइय पइखइ आणंद पूरि.
B पेषविण सामि समोसरणि देषइ प्रणमइ आणंद भरि.
११८. B दीठु. A सिरि छत्र. B स्वामि सिहासण. AB वइठु.
११९. B कीजे किसुं. AB जस.
१२०. A समता आणि. BC कंत. B वाणीए; दीय.
B मां 'अथ रूपक' ए शब्दो नथी.
१२१. B जिणवर. A पाइं, B पाहइ. A चुमहि वइठु विह धर्मज भासइ. B चउ मुहि चउ
विह धम्म विमासइ. A पुण्य, B पणि.

" जे जातु जीवडउ किवारइं, मानइ मानव मुहिआं मारइ;
ते नर निश्चइ बे भव हारइ, नवि मारइ ते वेउ समारइ. १२२

जीव वधी जे पोसइ पिंडह, ते नर पर-भवि पामइ दंडह;
सहइ वेअण घण आय अषंडह, जाइ नरकि थाइ शतषंडह. १२३

थाइ शतषंड कि आय अषंड कि, वाजइ दंड कि मूंड भणी;
देषी दुष रोकि कि आणी शोक कि मेल्हइ पोक कि जीव घणी. १२४

धगधगती सूइ कि रोपी भुइं कि सूवा हुइ कि सेज इसी;
कलकलइ शरीर कि मागइ नीर कि तपत कथीर कि पाइं हसी. १२५

सडसड सांडसीए सिउं त्रोडइ, हाथ पाय सिर संधि विछोडइ;
घाणइ घाती पिंड कराइ, पुनरपि रूप हतूं तिम थाइ. १२६

टाढि तणी जु जंपइ वातइ, अगनि माहिं ऊपाडी घातइ;
थाइ तापइ सिउं जु भाषइ, तु असिपत्र तलइ ते राषइ. १२७

षडषडतउं पुहुवीतलि पडतउं, तसु पानडउं नव नव परि नडतूं;
षंधि संधि घण अंगि अडतूं, छेदी नाक जाइ रडवडतूं. १२८

जिम जिम परमाधामी मारइ, परभवना सुखि पाप पचारइ,
तिम तिम रंक तणी परि रगइ, पाय लागी लगलगणा लगइः १२९

' मागूं मान न मारु, वारु, दया करउ, हुं दास तुम्हारउ;'
तिम तिम परमाधामी अधिकेरी नीपावइ वेदना नवेरी. १३०

' मइं विषमी वेदन न पमाइ', इम जाणी ऊजाइ जाई;
नरग तणउ ए परगट परतउ, गली पडइ नासी नीसरतउ. १३१

---

१२२. C जीतु. A जीवडु, B जीवडुं. B किह वारइ. A मानि; मुहियां; नश्चि नवि मारइ.
१२३. B पिंड. A वेयण आय. AC नरगि.
१२४. AC दुख देषइ रोक कि आणी.
१२५. B सेज जिसी. C होइ कि सेजि इसी. A कलकइ B पाय हंसी.
१२६. A सांडसीए त्रोडइ. B सांडसीए स्यूं त्रोडइ. C शिर सांधि. B घाण घाती; करावइ.
१२७. B स्यूं जु. B तु इसिपत्र वृक्षतलि राषइ C थाइ तापइ भुंजु भाषइ.
१२८. A षडषडतूं. C षडषडतुं. AC पडतूं. B तस. A पान. C खंधि; वडतुं
१२९. A पइ लागो. B पाय लागो न लगणा लगइ. A लगलग लगइए.
१३०. B म मारुं वारु. C तुम्हारु. A तिम परधामी अधिकेरी. AC नीपाइ.
१३१. B वेदना. A तणु; परतु. AC नीसरतु.

कूटी कोइ करइ जु चूरउ, तुहइ जीव न थाइ पूरउ;
झूरइ घण दष लष अणुसरतु, पाछलि कर्म न जोइ करतु." १३२
जंपइ नेमि सुकोमल वाणी, " निरदयपणां तणां फल जाणी,
जीवोजीव तणु वध टालउ, अहनिसि आपइं आप पखालउ. १३३
दानइ जस कीरति जयकारा, दानइ लाभइ लाछि उदारा;
दान तणा गुण केता कहीयइ, दानइ देव तणा पद लहीयइ. १३४
देव-रयणथी नीम नवेरु, कल्पवृक्ष पाहि अधिकेरु;
त्रिभुवन माहिं अनोपम ओपइ, जे नर जिनवर-आण न लोपइ. १३५
नवि लोपइ आण कि, जे नर जाण कि लहइ कल्याण कि कोडि गमे;
पामइ संयोग कि वंछित भोग कि, रोग न सोग कि तासु तने. १३६
मुषि मीठी भाष कि ललना लाष कि, नही अभराष कि वांक घने,
कीरति सविलास कि घरि उल्लास कि, कीधी तास कि जगत्र-जने. १३७
मदि माता मयगल माचंता, हय हेषारव करि नाचंता;
जे घरि ढमढम ढोल धसूकइ, दानवृक्ष करि कूंपल मूंकइ. १३८
करि कूंपल मूंकइ, स दल न सूकइ, फल वाढ्ढ, कइ फार फले;
जं दीसइ परता गंगलि करता प्रगट पहुनुहता पुहवितले. १३९
घरि नारि नेहाला, सुत सुकमाला, मित्र मयाला, मूल नहीं;
इम त्रिभुवन मांहिं सुरतरु पाहिं ए दानवृक्षफल सफल सही." १४०
जिनवरवाणी श्रवणि सुहाणी राजलि राणी हियडइ आणी;
मोह मय्रण मद मच्छर मोडी मागइ संयम बे कर जोडी. १४१

---

१३२. A पूरु. BC दुष. B अणसरतउ.
१३३. B सकोमल. A निरदइपणां. B तणा. A टालु; अहिनिसि आपिइ; पषालु.
१३४. B दानि; विजइकारा. C दान्निइं. A लछि, C लछ्छि. AB कहीइ, लहीइ.
१३५. C उपइ.
१३६. A संयोगि. B सोक; तास.
१३७. C मुक्खि. AB नही सराष कि. A कीरति तस विलसंति कि करि उल्हास कि.
B कीरति सुविसाल कि घरि उल्हास कि.
१३८. B मदमाता; BC जं घरि. A दानि वृक्ष.
१३९. B गंगल. B पनुता, C पुनेता.
१४०. A नेहाला सुकुमाला; मयला. B पांहि.
१४१. A सुवणि सुहाणी. C हीअडइ. AB मछर. A संजिम.

नेमीश्वर-कर केरइ वासइं सा संयम लिइ स्वामि सगासिइ ;
पेषी करम मरम उल्हासे सं पुहुती सिवपुर-वर-वासे. १४२

नेमीश्वर जिनवर जइवंता देस नगरि आगरि विहरंता;
देसण-वाणि सरस सोहावइ, पुण्यबीज पुहुवीतलि वावइ. १४३
थिर थयिअ उद्धारह सारह, गणहर मुणिवर सहस अढारह,
सहस च्यालि अति अनुपम अज्जा सोहइ सा गुणगण करि सज्जा. १४४
एक लक्ख सहसा नव सट्ठी सावय समकित धारह सुठी,
तिन्नि लक्ख छत्तीस सहस वली, प्रतिबोधी आवी पुहवीतलि. १४५
पुहुवीतलि सामी, पूरचां कामी, वरस तिन्नि सइं कूंयरपणइ;
सइं सत्त वरिस जिणि केवलपद पाली प्रगट प्रमोद घणइ. १४६
छउमत्थ सुदिन्नह चउप्पन्नह, वरस सहस इग आय भयं;
जिन शुचि मसवाडइ, इसिअ पषवाडइ, अट्ठमि दिहाडइ परम पयं. १४७
नवनवकवित्वकुसुमैर्नवनवपरिमलसमूर्छितदिगंते,
इति महितो महिमनिधिः श्रीनेमिर्दुरिततरुनेमिः ॥ १४८
श्रीमत्सोमगुणव्योम सोमसौभाग्यसुन्दरः
प्रज्ञावज्ञातमत्सूरिः सूरिश्री सोमसुन्दरः ॥ १४९
श्री सोमसुंदर लब्धिसायर सोमदेवमुनीश्वराः
श्रीसोमजय गणधरगिरूआ सुमतिसाधु गुणेश्वराः ॥ १५०

---

१४२. AC केरे वासे. A लि. AC सामि सगासे. C उल्लासे; पुहती.
१४३. B जिणवर. BC जयवंता.
१४४. A अढारह सारह; B उदारह सारह; C अग्यारह सारह. A सहिस च्यारि. BC सहस च्याल. B अनोपम.
१४५. A लष, B लख. B सहस. A सावइ, B श्रावय. A तिन्नि लख, B तिन्न लक्ख. BC वलि. B आविय. C वोधी आवी पुहवीतलि.
१४६. B तिन्न सइ, C तिन्न संय. B कुवरपणइ, C कुंअरपणइ. AC जिण. B केवल पाली, C केवलपद पुण पाली.
१४७. B चउपन्नह, C चुपन्नह. A सहस गआंय भयं. B सुचि. A असीय. A आठमि द्याहडइ.
१४८. A कुसुमे नवनव B कुसमैर्नवनव...... B मिहितो महिमनिधि श्री नेमिदुरिततरुनेमि.
१४९. A व्योमसौभाग्यसुन्दरुः । B मां आ कडी नथी.
१५०. A लद्धिसायर, C लाद्धिसायर. A मुनीश्वरा; श्री सोमजइ; गुरूआ; राणेश्वरा. B मां आ कडी नथी.

श्री इन्द्रनंदिसूरिंद राजप्रियसूरि सदाफला,
तपगच्छमंडण सवे सहिगुरु जयु महीयलि अविचला ॥ १५१
गुणराजि-मंडित पवर पंडित समयरत्न मुनीश्वरो,
तसु पाय पामी सीस नामी स्तविउ तूं नेमीश्वरो. १५२
मझ दान आपे, पाप कापे, चिंति चोषइ राषजे,
तुझ पाय-सेवा नितु करेवा देव दरसण दाषिजे. १५३
तिथिमान आणी तिणि प्रमाणी, संवत जाणी सुहकरो,
रसवेद वामिइं वरस नामिइं माह मास मनोहरो. १५४
शुभ योग योगिइं तिथि संयोगिं वार वारू दिणयरो;
नव छंदबंधइं किय प्रबंधइं स्तविउ नेमिजिणेसरो. १५५
नव निधि पामी आस सीधी, कल्पवल्ली करि चडी,
वर वृधि जागी, भीडि भागी, आपदा अलगी पडी. १५६
संताप त्राठा, रोग नाठा, हिवइ हइडइ तुठउ,
जव जगत्रि जिणवर सदा सुहकर नेमि नयणे दिठ्ठउ. १५७
जां सात सायर ससि दिवायर मेरुगिरि गयणंगणं,
नव कुंड ससुधा, अनइ वसुधा असुर सुर भुवणंगणं, १५८
जां रहइ अविचल वर कुलाचल ध्रूय निश्चल जां लगइ,
सिरि नेमि जिणवर- चरिअ चोपूं विस्तरउ जगि तां लगइ. १५९

---

१५१. A श्रीइंद्रनरेंद्र. C प्रिअ; जयु तां अविचला.
१५२. B गुणराज. A समइरत्न. C मुनीस्वरो. B तस पाया पामीं. B तव्यूं, C तविउ तुं B नेमीस्वरो.
१५३. B मुझ. C 'पाप कापे' ए शब्दो नथी. B चीत. A राषेजो, B राषये. B सेव. A देवि. BC दरिसण.
१५४. B आणे तेण प्रमाणे, C तिणि प्रमान आणी. A सुहुकरो, B सहकरो. B वामइ. A नामिं, B नामइ. C मासि.
१५५. A सुभ. B योगइ, C योगि. B दसमि भोगइ, C दसमि भोगिइं. A छंदबंधिइं. B प्रबंध तवीयउ नेमिजिनेस्वरो. C किअ. A प्रबंधि. C तविउ.
१५६. A नवि नधि. B पामी आज स्वामी कल्पवल्ली. C पामी आज सामी कल्पवल्ली. A भागी दसमि भोगिइं आपदा. C अलगी टली. B मां बीजी लीटी नथी.
१५७. B हेव हइडइ तुट्ठए. C देव- हिअडइ तुट्ठउ. B जव यात्र जिनवर. C जिनवर. A सुहुकर.
१५८. B मां आ कडी नथी.
१५९. B ध्रूअ. C जां रहइ अविचल ध्रूअ निश्चल वर कुलाचल जां लगइ. B चरीय. C चोपुं; विस्तरु.

अथ कलश

समुद्रविजयकुलकमलि विमल जिणि सोह चडावी,
केवललच्छी वच्छि सत्तसइ वरिस लडावी, १६०
अट्ठ कम्मनि रजणी घणी भव-मावठि भंजी,
अविचल पद अवतरिउ नेमिजिण थयउ अगंजी. १६१
अषय सौख्य आपइ उचित, जस तुल्लइ देव न कोइ अवर,
लावण्यसमय मुनिवर भणइ, जय जगत्र-जीव कल्याणकर. १६२
इति श्रीनेमिनाथ छंद संपूर्णः ।।

B कलस

१६०. B कुलिकमल; जिंग; केवललीछी वछि. A वरिस चडावो. C मां बीजी लीटी नथी.

१६१. C अष्ट कर्मनि; भाविठि भांजी. A अविचलि पदि· B अवतरः. A नेमि अंगि जय. B नेम जिण.

१६२. A अखइ. B सौष्य. B तोलइ. C जसु तुलइ. B मुणिवर. A जगत्रि. B कल्याणकरः B संपूर्णम् ।।

A इति नेमिनाथप्रबंधे रंगरत्नाकराभिधे द्वीतीयो प्रबंधः ।। खेला रंगवर्धनलक्षितं ।। शुभं भवतु ।। छ ।। श्री ।। छ ।।

C इति श्री नेमिनाथप्रबंधे रंगरत्नाकराभिधे द्वितीयोधिकारः संपूर्णः ।।

*

शब्दकोश

शब्द पछीना अंक अनुक्रमे अधिकार अने कडीना अंक सूचवे छे. संक्षेपसूचि नीचे मुजब छे.

संक्षेप	अर्थ
अ.	अव्यय
अ. क्रि.	अकर्मक क्रियापद
अप.	अपभ्रंश
अर्वा. गुज.	अर्वाचीन गुजराती
आ.	आज्ञार्थ
उभ. अ.	उभयान्वयी अव्यय
ए. व.	एकवचन
क्रि. वि.	क्रियाविशेषण
छ. वि.	छठ्ठी विभक्ति
त्री. पु.	त्रीजो पुरुष
त्री. वि.	त्रीजी विभक्ति
दे.	देश्य
नपुं.	नपुंसकलिंग
नाम. अ.	नामयोगी अव्यय
प. पु.	पहेलो पुरुष
पुं.	पुंल्लिग
प्रा.	प्राकृत
प्रे.	प्रेरक
ब. व.	बहुवचन
बी. पु.	बीजो पुरुष
भवि.	भविष्यकाळ
भू. कृ.	भूतकृदंत
मध्य. गुज.	मध्यकालीन गुजराती
वर्त.	वर्तमानकाळ
वर्त. कृ.	वर्तमानकृदंत
वि.	विशेषण
स. क्रि.	सकर्मक क्रियापद
सर्व.	सर्वनाम
सं.	संस्कृत
सं. भू. कृ.	संबंधक भूतकृदंत
सा. वि.	सातमी विभक्ति
स्त्री.	स्त्रीलिंग
हे. कृ.	हेत्वर्थक कृदंत

अ

अषय (२–१६२) वि अक्षय

अषूटी (२–९६) स्त्री. अकोटी, काननुं एक आभूषण

अगंजी (२–१६२) वि. गांज्यो न जाय तेवो.

अछइ (१–१५, १–६०) अ. क्रि. वर्त. त्री. पु. ए. व. छे. पालि अच्छति > प्रा. अप. अच्छइ परथी. डॉ. टर्नर सं. आक्षेति परथी सूचवे छे.

अज्जा (२–१४४) स्त्री. आर्या, सन्नारीओ, साध्वीओ.

अट्ठ (२–१०८) वि. आठ. सं. अष्ट

अट्ठमि (२–१४७) स्त्री. आठम. सं. अष्ट

अडवडए (१–३९) अ. क्रि. वर्त. त्री. पु. ए. व. अडवडे, लडथडियां खाय, आखडी पडे.

अडसीला (१–८४) वि. आडा शीलवाळा.

अढारह (२–१४४) वि. अढार

अणषि (२–९९) स्त्री. अणगमो. सं. अन्+अक्षि

अणत्थिइं (१–७०) पुं. अनर्थथी. सं. अनर्थ

अणप्रीछिइं (२-१०५) वि. अणप्रीछी, प्रिछया–ओळख्या वगर

अणावइ (१–७४) वर्त. त्री. पु. ए. व. प्रे, अणावे, मंगावे

अणूरी (१–६८) स्त्री. दासी, पत्नी. सं. अनुचरी
अनिवार (२–६६) क्रि. वि. निवार्या विना, सतत
अनिवारा (१–१७) क्रि. वि. निवार्या विना, सतत
अनुचर (२–३५) पुं. नोकरो
अप्पीय (२–११५) भू. कृ. आपी.
अवीर (२–६९) पुं. अबील
अभराष (२–१३७) पुं. अभरखो, असंतोष
अम्ह (१–५४, १–५९, १–७७) सर्व. अमारा, अमारी
अरणइ (१–४२, २–१०२) स्त्री. शोक, उद्वेग. सं. अरति परथी.
अरति (२–७०) स्त्री. शोक. सं. आर्ति
अलगी (२–९४, २–१०४) वि अळगी, जुदी, दूर. सं. अलग्न
अलवइं (१–१२) क्रि. वि. सहजताथी, सहज रीते. अलव + स्त्री. वि. ए. व. नो प्रत्यय इं
असावु (२–५४) पुं. असवाव, शोभा
असारइ (१–३९) क्रि. वि. सार—अर्थ विना, निरर्थक, नकामो
असिपत्र (२–१२७) नपुं. जैन धर्मनी मान्यता अनुसार नर्कमां आवेलुं, तरवार जेवां पांदडांवाळुं, एक वृक्ष के एनुं पांदडुं. पापीओने शिक्षा करवा एनो उपयोग थाय छे.
अहनिसि (१–२२, २–१३३) क्रि. वि. रात-दिवस. सं. अहर्निश परथी
अंअः (२–९७, २–९८, २–९९) अ. ऊंहुं, ना. हुंअ = हा)
अंतेउर (१–४९, १–५२, १–५४) नपुं. राणीवास, राणीओ. सं. अंतःपुर > प्रा. अंतेउर
अंतेव्रारा (२–२७) नपुं. अंतःपुर मां)

आ

आउध (१–३२) नपुं. शस्त्रो. सं. आयुध
आउधशालां (१-३०) स्त्री. आयुध—शस्त्र-शाळामां. आं सा. वि. ए. व. नो प्रत्यय
आपडइए (१–३३) अ. क्रि. वर्त. त्री. पु. ए. व. आखडे छे, मांहोमांहे अथडाय छे, लथडियां खाय छे.
आपडी (२–९२) स्त्री. बाधा
आगइ (१–६०, २–४, २–८, २–८२) क्रि. वि. अगाउ, पहेलां. सं. अग्र > प्रा. अग्ग > मध्य. गुज. आग + सा. वि. ए. व. नो प्रत्यय इ
आगरि (२–१४३) नपुं. गृहोमां. सं. आगारं
आगलि (१–७६) नाम. अ. आगळ. सं. अग्र > प्रा. अग्ग + इल्ल
आडइ (१–७६) वि. आडे (मार्गे)
आडउं (१–१५) वि. आडुं
आण (२–१३५, २–१३६) स्त्री. आज्ञा
आणइ (१ ४२, २–९२) अ. क्रि. वर्त. त्री. पु. ए. व आणे, लावे
आणी (१–५) सं. भू. कृ. लावीने. सं. आ–नीय>प्रा. आणीअ > अप. आणिअ परथी
आणंदइ (१–५) पुं. त्री. वि. ए. व. आनंदथी
आपुलइ (२–१०) सर्व. पोताना. सं. आत्मीय> प्रा. अप्पुल्ल>आपुल + सा. वि. ए. व. नो प्रत्यय इ
आय (२–१२३, २–१२४, २–१४७) नपुं. आयुष्य. सं. आयु
आरति (२–२६) स्त्री. शोक के दुःखनी लागणी. सं. आर्तिनो अर्वाचीन तद्भव
आलि (१–५६) स्त्री. मिथ्या वातचीत, बकवाद
आवडली (१–२७) स्त्री. गोळ भ्रमण. सं. आवर्त

आहणंति (२–७३) वर्त. त्री. पु. ए. व. मारे छे.

आंगणइए (२–८५) नपुं. आंगणामां.

इ

इक (१–१३, १–४८) वि. एक

इग (२–१४७) वि. एक

इणि (१–२६) वि. आ, ए. सं. एतेन > प्रा. एएण परथी

इणि (१–५४) वि. एणी. सं. एतेन परथी

इणइ (२–७६) वि. आ

इम (१–८, १–५३, २–३३, २–९२) क्रि. वि. एम, आम, आ प्रमाणे. सं. एवम् > अप. एम–एवँ परथो

इमेवइ (२–७६) क्रि. वि. आ ज रीते. सं. एवमेव

इसिउ (१–४८, २–५४) वि. आवो

इसिउं (१–४१) वि. आवुं. सं. ईदृशक > प्रा. ईरिसिअ, इसिअ

इं (२–२९) वि. ए, आ

इंद (२–११३) पुं. इन्द्र

इंदा (१–२२) पुं. इन्द्र

इंधण (१–६३) नपुं. वाळवांना लाकडां. सं. इन्धन

उ

उ (२–८६) सर्व. ओ, ए

उअरि (१–२०) नपुं. उदरे. सं. उदर

उछइ (२–८२) वि. ओछे, थोडांथी. प्रा. ओच्छअ

उछंगि (२–१४) पुं. खोळामां. सं. उत्संग > प्रा. उच्छंग > उछंग + सा. वि. ए. व.नो प्रत्यय इ

उद्भुत (२–७०) वि. अद्भुत

उधन (२–९१) नपुं. ओधान, गर्भधारण

उपइ (२–३६) वर्त. त्री. पु. ए. व. ओपे छे, शोमे छे

उपी (१–२८) अ. क्रि. वर्त. त्री. पु. ए. व. ओपे छे, शोमे छे.

उवीठउं (२–१०६) वि. अणगमतुं. सं. उद् + विष्ट, हिन्दी उबीठना

उरडइए (२–८६) पुं. ओरडामां

उरवसी (२–१३) स्त्री. उर्वशी, ए नामनी अप्सरा

उली (२–३८) स्त्री. ओळमां, हारमां.

ऊ

ऊगटि (२–९७) पुं. सुगन्धी पदार्थोनो लेप

ऊजाई (१–५३, २–८६, २–१३१) सं. भू. कृ. दोडीने. सं. उत् + या परथी

ऊजाणीं (१–७२) सं. भू. कृ. कुदीकूदीने. सं. उत् + या

ऊतारइ (२–८७, २–८८) वर्त. त्री. पु. ए.व. उतारे छे, अळगां करे छे.

ऊतारइं (२–८७) पुं. (जानना) उतारे

ऊत्रेवडि (१·३४) स्त्री. उतरेड, एक पर एक मूकेलां वासण के माटलांनी हार. प्रा. उत्तिरिविडि

ऊपइ (२–५३, २–५३) जुओ **उपइ**

ऊपन्नउं (१–६२) भू. कृ. उत्पन्न थयुं. सं. उत्पन्न

ऊपरि (१–१६) नाम. अ. उपर. सं. उपरि > अप. उप्पिरि

ऊवीठउं (१–८१) जुओ **उवीठउं**

ऊभारा (१–१८) पुं. ऊभरा (लागणीना). सं. उद्भारः

ऊमाहि (१–८८), **ऊमाही** (१–५६) पुं. होंशथी, उत्साहथी. सं. उष्मायित > प्रा. उम्हाइअ

ए

एतइ (२–३९) वि. एटलाथी

एतलइ (२–६३) वि. एटला, एटले

ओ

ओटइ (२–८५) पुं. ओटला पर

ओपइ (२–१३५) जुओ **उपइ**

क

कइ (१–४९, १–६०, २–१३, २–२४) उभ. अ. के. सं. किम्

कचोला (२–३५) पुं. कचोळां, प्यालां

कडली (१–२७) स्त्री. हाथना कांडानु एक आभूषण. सं. कटक + अप. इल्ल प्रत्यय

कडि (१–२९) स्त्री. केडमां. सं कटि

कमघा (१–६२) पुं. स्त्रीओनुं छाती ढांकनारुं वस्त्र, कांचळी के कापडुं

कमाइ (२–३१) वर्त. त्री. पु. ए. व. प्रे. (तैयार) कराय. सं. कर्म परथी

कमाई (२–१०९) सं. भू. कृ. करीने. सं. कर्म परथी

कम्मनि (२–१६१) नपुं. कर्मनी

करणइ (१–४२) अ. क्रि. बी. पु. आ. रडे छे

करणइ (२–७२) वर्त. त्री. पु. ए. व. आक्रंद करे छे

करणी (२–४८) स्त्री. करेण

करि (१–४) पुं. हाथमां. कर + सा. वि. ए. व. नो प्रत्यय इ

करि (२–२०) पुं. हाथ वडे

करि (१–२७) अ. क्रि. वर्त. त्री. पु. ए. व. करे

करि (२–४८) स्त्री. हाथीनी सूंड

करिवा (१–७) हे. कृ. करवा. सं. कृ

करेवि (२–९७) सं. भू. कृ. करीने

कर्मी (१–३२) वि. (मोटां) कर्म करनारो

करंवा (२–४४) पुं. दहींमिश्रित भात, घेंश. सं. करंभक > अप. करंवउ

कलकलइ (२–१२५) वर्त. त्री. पु. ए. व. कळकळे, कळतर के दुखावो अनुभवे

कलश (१–८७, २–१५९) पुं. समाप्तिनी कडीओ

कलिआ (१–३६) १. वि डूबेला. सं. कलति (कबजो ले छे) २. वि. कळी— जाणी जनारा. सं. कलिता > प्रा. कलिआ

कलिउ (२–७९) भू. कृ. जाण्यो, ओळख्यो

कवियण (१–८) पुं. कविजन

कवियणजण (१–२) पुं. कविजनोनो समूह. सं. कविगण–जन

कसिण (२–२२) वि. काळी. सं. कृष्ण

कहि (१–४४) अ. क्रि. आ. बी. पु. ए. व. कहे. सं. कथ्

कहिसिउं (१–९) भवि. (वर्त.ना अर्थमां) प. पु. ब. व. कहीशुं

कहीइ (१–११) कह धातुनुं कर्मणिरूप. कहीए. सं. कथ्यते > प्रा. कहिज्जइ > अप. कहीयइ द्वारा

कहीतां (२–८१) वर्त. कर्मणि कृ. कहेतां

कंति (१–४, २–१२०) स्त्री. कान्ति, प्रकाश

कंती (१–३) स्त्री. कान्तिथी. कंति + त्री. वि. ए. व. नो प्रत्यय इ

कंदल (१–६७) नपुं. आक्रन्द, रुदन

कंदोरउ (१–२९) पुं. एक आभूषण. सं. कनक + दोरः > प्रा. कणय + दोर

काठां (२–१७) वि. मजबूत

काथ (२–४०) पुं. काथो

कान्ह (२–१०९) पुं. कृष्ण

कान्हा (१–४४) पुं. कृष्ण

काला (१–४४) वि. अणसमजु; काळा रंगना

कालु (२–४९) वि. कालो, काळो

कां (१–४२) क्रि. वि. केम. सं. कस्मात् परथी

कांबु (२–५४) स्त्री. कांब, छडी. सं. कम्बिका

कि (१–२४) उभ. अ. के, अथवा. सं किम् > अप. किं द्वारा विकास

किअ (१–२०) नाम. अ. करी, थी. सं. कृत

किमइ (१–८३) क्रि. वि. केमे, केमे करीने

किरि (२–५६) अ. जाणे, खरेखर. सं. किल

किवारइं (२–१२२) क्रि. वि. केटलीये वार. सं. किं वारम्

किसिइं (१–४२) सर्व. शी (प्रश्नवाचक), शाथी. सं. कीदृशिका > अप. कइसिअ > मध्य. गुज. कइसो, किसि + इं

किसीउं (१–५९) वि. केवुं ये पण. सं. कीदृशकम् > प्रा. केरिसअं > अप. केरिसउं

किसी (२–३२) वि. कोना जेवी, केवी सं. कीदृशकम्

किंनर (१–३५) पुं. एक जातिविशेष—देव-कल्प योनि

किंपि (१–६५) वि. कंई पण. सं. किम् अपि

कीजइ (२–११९) कर्मणिरूप. कीजे, करीए

कु (१–६१, १–७८) सर्व. कोई, कोईक. सं. कोऽपि > अप. कोवि, कोइ

कुतगि (१–३०) नपुं. आश्चर्यथी. सं. कौतुक

कुतिग (१–५३, २–५२) नपुं. आश्चर्यकारक हावभाव, आश्चर्य

कुलाचल (२–१५९) पुं. ए नामनो पौराणिक पर्वत

कुहाडि (१–७०) स्त्री. कुहाडी. 'भागी कुहाडि' (रूढिप्रयोग) = लाकडां चीरीने कुहाडी भांगी गई, अतिशय दुःख वर्षाव्यां

कुंकण, कर्णाट, लाट, वइराट (२–६३) पुं. देशनां नाम

कूषडीप (२–९१) स्त्री. कूखमां, उदरे. सं. कुक्षि

कूड (२–१०९) नपुं. कपट. सं. कूट

कूडकमाइ (१–५३) वि. कपट करनारो. सं. कूटमांथी कूड अने सं. कर्म परथी कमाइ

कूर (२–१००) पुं. रांधेला चोखा. सं. कूर

कूरना (२–४४) पुं. भातना, रांधेला चोखाना

कूंअर (१–२६) पुं. कुंवर. सं. कुमार > प्रा. कुमरो > अप. कुमरु, कुवँरु

कूंयरपणइ (२–१४६) नपुं. कुंवारापणे, कुमारावस्थामां

केडि (१–८३) स्त्री. केडो, पकडेलो मार्ग, जिद, हठ

केतकि (२–४८) स्त्री. केतकी, केवडो

केता (२–१३४) वि. केटला

केवललच्छी (२–१६०) स्त्री. केवलज्ञान रूपी लक्ष्मी.

केवि (१–१७) वि. केटलाक. सं. केऽपि > प्रा. केवि > मध्य. गुज. केइ पण

केवि (१–३९) सर्व. केटलीक

कोटी (२–९५) वि. करोडनी संख्या. 'लागी' पाठ लईए तो 'धन'नो 'धन्य' अने 'कोटी'नो 'डोकमां' अर्थ थाय

कोडि (१–३०) पुं. कोडथी, आनन्दपूर्वक

कोडि (२–३५, २–१३६) वि. करोडनी संख्या. सं. कोटि

कृत (२–७१) वि. करेलुं

कृष्णागर (१–५१) नपुं. एक जातनुं, काळा रंगनुं सुगन्धी लाकडुं

ष—ख

षडकीइं (२–९०) स्त्री. सा. वि. खडकीमां, दरवाजे

षडहडप (१–३३) अ. क्रि. वर्त. त्री. पु. ए. व. खडखडाट करे. ध्वन्यात्मक धातुरूप

षडहडी (२–३७) वि. खखडती

षडी (२–९०) वि. ऊभी रहेली

षडीए (२–९०) स्त्री. त्री. वि. खडी (धोळी माटी) वडे

षडोपलीइं (१–५१) स्त्री. क्रीडा माटेनी नानी वावमां. प्रा. खुड्डाखुड्डिया

खंति (१–२४) स्त्री. खंत, होंश. सं. क्षान्ति > प्रा. अप. खंति

षंधि (२–१२८) स्त्री. खांध, खभो. सं. स्कंध

षाजां (२–४०) नपुं. एक पकवान

षाटइं (२–८५) स्त्री. खाट के खाटला उपर

षाणि (२–२६) स्त्री. खाण

षिणि (१–६२, २–८५, २–८६, २–८७) स्त्री. क्षणमां
खिरइ (२–७४) वर्त. त्री. पु. ए. व. खरे छे
खीलउ (१–३७) पुं. खीलो. सं. कीलकः
षींटली (२–५२) स्त्री. कपाळ पर पहेरवानुं एक आभूषण
षुरमां (२–३७) स्त्री. रोटला
षूंप (२–५०) पुं. माथा उपरनो पुष्पनो एक शणगार. दे. खुंपा
षोडि (२–८२) स्त्री. खामी, ऊणप
षोलइ (२–८७) पुं. सा. वि. खोळामां

ग

गज (१–३३) १. पुं. हाथो २. नपुं. बे फूट अंतर
गडगडप (१–३३) अ. क्रि. वर्त. त्री. पु. ए. व. गडगडे. ध्वन्यात्मक धातुरूप
गढ (१–१६) पुं. किल्ला, ऊंची दीवाल
गणइप (२–८५) वर्त. त्री. पु. ए. व. गणे छे
गणहर (२–१४४) पुं. गणधर
गमाया (१–२) भू. कृ. प्रे. गुमाव्या. अरवी गूम
गमे (२–१३६) स्त्री. दिशाए, बाजुए, उपाये
गय (१–१८) पुं. हाथी. सं. गज
गयणंगण (१–३३) नपुं. गगननुं आंगणुं
गयणंगणं (२–१५८) नपुं. गगनना आंगणामां
गयणंगणि (२–११४) नपुं. गगनरूपी आंग-णामां
गयणि (१–३१, २–१६, २–७८) नपुं. आकाशमां. सं. गगन
गयदूषण (१–२६) वि. जेमनां दूषण गयेलां छे तेवा, दोष विनाना
गलि (२–७२) नपुं. गळामां
गली (२–१३१) सं. भू. कृ. ओगळी, ढीला थई.
गलीउ (१–५४) वि. गळ्यो
गहगहतउ (१–३०) वर्त. कृ. आनन्दथी भरेलो
गहगहितउ (१–५०) वि. आनन्द पामतो
गहिवरिउ (१–४१) भू. कृ. गभरायो
गहिवरी (२–१०५) सं. भू. कृ. गभराईने
गंगलि (२–१३९) पुं. आनन्द
गाइ (१–३७) स्त्री. गाय
गाइ (२–९३) वर्त. त्री. पु ए. व. गाय छे
गाला (२–७२) पुं. गाळा, बन्धन
गिउ (१–३०, १–५३, २–८०) भू. कृ. गयो. सं. गतः
गिरूउ (२–४९) वि. गरवो, गौरवशाळी
गुणगण (२–१४४) पुं. गुणोनो समूह
गुल (१–५४) पुं. गोळ (खावानो)
गुलइं (२–३९) पुं. गोळथी
गुली (२–३९) वि. गळी
गुषि (२–६६) पुं. गोखमां. सं. गवाक्ष > प्रा. अप. गउक्ख
गेहि (१–३२) नपुं. गेहे, घरे. सं. गेहं
गोकल (१–३७) नपुं. गायनुं कुळ, वाछरडां. सं. गोकुल
गोफणु (२–९६) स्त्री. गोफणो, अंबोडे लट-काववानुं स्त्रीओनुं घरेणुं. सं. गुंफन > प्रा. गुंफण

घ

घण (२–६४, २–६९, २–१२३) वि. घणा
घणाला (२–७४) वि. घणा, पुष्कळ
घाट (१–६१, २–६९) पुं. घाटडी, भातीगळ साळु
घाट (२–६३) पुं. रस्ता, सीमाडा
घाठी (१–७२) भू. कृ. नुकसान पामी. सं. घृष्ट
घाणइ (२–१२६) पुं. घाणामां
घातइ (२–१२७) वर्त. त्री. पु. ए. व. घाले छे, नाखे छे.
घाती (२–१२६) सं. भू. कृ. घालीने
घासइ (१–७५) वर्त. त्री. पु. ए. व. घसाय छे. सं. घृष्

घुग्घर (२-६९) स्त्री. घूघरी. सं. घुर्घुरी > प्रा. घुग्घरी

घूमइ (१-१०) अ. क्रि. वर्त. त्री. पु. ए. व. घूमे, भमे

घोल (२-४५) नपुं. दहींनुं घोळवुं

च

चउखंडी (१-५०) वि. चोखंडी, चार खंडवाळी. सं. चतुर्खण्ड

चउपन्नह (२-१४७) वि. चोपन. नेमिनाथनी केवलज्ञान पाम्या पहेलांनी अवस्थानुं वर्णन आ कडीमां छे.

चउमासइ (२-३०) नपुं. चोमासामां. सं. चातुर्मास > प्रा. चाउम्मास, चउमास

चउ-मुहि (२-१२१) वि. चार मुखवाळो. सं. चतुर्मुख

चउरी (२-३३) स्त्री. चोरी. सं. चत्वरिका परथी. प्रा. दे. चउरिया, चउरी

चउ-विहि (२-१२१) वि. चार विधिवाळो -प्रकारनो. सं. चतुर्विध

चउसठि (२-११३) वि. चोसठ

चउसाल (१-५०, २-३०) १. वि. विशाळ २. चार परसाळ वच्चेनो भाग; सा. वि. नो प्रत्यय अध्याहार. सं. चतुःशाला > प्रा. चउस्साल

चडचड (२-३८) क्रि. वि. चडसथी, वाद करती, झडपथी

चरवोटउ (१-१५) पुं. एक प्राकृत छंद. प्रा. चरपट

चरिअ (२-१५९) नपुं. चरित्र

चली (१-३१) सं. भू. कृ. चलित थईने

चहुटइ (१-६३) नपुं. चौटे, बजारमां. सं. चतुर् + वर्त्म > प्रा. चउवट्ट

चंगा (२-३३) वि. सुन्दर. सं. चंग

चंद (२-११३) पुं. चंद्र

चंदसूर (१-३४) पुं. चन्द्र अने सूर्य

चंद्राउली (१-५६) स्त्री. १. चन्दणी, चन्दरवो, २. चन्द्रनी हारमाळा (जेवी राणीओ) सं. चन्द्र + आवलि

चाउरि (२-३४) स्त्री. चादर, जाजम

चाकुला (२-३५) पुं. चाकळा

चाचरि (२-३३) पुं. चोकमां. सं. चत्वर > प्रा. चच्चर > मध्य. गुज. चाचर + सा. वि. ए. व. नो प्रत्यय इ

चाट (१-२४) पुं. खुशामत करनार. सं. चाटु

चाला (२-७२) १. पुं. चाळा २. स्त्री. चाल, गति

चाहइ (१-११) अ. क्रि. वर्त. त्री. पु. ए. व. इच्छे

चाहइ (१-८३) वर्त. त्री. पु. ए. व. जुए छे

चाही (२-१०) भू. कृ. जोई

चिहुं (१-१५, १ ५० वि. चार. सं. चतुर् परथी प्रा. चउ मांथी चु द्वारा चुहु, चिहु

चिंतइ (१-४९) अ. क्रि. वर्त. त्री. पु. ए. व. विचारे छे

चिंति (२-१५३) नपुं. चित्त

चिंतिउं (२-२५) वि. चिंतेलुं, विचारेलुं

चीर (१-६१, २-८८) नपुं. उत्तम के रेशमी वस्त्र

चूडउ (२-६९), पुं. चूडो, चूडलो

चूर (२-८९), **चूरउ** (२-१३२) पुं. चूरो, भूको

चूरी (१-५१) स्त्री. भूकी सं. चूर

चूरीयइ (२-४०) वर्त. त्री. पु. ए. व. कर्मणिरूप. चूरो-भूको करीए, चूरो कराय.

चेडि (१-७२) स्त्री. दासीओ. सं. चेटी (मूळ अर्थ 'छोकरो') > प्रा. चेडी

चेत (२-८३) नपुं. भान. सं. चेतन

चोपालणि (२-४५) नपुं. चोख्खा करनार साधनमां

चोपी (१-९, १-५०) वि. चोख्खी. सं. चोक्ष

च्यारइ (२-८२) वि. चार. सं. चत्वारि

च्यारि (२-६५) जुओ च्यारइ

च्यालि (२-१४४) वि. चालीस

छ

छइल (१-१७) वि. छेल, रसिकजनो. सं. छवि (शोभा) उपरथी प्रा. छविल्ल परथी अर्थ विकसीने

छउमत्थ (२-१४७) वि. छद्मस्थ, केवलज्ञान प्राप्त कर्या पहेलांनी अवस्था

छंदइं (१-५) पुं. छंद वडे

छाजइ (१-७३) वर्त. त्री. पु. ए. व. शोभे छे, छाजे छे. प्रा. छज्ज्

छांडइ (१-६७, १-७६) वर्त. त्री. पु. ए. व. छोडी दे, तजे. सं. छर्दयति > प्रा. छड्डेइ, छड्डइ, छंडइ

छेहु (२-१०८) पुं. छेह, दगो

छोडि (२-३५) वर्त. त्री. पु. ए. व. छोडे छे, तजे छे

ज

जइ (१-५) उभ. अ. जो. सं. यदि

जइ-लच्छी (१-१८) स्त्री. विजयरूपी लक्ष्मी प्राप्त करावनार. सं. जय + लक्ष्मी

जई (२-२०) सं. भू. कृ. जईने

जउ (१-११, १-७६, २-१०४) उभ. अ. जो. सं. यतः > प्रा. जओ > अप. जउ > मध्य. गु. जु, जो पण.

जगत्र (२-१३७, २-१६२) नपुं. जगत. सं. जगत् (र् नो प्रक्षेप)

जड (२-८९) स्त्री. सांवा

जण (२-८६) नपुं. जन, लोको

जव (१-१४) उभ. अ. जो. सं. यतः

जवरोटी (२-९४, २-९५) स्त्री. जवनी रोटली

जस (२-१३४) पुं. यश, कीर्ति

जस (२-१६२) सर्व. जेनी. सं. यस्य > प्रा. जस्स > अप. जस्सु, जसु

जसु (१-६, २-११९) सर्व. जुओ जस

जंगा (१-२६, २-३३) पुं. जंग, महोत्सव

जंगि (२-५६) पुं. मोटो उत्सव, जंग

जं जं (१-६०) वि. जे जे. सं. यद्

जंप (२-४९) पुं. शांति

जंपइ (१-५४, १-७७, २-४, २-८४, २-१२७, २-१३३) अ. क्रि. वर्त. त्री. पु. ए. व. कहे छे. सं. जल्प्

जाइ (१-७३, २-६५) वर्त. त्री. पु. ए. व. जाय छे. सं. याति

जाइ (२-४८) स्त्री. जाई, जाईनां फूल. सं. जाति

जागवइ (२-५६) वर्त. त्री. पु. ए. व. प्रे. जगाडाय, उत्पन्न कराय

जाचा (१-६२) १. वि. जाच्या, मागेला. सं. याच्. २. जातवाळा-ऊंची जातना. सं. जात्य > प्रा. जच्चा

जाज्यो (२-७१) आ. बी. पु. ब. व. जजो

जाट (२-६२) पुं. चोरलुटारु

जातु (२-१२२) वर्त. कृ. जन्मतो

जान (२-६०) स्त्री. वरराजाने परणाववा जती सवारी

जाम (१-४७, २-७०, २-११८) उभ. अ. ज्यां, ज्यारे. सं. यावत् > प्रा. अप. जाम

जासक (२-३३, २-५७) वि. मनगमतो, सुन्दर

जासूल (१-३९) नपुं. जासूदनां फूल

जां (२-६३) उभ अ. ज्यां

जु (१-९, १-६६) उभ. अ. जुओ जउ

जुठला (२-७) वि. जूठा

जूठउ (२-८०) वि. जूठो

जिणि (१-१०, १-३१, २-१४६) सर्व. जेणे, जेनाथी. सं. येन > प्रा. अप जेण उपरथी जिण + त्री. वि. ए. व. नो प्रत्यय इ

जित्त (२-२०) वि. जितायेला

जिन (२-८०) पुं. जिनेन्द्र नेमिनाथ

जिम (१–४७, १–७५, २–८३, २–९४) क्रि. वि. जेम. अप. जेवँ

जिमइ (२–३६) वर्त. त्री. पु. ए. व. जमे छे

जिमी (२–४६) सं. भू. कृ. जमीने

जिसिइ (२–४६) सर्व. जेवा

जिसिउ (२–५३) वि. जेवो

जिसी (२–१३, २–३२, २–५४) वि. ना जेवी, जेने योग्य. सं. यादृशकम्

जिस्या (२–१५) वि. जेवा

जीणइं (२–११) सर्व. जेणे. सं. येन > प्रा. जेण

जीरे (२–४४) नपुं. जीराथी

जीवडउ (२–१२२) पुं. जीव

जीवीनूं (२–८१) नपुं. 'जीवित'नुं

जीह (२–१५, २–३९) स्त्री. जीभ. सं. जिह्वा

जेडि (१–८३) स्त्री. विलंब

जेणइ (२–३३) वि. जुओ **जिणी**

जो (१–१४) उभ. अ. जुओ **जउ**

जोइ (२–७१) आ. बी. पु. ए. व. जो

जोइसिइं (१–१२) अ क्रि. भवि. त्री. पु. ब. व, जोशे, निहाळशे

जोउ (१–४७, १–७८, २–१८, २–२९) आ. बी. पु. ए. व. जुओ. सं. द्योतयत > प्रा. जोअउ > अप. जोउ > मध्य. गुज. जु पण

जोडावाडइ (२–११) वि. सरखेसरखी, जोडी

जोडी (१–३७) नाम. अ. जोडे, साथे

झ

झषइ (२–९९) आ. बी. पु. ए. व. निरर्थक के नाखी देवानुं बोले छे

झल्लइ (२–१०१) वर्त. त्री. पु. ए. व. झीले, सहन करी शके

झल्लरी (१–२३) स्त्री. झालर, झांझ. सं. झल्लरी

झालइ (२–९२) स्त्री. (विरहनी) ज्वाळाथी

झालि (२–६८) स्त्री. काननुं एक घरेणुं

झीलइ (१–५२) अ. क्रि. वर्त. त्री. पु. ए. व. नहाय छे

झीलइ (१–५४) आ. बी पु. ए. व. झीलो, स्नान करो

झीलण (१–५०) नपुं. स्नान, नहावण. प्रा. झिल्ल

झूझार (१–४०) पुं. योद्धाओ. सं. युद्धकार

ट

टलवलीया (१–३६) भू. कृ. टळवळ्या. ध्वन्यात्मक रूप

टलीउ (१–४८) भू. कृ. टळ्यो

टीलउं (१–२७) नपुं. कपाळ परनुं आभूषण के सुशोभन

टुंकइ (२–५४) स्त्री. (पर्वतनी) टूंक उपर

टोलइ (२–८७) नपुं. टोळामां, समूहमां

ठ

ठाइ (२–२१) पुं. स्थळे. **ठाय, ठाम, ठाह** पण

ठाणि (१–३१) नपुं. स्थळे, ठेकाणे. सं. स्थान

ठामेली (१–५४) वि. ठरेली, घडायेली, पाकी. सं. स्थामवान्

ढ

ढलिया (१–३६) भू. कृ. ढळी पडया, नीचे पडी गया. प्रा. दे. ढल्ल (नीचे पडवुं)

ढीलउ (१–३७) वि. ढीलो. सं. शिथिलकः परथी. प्रा. ढिल्ल

त

तइं (१–१, १–७, १–६८, १–७०, २–२, २–१०८) सर्व. तें, ताराथी. सं. त्वया > प्रा. तइ > अप. तइं

तप (२–५९, २–६१) पुं. सूर्य

तपइ (२–५९, २–६१) वर्त. त्री. पु. ए. व. तपे, झळके छे, प्रकाशे छे. सं. तप्

तप तपतां (२–८८) वर्त. कृ. प्रकाशतां

तरिवा (१–७) हे. कृ. तरवा. सं. तॄ

तसु (१–१९, २–१२८, २–१५२) सर्व. तेनी, तेनुं, तेमना. सं. तस्य > प्रा. तस्स > अप. तस्सु, तसु

तंबोल (१–६५, २–२९) नपुं. खावानुं नागर-वेलनुं पान. सं. तांबूल

ताकइ (१–६९) वर्त. त्री. पु. ए. व. ताके छे. सं. तर्कयति

ताजिउ (१–७१) भू. कृ. तज्यो. सं. त्यज्

ताडीइ (२–३३) वर्त. त्री. पु. ए. व. चमके छे. सं. तडित् (वीजळी); प्रा. तडक्क, तडक्कार (चमकारो)

ताम (१–४७, २–११८) उभ. अ. त्यारे, त्यां. सं. तावत् > प्रा. अप. ताम

ताम (२–७०) क्रि. वि. त्यारे. सं. तावत्

तास (२–५) सर्व. तेना. जुओ **तसु**

तासु (१–२०, २–१३६) सर्व. तेना, तेनो. जुओ 'तसु'

तिणि (१–३३, २–११, २–५६, २–६२, २–११२) वि. ते, तेणे, तेनाथी. सं. तेन > प्रा. तेण परथी

तिर्णि (१–१७) वि. ते. जुओ 'तिणि'

तिन्नि (२–१४५, २–१४६) वि. त्रण

तिम (१–७५) क्रि. वि. तेम. प्रा. तेवँ

तिबिल (१–२३) नपुं. तबलां. अरबी तब्लह के तब्ल

तिसिउ (२–५३) वि. तेवो

ति–सी (२–११) सर्व. तेना जेवी. सं. तादृश > प्रा. तारिस

तीखालि (२–४१) वि. तीक्ष्ण. 'शालि'नुं विशेषण

तीसि (२–५१) सर्व. त्री. वि. एनाथी

तु (१–५, १–९, १–२१, १–२४, १–७६) उभ. अ. तो. सं. ततः > प्रा. तओ > अप. तउ

तुम्ह (१–१, १–२, १–५, १–६, १–८२, २–४, २–९९) सर्व. तारा, तारी, तारां, तमारा. अप. तुज्झु

तुट्ठउ (२–१५७) आ. वी. पु. ए. व. संतोष थाओ. सं. तुष्ट

तुणि (१–६३) क्रि. वि. झडपथी. सं. तूर्णं

तुम्हचु (१–५५) सर्व. तमारो. चु छ. वि. ए. व. नो अनुग, सं. त्य उपरथी

तुल्लइ (१–६) स्त्री. तुलनामां, सरखामणीमां. सं. तौल्यके > प्रा. अप. तुल्लइ > मध्य. गुज. तोलइ पण

तुरंगम (१–३७) पुं. घोडा, अश्व

तुरंगमे (२–५५) पुं. घोडा उपर

तुहइ (२–८२, २–१३२) उभ. अ. तो पण, सं. ततः > प्रा. तओ > अप. तउ + हइ (हि) निश्चयवाचक

तुह्मि (१–५९) सर्व. तमे

तूठी (१–६, १–९) भू. कृ. प्रसन्न थई. सं. तुष्ट > प्रा. तुट्ठ परथी

तूर (१–२३) स्त्री. भूंगळ जेवुं मुखवाद्य. सं. तूर्य

तेणि (१–२४) वि. ते, तेणे. सं. तेन > प्रा. तेण

तेणि (१–५९) सर्व. तेणे, तेनाथी

तोरी (२–२७) सर्व. तारी

त्राट (२–६१) पुं. दोरडां, दोरा

त्राटक (१–३८, २–७७, २–७८) नपुं. दोरडां, बंधन

त्राठा (२–१६, २–१५७) भू. कृ. हेरान थया, त्रास पाम्या. सं. त्रस्त

त्राठां (२–१७) जुओ 'त्राठा'

त्राडी (१–३१) सं. भू. कृ. त्राड–मोटो अवाज करीने

त्रुटवि (१–३६) सं. भू. कृ. तूटी जईने. सं. त्रुटित्वा

त्रेडउं (१–१५) वि. तेडुं, वांकुं. सं. तिर्यक्

त्रेवडि (१–३४) स्त्री. त्रेवडे, ताकातथी, आधारे

त्रोटी (२–९४, २–९५) स्त्री. काननुं एक आभूषण

त्रोडी (१–३७) सं. भू. कृ. तोडीने. सं. त्रुट्

थ

थाइ (२–११६) वर्त. त्री. पु. ए. व. थाय छे

थाट (२–६२) पुं. समूह, समुदाय, ठठ

थानकि (२–८६) नपुं. स्थानके, स्थाने

थाहरि (१–४०) १. नपुं. स्थाने २. क्रि. वि. थरथर

थिउ (१–४८) अनुग. थी. सं. स्थित >प्रा. थिअ

थिकी (१–१, १–४४) अनुग. थी, थकी. प्रा. थक्कअ मांथी थिकउ परथी

द

दक्षण (२–२९) वि. जमणा. सं. दक्षिण

दष (२–१३२) नपुं. दुःख

दमणु (२–४९) पुं. डमरो (सुगन्धी छोड) सं. दमनक > प्रा. दमणअ

दलणि (१–१८) नपुं. दळवामां, नाश करवामां. दलण + सा वि. ए. व.नो प्रत्यय इ. सं. दलनं

दसार (२–६) पुं. समुद्रविजय वगेरे दश यादव राजाओ

दह (१–३३, २–२१) वि. दश

दंडह (२–१२३) पुं. शिक्षा

दंति (२–४९) वर्त. कृ. प्रकाशे छे

दाषिजे (२–१५३) आ. बी, पु. ए. व. दाखजे, दाखवजे

दाषियउ (२–१०८) भू. कृ. प्रे. बताव्यो, देखाड्यो

दारा (१–४३) स्त्री. पत्नी, स्त्री. सं. दाराः

दिणयरो (२–१५५) पुं. सूर्य. सं. दिनकर

दिवाजा (२–७५) पुं. प्रकाश, शोभा

दिवायर (१–३५) पुं. सूर्य. सं. दिवाकर

दिहाडइ (२–१४७) पुं. दहाडे, दिवसे

दीष्या (२–११२) भू. कृ. देखाया

दीसता (२–१९) वर्त. कृ. देखाता

दीहडे (२–१९) पुं. दिवसोमां. सं. दिवसक >प्रा. दिअहड परथी दीहड + सा. वि. ए. व. नो प्रत्यय ए

दुवलि षंडिय (२–४१) वि. दूबळी थईए खांडेला, जेथी भांगी नहीं जतां आखा रहेला

दुरमति (१–१) स्त्री. दुर्बुद्धि. सं. दुर्मति

दुसमन (१–१०) पुं. फारसी. दुश्मन, शत्रु

दुहेली (१–६०) वि. दोह्यली, दुःखकारक. सं. दुःख > प्रा. दूह + इल्ल

दुंदुहि (२–११४) पुं. दुन्दुभि, मोटुं नगारुं

दूमइ (१–१०) अ. क्रि. वर्त. त्री. पु. ए. व. दुमे, दुःख दे

देउर (१–५२, १–८३) पुं. दियर. सं. देवर

देउल (१–७६) नपुं. देवळ, देरासर. सं. देवकुल

देसण (२–१४३) स्त्री. देसना, आदेश, उपदेश

देसाउर (१–७१) पुं. अन्य देश. सं. देश + अवर

दोहिला (२–८) क्रि. वि. मुसीबतथी

द्रूय (२–१५९) नपुं. द्रुम, वृक्ष, (अहीं) कल्पवृक्ष

ध

धडहडइय (१–३३) अ. क्रि. वर्त. त्री. पु. ए. व. धडधडे छे. ध्वन्यात्मक धातुरूप

धणचर (२–९५) पुं. पशु, धणमां फरनार

धणु (१–३१) स्त्री. धनुष. सं. धनुष्

धन (१–२०, १–८१, २–२३) वि. धन्य

धरणीधर (१–३६) पुं. पृथ्वीने धारण करनारा, पर्वतो

धरिउ (२–९१) भू. कृ. धर्यो, धारण कर्यो

धवलहरे (१–२५) नपुं. महेलमां, प्रासादमां. सं. धवलगृह

धारह (२–१४५) वि. धारण करनार

धुणिल्ला (२–७५) भू. कृ. धुणाव्युं. इल्ल भू.नो प्रत्यय

धुरि (२–३७, २–७५, २–११६) क्रि. वि. आगळ, अग्र भागे. सं. धुर्

धुंसट (२–३६) क्रि. वि. उतावळथी, उत्साहथी,

न

न (कांइ न) (१-८२) अ. भारवाचक—न. सं. नु

नट्ठा (२-२०) भू. कृ. नासी गया

नफेरी (१-२२) स्त्री. शरणाईना आकारनुं मुखवाद्य

नयरिइं (१-१७) नपुं. नगरमां. सं. नगर > प्रा. अप. नयर

नयरी (१-८६) स्त्री. नगरी

नरवर-विंदा (१-२२) पुं. श्रेष्ठ राजाओ. वर + नरविंदा. सं. नर + इन्द्र > नरइंदो > नरविंदो

नरिंद (१-२१) पुं. राजा. सं. नरेन्द्र

नरेसर (२-११३) पुं. नरेश्वर

नवमइ (२-१०८) वि. नवमे, नवमामां

नवि (१-७८) क्रि. वि. नहि

नवेरउं (१-७१) वि. नवुं, नवुं आवेलुं. सं. नवतर

नवेरु (२-५३) वि. नवलो. सं. नवतर

नवेरु (२-१३५) १. वि. नवो. २. न + वेरु = अवेरनो, अहिंसानो

नवेरी (१-२३, २-१३०) वि. नवी नवी, नवी नवी रीते

नंदेवी (१-१) १. सामान्य कृ. दूर करवी २. सं. भू. कृ. निंदा करीने

नागेंद (२-११३) पुं. नागेन्द्र

नाठा (२-१६, २-२१) भू. कृ. नासी गया

नाठी (१-७२) वि. नष्ट थयेली. सं. नष्ट

नाठी (१-३७) भू. कृ. नासी गई. सं. नष्ट > प्रा. नट्ठ > अप. नट्ठ

नाणी (२-७७) भ. कृ. न आणी, न लावी. सं. न + आनीता

नातरूं (२-२४, २-२५) नपुं. ज्ञातिसम्बन्ध, विवाह के लग्नसम्बन्ध. सं. ज्ञाति

नानावासी (१-५२) वि. विविध प्रकारनी सुगन्धथी भरेली

नान्हडली (१-२७) वि. नानी. सं. श्लक्ष्ण.

नापु (१-८४) आ. बी. पु. ए. व. न आपो

नामिइं (२-१५४) नपुं. नामे, नामनुं,

नाह (१-७२) पुं. पति. सं. नाथ

निअडउ (२-९३) वि. नजीकनो. सं. निकट

निटोल (१-६७) १. वि. पुष्कळ सं. निस्तुल्य. २. क्रि वि. नक्की

निठुर (२-११०) वि. निष्ठुर

नितु (१-८, १-१७) क्रि. वि. हंमेशां. सं. नित्य

निरती (२-७९) वि. स्पष्ट, निश्चित, बोल्या विना. सं. निरुक्ति > प्रा. णिरुत्ति

निरवहितां (१-६०) वर्त. कृ. निभावता. सं. निर्वह् परथी

निरवाहइ (१-८२) वर्त. त्री. पु. ए. व. निर्वहे—निभावे छे

निरोल (२-२९) पुं. निराळापणुं, जुदाई

निवासी (१-१४) भू. कृ. प्रे. वसावी

निवासी (१-५१) भू. कृ. राखी

नी (२-२९) अ. (भारवाचक) ने. सं. नु

नीका (१-३८) १. स्त्री. धार, नीक. सं. नीका. २. वि. चोख्खा, श्रेष्ठ

नीठउं (१-६४) भू. कृ. नीठ्युं, खूटी गयुं

नीठर (१-५८, १-६७) वि. निष्ठुर

नीम (१-६३, २-७९) क्रि. वि. नक्की. सं. नियम परथी

नीम (१-१३५) पुं. नियम, व्रतनियम

नीपावइ (२-१३०) वर्त. त्री. पु. ए. व. प्रे. उत्पन्न करे छे. सं. निष्पादयति

नीसत (१-७६) वि. निःसत्त्व, ताकात विनानो

नीसाण (१-२३) नपुं. सवारी के वरघोडा वखते मोखरे वगाडवामां आवतां नगारां के ढोल. सं. निःस्वान > प्रा. निस्साण > अप. निस्साणु (अवाज) परथी

नेउर (२-६९) नपुं. झांझर. सं. नुपूर

नेहा (१–७८) पुं. स्नेह
नेहाला (२–१४०) वि. स्नेहयुक्त

प

पइआलि (२–२०) नपुं. पाताळमां. सं. पाताल > प्रा. पायाल, पयाल
पइठां (२–१७) भू. कृ. पेठां, प्रवेश्यां. सं. प्रविष्ट > प्रा. अप. पइट्ठ
पइठी (२–८६, २–११८) भू. कृ. पेठी, प्रवेशी
पउढी (२–३६) वि. मोटी. सं. प्रौढ
पखइ (२–९९) नाम. अ. विना
पखवाडइ (२–१४७) नपुं. पखवाडियामां. सं. पक्ष > प्रा. पक्ख
पखालउ (२–१३३) आ. बी. पु. ए. व. पखाळो, धुओ. सं. प्रक्षाल्
पखाला (२–७४) वि. पांखवाळा
पखि (१–५०) स्त्री. बाजुए. सं. पक्ष > प्रा. पक्ख > मध्य. गुज. पख + सा. वि. ए. व. नो प्रत्यय इ
पगर (२–५३) पुं. समूह, ढगलो. सं. प्रकरः
पचारइ (२–१२९) वर्त. त्री. पु. ए. व. महेणुं मारे छे. अप. पच्चार
पडिवज्यउं (२–२) भू. कृ. सिद्ध कर्युं. सं. प्रति–पद्
पणि (१–६०) उभ. अ. परन्तु. सं. पुनः > अप. पुणु.मांथी
पतलइ (२–७) वर्त. त्री. पु. ए. व. पीगळे, ढीला पडे. सं. पत् परथी
पत्थरू (२–९८) प. पु. ए. व. पाथरुं. सं. प्रस्तर
पदे (१–१५) नपुं. (श्लोकना) पद वडे
पय (१–२२) पुं. पग. सं. पद
पयं (२–१४७) नपुं. पद
परइ (२–५१) नाम. अ. पर, उपर
परषइं (१–११) अ. क्रि. वर्त. त्री. पु. ए. व. पारखे. सं. परि + ईक्ष्
परघल (२–३८) वि. पुष्कळ
परणेवइ (२–७६) नपुं. परणवामां. सं. परि + नय
परतउ (२–१३१) पुं. परचो, परिचय
परतखि (२–१०१) अ. प्रत्यक्ष, आंख सामे
परता (२–१३९) नाम. अ. सामे. सं. प्रति
परमाधामी (२–१२९, २–१३०) स्त्री. जैन धर्म अनुसार, पापीओने शिक्षा करनार देवयोनि. सं. परम + अधार्मिक
परषद (२–११९) स्त्री. परिषद
परि (१–३, १–४, १–७, १–२६, १–४६, १–५४, २–४०, २–६७, २–१२०) नाम. अ. पेरे, प्रकारे. सं. प्रकार
परिइं (२–४१) नाम. अ. प्रकारे, जेम
परिघल (१–१७) जुओ **परघल**
परिसइ (२–४२) वर्त. त्री. पु. ए. व. पीरसे
परिसरि (१–८६) पुं. सा. वि. राजमार्ग उपर
परे (१–२२) पुं. प्रकारे
पलिया (१–३६) भू. कृ. पळ्या, गया
पवर (१–४, २–१५२) वि. उत्तम, श्रेष्ठ. सं. प्रवर
पहुता (१–१३) भू. कृ. पहोंच्या. अप. पहुत्त
पहुतु (१–५०) जुओ **पहुता**
पहुनुहता (१–१३९) वि. पनोता, पुण्यशाळी
पंचानन (१–७५) पुं. सिंह
पाइं (२–१२५) वर्त. त्री. पु. ए. व. पाय छे
पाखइ (१–६३, २–८२) नाम. अ. विना. सं. पक्षे > प्रा. पक्खे > अप. पक्खि > मध्य. गुज. पाखि पण
पाषलि (२–८४) नाम. अ. पासे, आसपास. सं. पार्श्वे
पाटलउ (१–६९) पुं. पाटलो. सं. पट्ट + अप. उल्ल
पातक (२–७८) नपुं. पाप
पाधरी (१–४२) क्रि. वि. सीधी, सीधी रीते, प्रा. दे. पद्धर (वि. सीधुं)

पाय (१–८८) पुं. पाद, पग
पायक (१–१८) पुं. पगे चालनारा सैनिको, पायदळ
पारषि (१–११) पुं. पारखनार. सं. परीक्षक
पास (२–७७, २–७८) पुं. पाश, बन्धन, दोरडां
पासइ (२–७२) नाम. अ. पासे. सं. पार्श्वे
पाहि (२–१३५), **पाहिं** (२–५७, २–१२१, २–१४०) नाम. अ. नी पासे, ना करतां. सं. पार्श्वे
पांति (२–३६) स्त्री. पंगत, जमनारांनी हार. सं. पंक्ति
पिक्खेवि (२–११७) विध्यर्थकृदंत सं. भू. कृ. ना अर्थमां. पेखीने, जोईने. सं. प्रेक्ष्य परथी
पिंडह (२–१२३) पुं. शरीर, देह. 'ह' पादपूरक छे.
पीहर (१–७२) नपुं. पियर. सं. पितृगृहम् > प्रा. पिअहरं > अप. पिअहरु
पुण (१–१०, १–१३, १–८८) उभ. अ. पण, परन्तु. सं. पुनः > अप. पुणु
पुण (२–१२१) नपुं. पुण्य
पुरसइ (१–८०) भवि. त्री. पु. ए. व. पूरशे, पूर्ण करशे
पुलकी (२–३९) भू. कृ. आनन्द पामी
पुहुचाडी (१–६८) सं. भू. कृ. पहोंचाडी, पूरी करी
पुहतउ-(१–३०) भू. कृ. पहोंच्यो
पुहवि (१–७, १–१९, १–८९, २–१०९, २–१३९, २–१४६) स्त्री. पृथ्वी
पुहवी (२–१४५) जुओ 'पुहवि'
पुहविइं (१–३६) स्त्री. पृथ्वीमां, पृथ्वी उपर
पुहुवि (१–८९, २–४) जुओ 'पुहवि'
पुहुवी (२–८३, २–१२८, २–१४६) स्त्री. जुओ 'पुहवि'
पूरविलउं (२–२) वि. पहेलांनु. प्रा. पुव्विल्ल
पूरी (२–११९) वि. संपूर्ण
पूठइ (१–४१) स्त्री. पूंठे, पाछळ. सं. पृष्ठ
पे (२–१०३) नाम. अ. उपर
पेषी (१–५०) सं. भू. कृ. जोईने. सं. प्रेक्ष्य > प्रा. पेक्खिअ
पेषीउ (२–८१) भू. कृ. पेख्यो, जोयो. सं. प्र + ईक्ष्
पोपिसु (१–९) भवि. प. पु. ए. व. सत्कार करीश. सं. प्रोक्ष्
पोषी (१–५०) वि. छांटेली. सं. प्रोक्षित
पोलि (१–१६) स्त्री. (पोळना) दरवाजा. सं. प्रतोली > प्रा. पओली > अप. पोलि. मारवाडीमां 'प्रोल' दरवाजाना अर्थमां जाणीतो छे. अर्थविकासथी 'दरवाजावाळा निवासो'ने 'पोळ' कहे छे.
पोसइ (२–१२३) वर्त. त्री. पु. ए. व. पोषे छे
प्रतिपन्नउं (२–२) भू. कृ. प्रतिज्ञा करेलुं. सं. प्रतिपन्न
प्रतेकिइ (२–४६) वि. प्रत्येके, दरेकने
प्रमाणि (२–२५, २–२६) नपुं. प्रमाणे, सत्ये
प्रस्ताव (१–१५) पुं. प्रयत्न, प्रारम्भ
प्रहि (२–७६) पुं. पोह, प्रभात
प्राणइं (१–४८, १–४९) क्रि. वि. पराणे, मांड मांड, आग्रह करीने. सं. प्राणैः
प्राणइ (१–७४) जुओ 'प्राणइं'
प्राणि (२–२४) जुओ 'प्राणइं'
प्रीछवइ (२–८३) आ. बी. पु. ए. व. समजाव
प्रीणी (१–७९) वि. प्रसन्न. सं. प्रीण
प्रीसइ (२–३८) वर्त. त्री. पु. ए. व. पीरसे छे.

फ

फलहुलि (२–३७, २–३८) स्त्री. फळफूलो
फाडइ (१–६६) अ. क्रि. वर्त. त्री. पु. ए. व. फाडे, फाटे
फार (२–३७, २–१३९) वि. अतिशय, घणी. सं. स्फार
फाला (२–७४) स्त्री. फाळ

फाली (२–९४) स्त्री. साडी

फांदि (२–२८) स्त्री. फांद, ऊपसेलुं पेट

फूटडा (२–२८, २–५३) वि. सुन्दर

फोफल (१–२५, २–४६) नपुं. सोपारी. सं. पूगफल > प्रा. पोप्फल

व

वइठउं (२–३४) वि. बेठेलुं

वलि छडि (२–४१) वि. बळवान स्त्रीए छडेला, जेथी ऊजळा थयेला

वहिकइ (१–५२) अ. क्रि. वर्त. त्री. पु. ए. व. बहेके छे, महेके छे

वहिरषा (२–५७) पुं. हाथनां कांडां उपर पहेरवानां आभूषण

वहुत्तरि (२–३३) वि. बोंतेर, ७२

वहुमान (१–५) पुं. अति माननी लागणी, गौरव

वहुलपणि (१–५२) क्रि. वि. अधिकताथी, घणी. वहु + ल + पण + इ

वहुलां (१–३९) वि. घणां. वहु + स्वार्थिक प्रत्यय लां

वापडउ (१–७४) वि. वापडो, गरीवडो. (देश्य शब्द)

वापीअडउ (२–९३) पुं. बपैयो पक्षी

वालइ (१–८१) वर्त. त्री. पु. ए. व. वाळे छे

वाला (२–७३) वि. बाळेला, दुःखी

वांकउ (१–६६) वि. १. वांको २. पराक्रमी के सुन्दर. सं. वक्र परथी

वांगड (१–६७) वि. तोछडा, निर्लज्ज

वि (२–८२) वि. बे. सं. द्वि

विमणु (२–४९) वि. बमणो. सं. द्विगुण >प्रा. बिउण, विवण, बिमण

विहुं (२–१३) वि. बीजुं. सं. द्वि+खलु

वुधिइं (१–९) स्त्री. बुद्धि वडे. सं. बुद्धि

वुल्लइ (१–६) अ. क्रि. वर्त त्री. पु. ए. व. बोले छे. सं. ब्रू धातुना शक्य विकासमां प्रा. वोल्ल मळे छे ते परथी

बेहु (१–३४) वि. बंने. सं. द्वि + खलु

वोटी (२–९४, २–९५) भू. कृ. बोटेली, एठी करेली

वोलइ (१–८) जुओ 'वुल्लइ'

भ

भइंसि (१–३७) स्त्री. भेंस. सं. महिषी

भगतिइं (१–८) स्त्री. भक्तिथी, भक्तिभावे

भटित (२–६२) वि. उत्साहप्रेरक. सं. भट (उत्साह आपवो, वादविवाद करवो)

भणइ (२–९७) वर्त. त्री. पु. ए. व. कहे छे. सं. भण्

भत्तिइं (१–२२) स्त्री. भक्तिथी. सं. भक्ति

भमहि (२–२२) स्त्री. आंखनी भम्मर. सं. भ्रू > प्रा. भमुह, भमह, भुमह

भमाडी (१–३१) भू. कृ. घुमावी, चारे बाजु फेरवी. सं. भ्रम्

भयं (२–१४७) भू. कृ. वीत्युं. थयुं. सं. भूत, व्रज भयो, भयुं

भलेरा (१–९) वि. भला, कल्याणकर, मंगळ. सं. भद्र > प्रा. भल्ल परथी भल + सं. तर > प्रा. अर > यर > > इर > एर नुं ब. व. एरा

भवियण (१–८) पुं. मोक्षने योग्य जीव. सं. भव्य जन

भंजी (२–१६१) भू. कृ. भांगी. सं. भञ्ज्

भागी (२–९१) भू. कृ. जती रही. सं. भग्न > प्रा. भग्ग परथी अर्थ विकसीने

भाणां (२–३५) नपुं. जमवानां वासण— थाळीवाटका. सं. भाण्ड

भावठि (२–१६१) स्त्री. भावठ, मुसीबत

भाववंदण (२–११६) पुं. वास्तविक वंदन

भुइं (२–१२५) स्त्री. जमीन उपर

भूषडी (२–९१) स्त्री. भूख. सं. बुभुक्षा > प्रा. भुक्खा > अप. भुक्ख > मध्य गुज. भूष + डी स्वार्थिक प्रत्यय

भूंगल (१–२३) स्त्री. भूंगळ, एक प्रकारनुं मुखवाद्य

भेरी (१ २३) स्त्री. भेर, एक प्रकारनुं मुखवाद्य. सं. भेरी

भेळी (१-५४) भू. कृ. भेळी, भेगी करी

भ्रंति (२-२२) स्त्री. भ्रान्तिथी.

म

म (२-७१) क्रि. वि. मा, नहि. सं. मा

मइं (२-४, २-५) सर्व. में. सं. मया > प्रा. मइ > अप. मइ, मइं

मच्छर (२-१४१) पुं. मत्सर

मज्झ (१-४१, २-३, २-१०३, २-१०४) सर्व. मुज, मारा

मज्झारि (१-५२, २-११) नाम. अ. मध्ये, मां, मोझार. सं. मध्यागार > प्रा. मज्झार > मध्य. गु. मझार + सा. वि. ए. व. नो प्रत्यय इ

मझारे (१-३३) जुओ 'मझारि'

मढ (१-१६) पुं. धर्मस्थान, निवास. सं. मठः

मत्थइं (२-१११) नपुं. माथे. सं. मस्तक

मत्थिइं (१-७०) जुओ 'मत्थइं'

मथाला (२-७३) पुं. माथां

मम (२-५८) स्त्री. माम, गर्व

मयगल (२-१३८) पुं. मद झरता हाथी. सं. मदकल

मयगल-जित्त (२-६८) वि. हाथणीने जीती हैती.

मयण (२-१४१) पुं. मदन, काम

मयमत्ता (२-६८) वि. मदथी मत्त

मयंक (२-५४) पुं. चन्द्र सं. मृगाङ्क

मया (२-३) स्त्री. कृपा. सं. माया

मयाल्ला (२-१४०) वि. मायाळा, प्रेमाळ

मरुट्ट (२-४५) पुं. मरडो (मुखनो मोड) सं. मरुत(र)कः > अप. मरडउ

मर्मी (१-३२) वि. मर्मनो जाणनार

मलिआ (१-३६) भू. कृ. मळ्या, एकठा थया. सं. मिलित > प्रा. अप. मिलिअ

मल्हयाडइ (२-१४०) पुं. मलवाडे, महिनामां, सं. मास [illegible]

महमहइ (२-४९) वर्त. त्री. पु. ए. व. मघमघे छे, महेके छे.

महीयली (१-३४) नपुं. पृथ्वी उपर. सं. महीतल

मंडइ (१-२२) अ. क्रि. वर्त. त्री. पु. ए. व. मांडे छे, आरंभे छे, रचे छे. प्रा. दे. मंड

मंडइ (२-३५) अ. क्रि. वर्त. त्री. पु. ए. व. मांडे छे, मूके छे, पाथरे छे

मंडणो (२-३२) स्त्री. शोभा. सं. मण्ड् (शोभाववुं)

मंडाण (१-८७) नपुं. शोभा, रचना, आरंभ

मंडाणि (२-३२) जुओ 'मंडाण'

मंडावइ (२-३२) वर्त. त्री. पु. ए. व. प्रे. करावे छे. प्रा. दे. मंड (शरू करवुं, सामे मूकवुं)

मंडीउ (२-३३) भू. कृ. मांड्यो, आरंभ्यो,

माचंता (२-१३८) वर्त. कृ. आनंद करता

माचंति (२-६२) वर्त. कृ. आनंद करतो

माठा (२-१६) वि. खराब

माया (१-२) स्त्री. भ्रान्ति, संसारनी जंजाळ (पछीथी अर्थ विकसीने 'प्रेम, ममता')

माया (१-२) स्त्री. माता

मालापाडइ (१-४५) पुं. मल्लोना अखाडामां, व्यायामशाळामां. सं. मल्ल + अक्षवाट > अखाड

माल्हइ (१-८१) वर्त. त्री. पु. ए. व. महाले छे, आनंद करे छे. प्रा. दे. मल्ह

माहवि (२-३२, २-३३) पुं. कृष्णे, माधवे. सं. माधव

मांडउं (१-११) अ. क्रि. वर्त. प. पु. ए. व. आरंभुं प्रा. दे. मंड (शरू करवुं)

मांडिउ (२-५०) भू. कृ. मांड्यो, मूक्यो

मांडी (२-३९) स्त्री. परणपोळी जेवी रोटली

मिरी (१-६४) नपुं. मरी तीखां. सं. मरीच > प्रा. मिरिअ

मिल्लिया (१-२५) जुओ 'मलिआ'

मीठंउ (१–६४) नपुं. मीठुं
मुझ (१–५, १–८) सर्व. मारी, मने. अप. मुज्झु
मुझ (२–१००) सर्व. मारुं, मने
मुरकी (२–३९) स्त्री. एक जातनुं पकवान
मुहिआं (२–१२२) क्रि. वि. निरर्थक. सं. मुधा परथी
मूलह (१–३९) नपुं. मूळना. मूल + छ. वि. ए. व. नो प्रत्यय ह (सं. स्य > प्रा. स्स > अप. स्सु, सु)
मेलउ (२–२४) आ. बी. पु. ए. व. मेळो, मेळवो, गोठवो. सं. मिल्
मेलि (१–८५) पुं. मेळ. सं. मिल् परथी
मेलिइ (२–२५) क्रि. वि. मेळपूर्वक, मेळ जोईने
मेलिउ (२–१११) भू. कृ. मेल्यो, मूक्यो. प्रा. दे. मेल्ह
मेलिउं (२–२५) भू. कृ. मेल्युं, मूक्युं
मेली (१–४९) सं. भू. कृ. मेलीने, मोकलीने
मेहनइ (२–९३) पुं. मेघने
मेहलइ (१–७१) स. क्रि. वर्त. त्री. पु. ए व. मूके छे, फेलावे छे. प्रा. मेल्ह
मेल्ही (१–२) सं. भू. कृ. मेलीने, मूकीने, तजी दईने. प्रा. मेल्ह
मेल्ही (२–९१) भू. कृ. तजी दीधी
मोडंति (२ ८९) वर्त. कृ. मचकोडती
मोडी (२–१४१) सं. भू. कृ. दूर करीने
मोरा (२–९३) पुं. मोर. सं. मयूर
मृगनाभि (२–६९) स्त्री. कस्तूरी

य

युगतिइं (१–८) स्त्री. युक्तिथी. सं. युक्ति
युगियुगता (१–१६) वि. झगझगता

र

रगइ (२–१२९) वर्त. त्री. पु. ए. व. रगरगे छे, करगरे छे
रजणी (२–१६१) स्त्री. रात्रि. सं. रजनी
रडइए (२–८६) वर्त. त्री. पु. ए. व. रडे छे
रति (२–१८) स्त्री. आनंद
रभस (२–९) पुं. वेग, उत्साह. सं. रभस्
रयण (२–१३५) नपुं. रत्न
रयणमणि (१–२९) पुं. रत्नमणि वडे
रयणायरि (१–१४) पुं. समुद्रे दरिये. सं. रत्नाकर
रलया (१–३६) १. वि. रवडता, भटकता. २. भू. कृ. रवडया, रखडया. प्रा. दे. रुल
रली (१–९०) स्त्री. आनंदथी
रसवेद (२–१५४) पुं. रस अने वेद. रस छ अने वेद चार छे. = ४६
रंगरोल (२–२९) पुं. रंगमां रोळावानी क्रिया
रंभ (१–१९) स्त्री. रंभा, ए नामनी अप्सरा
राउलि (१–३०) नपुं. राजमंदिरे. सं. राजकुल परथी राउल + सा. वि. ए. व. नो प्रत्यय इ
राउली (१–५६) स्त्री. राजकुटुंबनी स्त्रीओ
राषइ (१–५६) वर्त. त्री. पु. ए. व. राखे, सं. रक्ष् परथी
राषडी (२–९२) स्त्री. माथा उपरना भागमां वाळमां भराववानुं आभूषण सं. रक्षा
राषडी (करो) (२–९२) स्त्री. राख, भस्म. सं. रक्षा परथी
राषिउ (२–१०८) भू. कृ. राख्यो, अटकाव्यो
राडि (१–७०) स्त्री. मोटो अवाज, फरियाद
रायपुत्ति (२–५५) स्त्री. राजकुंवरी. सं. राजपुत्री
राही (१–५६) स्त्री. राधिका
रि (२–११) केवळ० अ० पादपूरक 'रे'
रीव (२–७६) स्त्री. चीस, अवाज
रूडां (१–१२) वि. सारां, उच्च. सं. रूपककम् > अप. रूअडउं > मध्य. गुज. रूडउं हुंकातां रूडुंनुं ब. व.
रेसि (१–५०) अनुग. माटे. अप. रेसि, रेसिं
रोल (१–६५) पुं. प्रवाही मिश्रण. प्रा. दे. रुल् परथी

ल

लइ (१-२०) अ. क्रि. वर्त. त्री. पु. ए. व. ले
लक्ख (२-११५, २-१४५) वि. लाखनी संख्या. सं. लक्ष
लप(ख) (२-१३२) जुओ 'लक्ख'
लग्गउ (१-४७) भू. कृ. लाग्यो
लछमछ (१-५३) वि. लथमथ. मथित--थाकेली अने लथित--लथडेली
लडथडए (१-३४) अ. क्रि. वर्त. त्री. पु. ए. व. लथडे. ध्वन्यात्मक धातुरूप
लडावी (२-१६०) भू. कृ. लाड लडाव्यां
लद्धउ (२-५) भू. कृ. लीधो. सं. लब्धकः > लद्धअ > मध्य. गुज. लाधअ पण
लहउं (१-५) अ. क्रि. वर्त. प. पु. ए. व. लहुं, मेळवुं, धरावुं. सं. लभ् परथी
लहकइ (१-३०) पुं. लहेकाथी, सहेलाईथी, आनंदपूर्वक
लही (२-२४) सं. भू. कृ. ओळखीने, समजीने. सं. लभ्
लहीय (१-१४) सं. भू. कृ. लईने, मेळवीने. य पादपूरक
लाई (२-७) भू कृ. लगाडी. सं. ला धातु परथी
लाष (२-१३६) जुओ 'लक्ख'
लाग (१-१४) पुं. मोको, अनुकूळ परिस्थिति. सं. लग्न > प्रा. लग्ग (वळगेलुं)नो अर्थविकास
लागउं (१-१०) भू. कृ. लाग्युं, वाग्युं. सं. लग्न > प्रा. लग्ग परथी
लाछि (१-४७, २-१३४) स्त्री. लक्ष्मी
लांके (२-१९) पुं. कमरना वलांकथी
लांघइ (२-१०४) वर्त. त्री. पु. ए. व. नाखे छे
लांछु (२-५४) नपुं. लांछन
लिव (१-२४) अ. क्रि. वर्त. त्री. पु. ए. व. प्रवृत्ति करे छे. प्रा. दे. लव धातु
लिवंग (२-४७) नपुं. लविंग
लीणा (१-१२) वि. मग्न, डूबेला. सं. लीनकाः
लीलां (२-५४) स्त्री. त्री वि. शोभाथी. सं. लीला
लीह (२-३९) स्त्री. मर्यादा, हद. सं. लेखा (लीही) परथी
लोटइं (२-८५) वर्त त्री. पु. ए. व. लोटे, फरे. सं. लुटयति
ल्यावइ (१-७४) वर्त. त्री. पु. ए. व. लई आवे

व

वइयालि (२-४२) सं. भू. कृ. वघारीने
वच्छिछ (२-१६०) वि. वहाली. सं. वत्सा
वज्जइ (१-२३) अ. क्रि. वर्त. त्री. पु. ए. व. वागे छे. सं. वाद्यते
वड (१-३४, २-३१) वि. मोटो, मोटी, उत्तम
वडपणि (२-१०७) नपुं. वडपणमां, मोटी उंमरे
वडी (२-३१) स्त्री. वडी (खावानी)
वयणि (२-१६) नपुं. वदने, वदनथी
वदीता (२-१५) वि. प्रसिद्ध. सं. वद् + मध्य. गुज. कर्मणि वर्त. कृ. प्रत्यय
वधावानइं (२-११५) पुं. वधावाने, वधामणियाने
वधावु (२-११४) पुं. वधामणी--शुभ समाचार आपनार
वधेसिइं (२-७६) भवि. त्री. पु. ब. व. वध करशे
वयणे (२-१५) जुओ 'वयणि'
वयणलां (२-९९) नपुं. वचनो. सं. वचन परथी वयण + लां स्वार्थिक प्रत्यय
वर (१-१६, १-६१, २-३१, २-३८, २-६४) वि. श्रेष्ठ, सुन्दर. सं. वरम्
वरणइ (१-४२) अ. क्रि. वर्त. त्री. पु. ए. व. वर्णवे छे, कहे छे. सं. वर्ण्
वरवानु (१-५८) नपुं. परणवानो
वरसोलां (२-३८) नपुं. ब. व. खाद्यविशेष
वरि (१-१६, २-५९, २-९२) नाम. अ. उपर. सं. उपरि > प्रा. उवरि

वलवलिआ (१–३६) भू. कृ. वलवलाट करवा लाग्या

वलिउ (२–७९, २–८०) भू. कृ. वळ्यो, पाछो फर्यो

वली (२–३७) भू. कृ. वळी, पाछी फरी

वली (२–८५) उभ. अ. वळी, उपरांत

वलीआं (२–८५) नपुं. १. वलय-बंगडीओ २. कमरबन्ध ३. पेट उपरनी त्रिवली

वहूअर (१–४०) स्त्री. वहु. सं. वधू + वरा

वंदइ (१–५) सं. भू. कृ. वंदीने. प्रा. वंदिअ नो सामान्य नहि एवो विकास

वंदेवी (१ १) सं. भू. कृ. वंदीने

वंनरमाला (१–२५) स्त्री. आसोपालव आदिनां लीलां तोरण. सं. वन्दनमाला > प्रा. वंदणमाला. आ शब्दनां वंदरवाल, वंदुरवाल, वानरवाल जेवां रूपो जूनी गुजरातीमां मळे छे.

वाचाट (२–६२) वि. वाचाळ

वाट (१–२४, २–६१, २–९०) स्त्री. मार्ग. सं. वर्त्मा > प्रा. वट्टा' > अप. वट्ट

वाटइ (२–८५) स्त्री. वाटमां, मार्गमां

वाटलां (२–४३) नपुं. वाटका

वाटली (२–३८) स्त्री. वींटो करीने बनावेली जमवानी वानगी

वाडि (२–७२) पुं. वाडामां

वाढ् (२–१३९) आ वो. पु. ए. व. वाढो, कापो

वाणां (२–३५) नपुं. वानां, चीजवस्तुओ (भोजननी)

वातइ (२–१२७) स्त्री. वात

वाधइ (१–५५) अ. क्रि. त्री. पु. ए. व. वधे. सं. वर्ध्

वानां (१–६४) नपुं. वस्तुओ. सं. वर्णक

वानि (१–२८, २–५८) पुं. वर्णमां, सुंदरतामां. सं. वर्ण

वानु (१–५५) पुं. वान, रंग, सुन्दरता. सं. वर्ण

वानु (१–५८) पुं दलील, प्रयत्न. सं. वर्ण (भाषा) परथी. अत्यारे पण 'आटलां वानां केम करावे छे ?' एवो प्रयोग प्रचलित छे

वामिइं (२–१५४) वि. वामे, डाबी बाजुथी. ए रीते 'रसवेद' एटले ४६ थाय. कृतिनुं रचनावर्ष सूचववानी आ पद्धति संस्कृतमां अने मध्य. गुज. साहित्यमां प्रचलित हती. उपोद्घातमां एनी वधु माहिती आपी छे.

वारू (१–६५) वि. सारो. सं. वरम्

वालणि (१–४७) हे. कृ. वालणे, वाळवा माटे. सं. वल धातुना प्रेरक परथी

वालिभ (२–९०) पुं. वालम, पति. सं. वल्लभ

वालु (२–४९) पुं. सुगंधी वाळो

वासइ (२–९३) वर्त. त्री. पु. ए. व. बोले छे. सं. वाश्र

वासइं (२–१४२) स्त्री. सुगन्धथी. जैन साधु–मुनिओ वंदवा आवनारने मस्तके सुगन्ध अर्पे छे ते

वासी (१–५१) वि. सुवासित, सुगन्धित करेली

वासी (२–६१) भू. कृ. सुवासित करी

वासग (२–२०) पुं. वासुकि नाग

वास्यां (२–४४) वि. सुवासित करेलां

वाहि (२–५७) वर्त. त्री. पु. ए. व. वहे छे, धारण करे छे

वाही (२–१०) सं. भू. कृ. दोडावीने. सं. वह

वांकउं (१–६६) वि. वांकुं. सं. वक्र

विगतिइं (१–८) स्त्री. विगतथी, विगतवार.

विछाहइ (२–३३) वि. छायेली, ढांकेली

विछेदिं (२–४३) क्रि. वि. सत्वर, जलदी

विनाणि (२–२५) नपुं. ज्ञानथी. वचनि विनाणि = समजभर्या वचनथी. सं. विज्ञानम् > प्रा. विण्णाणं > अप. विण्णाणु > मध्य. गु. विन्नाण, विनाण + त्री. वि. ए. व. नो प्रत्यय इ

विन्नाणइं (१-४९) नपुं. समजथी, समजावीने
विरूइ (१-८४) वि. वरवी. सं. विरूप
विविह (१-२२) वि. जुदा जुदा. सं. विविध
विशेषइं (१-११) क्रि. वि. विशेषे करीने
विहिहत्थडा (२-२३) पुं. विधिना हाथ
वूठउ (२-८०) भू. कृ. वरस्यो. सं. वृष्ट > प्रा. वुट्ठ
वेअण (२-१२३) स्त्री. वेदना
वेडि (२-१७) स्त्री. तकरारमां. वेढि पण
वेणइं (२-२०) स्त्री. वेणी वडे. सं. वेणी, वेणि

श

शम्मी (१-३२) सं. भू. कृ. श्रमीने, श्रम पामीने
शशिहर (१-३) पुं. चंद्र. सं. शशधर > प्रा. ससहर
शांणा (१-७६) नपुं. छाणां

स

सइं (२-१४६) वि. सो, १००
सखाइ (२-११०) स्त्री, मदद. सं. सख्य > प्रा. सक्ख परथी
सगासिइ (२-१४२) नाम. अ. पासे. सं. सकाशे
सज्जा (२-१४४) वि. सज्ज
सट्ठी (२-१४५) वि. छ, ६. 'सहसा नव सट्ठी=६९०००'
सत (१-७६) नपुं. सत्त्व
सत्त (२-१४६) वि. सात. सं. सप्त >प्रा. सत्त
सत्तइ (१-३५) वि. साते
सत्तसइं (२-१६०) वि. सात सो
सदयपणइ (२-७५) नपुं. दयाथी. स + दया + पणइ
सदलां (२-४६) वि. दळवाळां
सनकारी (१-५३) भू. कृ. संज्ञा-सानथी बोलावी. सं. संज्ञा > प्रा. सन्ना परथी
सनाढा (२-४४) वि. सनाढ्य, छांटेलां. सं. सन्नद्ध (युक्त)
सम (१-५५) पुं. सोगंद
समकित (२-१४५) नपुं. सम्यक्त्व, विवेकपूर्वक धर्मनी समज अने तेनुं आचरण
समता (२-१२०) स्त्री. सम्यक्त्व, सम्यक (शुभ) प्रवृत्ति
समाया (१-२) भू. कृ. प्रे. समावेश पाम्या. सं. माति > प्रा. अप. माइ परथी
समारइ (२-१२२) वर्त. त्री. पु. ए. व. समारे छे, सुधारे छे
समोपी (१-२८) भू. कृ. समर्पेली
समोसरण (२-११३) स्त्री. तीर्थंकर के एवी महान विभूतिना आगमन प्रसंगे रचवामां आवती सभा के परिषद
समोसरणि (२-११७) जुओ 'समोसरण'
सरइं (२-९३) पुं. स्वरथी
सरसति (१-६, १-८८) स्त्री. सरस्वती
सरसती (२-४) जुओ 'सरसति'
सरसि (२-७६) भवि. ए. व. सरशे, पार पडशे
सरसिउ (१-५२) नाम. अ. सरसो, साथे
सरसिउं (२-१०२) नाम. अ. सरसुं, साथे
सरसी (१-३७) वि. सरखी, जेवी. सं. सदृशक > प्रा. सरिसिअ
सराष (१-६४) वि. सारुं. सं. सुरेख
सरिइं (२-८६) पुं. स्वरे, स्वरथी. सं. स्वर
सरिसु (१-४९) नाम. अ. सरसो, साथे
सरे (१-२१) जुओ 'सरइं'
सल्लइ (२-१०१ वर्त. त्री. पु. ए. व. साले, दुःख दे. सं शल्य
सवि (१-२१, १-२५, १-३५, १-४९, १-४३, १-७३) वि. सर्वे, बधा, बधी. सं. सर्वे > प्रा. सव्वे > अप. सव्वि > मध्य. गुज. सव पण. हिन्दी सब
ससा (२-७३) नपुं. ससलां
ससुधा (२-१५८) नपुं. सुधा-अमृत सहित
सहस (२-१४४, २-१४७) वि. सहस्र, हजार
सहसा (२-१४५) जुओ 'सहस'
सहिगुरु (२-१५१) वि. सद्गुरु
सही (२-७९) क्रि. वि नक्की

सहूअ (१–१०) सर्व. बधा. अ पादपूरक
सं (१–१४२) सर्व. ते
संघात (१–७१) पुं. संगाथ
संधि (२–१२६, २–१२८) पुं. सांधा
सा (१–६) सर्व. ते. सं. सा
साषइ (२–१०४) वर्त. त्री. पु. ए व. सहन करे छे, सांखे छे
साजनउं (२–३४) नपुं. साजणुं, सज्जनोनो समूह–जानमां भाग लेनारो
साढा (२–११४) वि. साडा. सं. स + अर्ध
सादरि (२–१) पुं. आदरथी, सन्मानपूर्वक स + आदर + इ
साधारा (२–८४) वि. आधाररूप. स + आधार
सामलवन (१–२१, २–७७) वि. श्याम वर्णना. सं. श्यामल + वर्ण
सामि (१–२०) पुं. स्वामी
सामिणि (२–२) स्त्री. स्वामिनी
सायर (१–३५) पुं. सागर
सार (२–६, २–७) वि. श्रेष्ठ, सुन्दर
सारद (१–१) स्त्री. सरस्वतीदेवी. सं. शारदा
सारा (१–१९) पुं. सार, साररूप. सं. सार
सारी (२–६५) वि. बधी
सारे (१–१३) वि. उत्तम. सा. वि ए. नो प्रत्यय विशेष्यने बदले विशेषणने लागेलो छे
सालणउं (१–६५) नपुं. अथाणुं
सालणां (२–४२) नपुं, व. व. अथाणां
सालि (२–४१) स्त्री. चोखा. सं. शालि
सावय (२–१४५) पुं. श्रावक
साही (१–५६) सं. भू. पकडी
सांडसीप (२–१२६) स्त्री. साणसी वडे. सं. संदंशिका
सिइं (२–१०६) सर्व. शे, शा कारणथी
सिउ (१–६८) वि, शो, केवो. सं. कीदृशकः > प्रा. केरिसओ > मध्य. गुज. किसिउ, सिउ, स्यू
सिउं (१–१२, १ १९, १–६८) नाम. अ. शुं. साथे. सं. सहितम् > प्रा. सहिअं > अप. सहिउं ना विकासमां
सिउ (१–८२, १–८४, २–९९, २–१०४, २–१०६, २–१२७) सर्व. शुं (प्रश्न-वाचक), शा माटे. सं. कीदृशकम् > प्रा. केरिसअं > मध्य. गुज. किसिउं, सिउं, स्यूं
सिरिवच्छ (१–७९) पुं. श्रीवत्स, बाळकोना कल्याण अर्थे पहेरावबामां आवतो हार
सिली (२–४५) स्त्री. सळी (दांत खोतरवा माटे). सं. शलाका
सिंगारा (१–१६) पुं. शणगार, शोभा. सं. गार
सीकां (१–३८) नपुं. व. व वस्तुओ राखवा माटे अद्धर लटकाववामां आवती छाबडी के टोपलो के एने मळतुं कोई साधन. सं. शिक्य
सीलइ (१–८०) नपुं. शीळमां, शीलनी बाबतमां, चारित्र्यमां
सीहला (२–१९) पुं. सिंह
सु (१–८०) वि. सो, १००
सु (२–४२) सर्व. ते. सं. सः
सुकमाल (२–९८) वि. सुकुमार, कोमळ
सुकमाला (२–१४०) जुओ 'सुकमाल'
सुकुलीणी (१–७९) वि. सारा कुळनी, कुळवान. सं. सुकुलीन
सुचंगा (१–२६) वि. सुंदर. सं. सु + चंग
सुट्ठी (२–१४५) वि. उत्तम, श्रेष्ठ. सं. सुष्ठु
सुणि (१–५) अ. क्रि. आ. बी पु. ए. व. सांभळ
सुणिज्यो (१–८) आ. बी. पु. व. व. सुणजो, सांभळजो
सुणिल्ला (२–७५) भू. कृ. सांभळया. इल्ल भू. नो प्रत्यय
सुधिइं (१–९) स्त्री. शुद्धिथी
सुपन (१–२०) नपुं. स्वप्न.
सुपरिकरे (१–२५) पुं. समूहमां, एकठा थयेलामां. सं. परिकरः
सुर (१–३५) पुं. देवो
सुहकर (२–१५७) वि. सुख आपनार. सं. सुखकर
सुहकरो (२–१५४) जुओ 'सुहकर'
सुहाणी (१–८६) वि. सोहामणी, सुशोभित

सुहेली (१-६०) वि. सोहामणी, सुखकारक. सं. सुख > प्रा. सुह + इल्ल
सुंडल (१-७६) पुं. सुंडलो, टोपलो
सुंहालां (१-२८, १-६१, २-७३) वि. सुंवाळां, कोमळ. सं. सुकुमार
सूइ (२-८७) वर्त. त्री. पु. ए. व. सूए छे
सूइ (२-१२५) स्त्री. सोई (शूळो) सं. शूचि
सूपडी (२-९१) स्त्री. एक जातनुं पकवान
सेरी (१-२३) स्त्री. महोल्लो. प्रा. दे. सेरी
सोइ (१-१०, १-११, २-९२, २-९८, २-१०१) सर्व. ते. सं. सः + अपि = सोऽपि > प्रा. सोवि > अप. सोइ
सोग (२-१३६) पुं. शोक
सोरी (२-२७) नपुं. सोरीपुर(ना)
सोवन (२-४१) वि. सारा वर्णना-रंगना; रूजळा. सं. सु + वर्ण
सोवन (२-४५, २-५८, २-९२, २-९४) वि. सोनानी, सोनेरी. सं. सुवर्ण
सोवन (२-११५) स्त्री. सोनामहोर
सोह (१-२०, २-८८, २-१६०) स्त्री. शोभा
स्वरमंडल (१-२३) स्त्री. एक प्रकारनी वीणा सं. स्वरमंडलिका
स्या (१-११) सर्व. शा (प्रश्नवाचक). जुओ 'सिउ'

ह

हइ (२-१११) वर्त. बी. पु. ए. व. छे. हिंदी है
हउं (१-२) सर्व. हुं. सं. अहकम् > प्रा. अहअं > अप. हउं
हत्थिइं (२-१११) पुं. हाथमां
हरपह (२-२६) पुं. हरखनी, आनंदनी. ह छ. वि. ए. नो प्रत्यय
हरिची (१-३०) पुं. हरिनी. ची छ. वि. ए. व.(स्त्री.)नो प्रत्यय
हरि जिम (१-४७) वांदरानी जेम. 'पछी नेमिनाथे पोतानी वाम भुजा लांबी धरी राखी, एटले कृष्ण वृक्षने वानर वळगे तेम सर्व बळ वडे वळगी पडया, पण नेमिकुमारना भुजस्तंभने ते नमावी शक्या नहि.' (हेमचन्द्राचार्यकृत 'त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित')
हवइं (१-१५) क्रि वि. जुओ 'हिवइ'
हाट (२-६१) स्त्री. दुकान. सं. हट्ट
हियडइं (१-५) नपुं. हैयामां, हृदयमां. सं. हृदयम् > प्रा. हिअअं > अप. हिअउं
हिली (१-७२) स्त्री. (हे) सखी. सं. हला, अप. हेल्लि
हिव (१-१२) जुओ 'हिवइ'
हिवइ (१-२, १-८४, २-१५७) क्रि. वि. हवे, अत्यारे. सं. अथवा > प्रा. अहवा > अप. अहव नी आदि श्रुतिनो लोप थतां अने सा. वि. ए. व. नो प्रत्यय इ लागतां हवइ; व्यत्ययथी हिव + सा. वि. ए. व. नो प्रत्यय इ
हीजाडी (१-३१) सं. भू. कृ. हेत लावी (हेज = हेत)
हीर (२-८८) नपुं. रेशम
हीवइ (१-५८) जुओ 'हिवइ'
हुउ (१-१३) भू. कृ. थयो. सं. भूतकः > प्रा. हूअओ > अप. हूअउ > मध्य. गुज. हुअउ, हउओ, हुओ पण
हुसिइ (१-५९) भवि. ए. व. थशे, थवानी
हुंती (१-७८) भू. कृ. हती
हूउ (२-५५) जुओ 'हुउ'
हुंकी (१-६८) सं. भू. कृ. हाक मारी, गर्जना करी
हेरूं (१-१५) अ. क्रि. प. पु. ए. व. जोउं, फरुं. सं. हेरिक (जासूस)
हेपारव (२-१३८) पुं. [illegible] नाट
हेसमी (२-३९) स्त्री. एक जातनुं पकवान
होइ (२-८२) वर्त. त्री. पु ए. व. होय
होइसिइं (१-१२) अ. क्रि. भवि. त्री. पु. ब. व. हशे. सं. भविष्यति > प्रा. होस्सइ > मध्य. गुज. होसइ, हुसइ पण